वाह! ज़ि़िंदगीँ
सौजन्य-संविभाग

श्री भवरसिंह जी कोठारी की स्मृति में
श्रीमती चम्पादेवी, प्रकाशचंद, कमलकुमार कोठारी
जयपुर
सुखी और सफल जीवन जीने का रास्ता

वाह ! ज़िज़न्दगी

सफलता कोई मंज़िल नहीं, एक यात्रा है
जिसकी पूर्णता के लिए सदा अपनी बुद्धि और बल का
इस्तेमाल करते रहिए।

श्री चन्द्रप्रभ
वाह! ज़िन्दगी
पूज्य श्री चन्द्रप्रभ के अमृत प्रवचन

प्रस्तुति
श्रीमती लता भंडारी 'मीरा'

प्रकाशन-वर्ष: अक्टूबर 2005

प्रकाशक: जितयशा फाउंडेशन
★ बी-7, अनुकम्पा द्वितीय, एम.आई. रोड, जयपुर (राज.)
★ संबोधि धाम, कायलाना रोड़, जोधपुर - 4 (राज.)

प्रेमणा: गणिचर श्री महिमाप्रभ सागर जी
मुद्रक: भारत प्रेस, जोधपुर
मूल्य: 20/-
प्रवेश

जिंदगी हर कोई जीता है, कोई 'आह' के साथ तो कोई 'वाह' के साथ।
'वाह' में ही जिंदगी की जिंदादितिः है, उसी में जीवन का अर्थ छिपा है। 'आह'
भरी बोझिल, हताश जिंदगी का दामन थामने की बजाय, क्यों न 'वाह' की
सफल सार्थक और आत्मविश्वास-भरी जिंदगी का लुप्त उठाएं। चिंतन और
जीवन-दर्शन के हर क्षेत्र में अपनी गहरी पैठ रखने वाले पूज्य श्री चन्द्रप्रभ जी
प्रस्तुत पुस्तक के माध्यम से इसी संदर्भ में हमारा प्रेक्षक और संजीवा मार्गदर्शन
कर रहे हैं। यह पुस्तक सचमुच एक ऐसा नायाब तोहफ़ा है, जिसे आत्मसात कर
आप अनुयाय कह उठेंगे — 'वाह ! जिंदगी।'

तेजस्वी और शालीन व्यक्ति के धनी पूज्य श्री चन्द्रप्रभ जी ने अपनी
सहज-सरल वाणी द्वारा सदैव मानवता का पथ प्रशस्त किया है। वे जहाँ भी
जाते हैं, जनमानस को जब भी संबोधित करते हैं, उस शहर की आवश्यकता उनके
सुवास से अवधारक होती है। उनके शान, सीम्य जीवन की तरह उनका वचन और
प्रवचन भी सहज-सटीक होते हैं। न कहीं जटिलता, न शब्दों का कोई
आड़म्बर। उनके शब्द भी उनके अन्तर-बोध का ही सुपरख है। हर शब्द घट में
घर कर जाने लाता होता है। सोच और जीवन-शैली को बेहतर बनाने की सीख
dेने वाले प्रभावी उद्देश्यों की श्रृंखला में ही प्रस्तुत है पूज्यश्री की यह अद्वैत
अनमोल पुस्तक — वाह जिंदगी।

प्रस्तुत पुस्तक में पूज्य श्री चन्द्रप्रभ ने जीवन को स्वर्ग का स्वरूप देने
वाले आसान तरीक़ों की ओर संकेत किया है। वे कहते हैं कि जीवन के प्रति
सकारात्मक नज़रिया विकसित हो जाए तो 'आह जिंदगी।' की पीढ़ा भी 'वाह !
जिंदगी' के सुख-संगीत में बदल सकती है। हम भी जीवन के प्रति सकारात्मक
नजरिया अपनाकर जीवन का सच्चा स्वाद और आध्यात्मिक आनंद ले सकते हैं।

ढाई आख़ुर के जिस प्रेम की बात कभी कबीर ने कही थी, श्री चन्द्रशेखर जी उसी प्रेम को चार कदम आगे बढ़ाते हुए कहते हैं कि प्रेम को केवल व्यक्ति विशेष तक ही सीमित न करें, उसे विस्तृत रूप दें। प्रेम का प्रारंभ तो मनुष्य से होता है, लेकिन जब उसका विस्तार पशु, पक्षी, पौधा, पौधे, प्रकृति तक होता चला जाता है, तब वह प्रेम इबादत बन जाता है।

श्री चन्द्रशेखर परिवार को बच्चों की पहली पाठशाला मानते हैं और सामाजिक जीवन का पहला मंदिर। वे कहते हैं कि परिवार का महादेव जितना सुंदर होगा, नई कोलंगल उतनी ही सफल और मधुर होंगी। स्वयं के प्रबंधन की अनिवार्यता पर जोर देते हुए पूज्यश्री कहते हैं कि अगर किसी ने अपने जीवन की ऊँचाइयों को छुपा है तो अवश्य ही कोई-न-कोई तरीक़ा अथवा कोई-न-कोई बुनियादी उसूल जरूर अपनाया है। आत्मविश्वास के साथ यदि बेहतर लक्ष्य के लिए बेहतर प्रयास किया जाए तो सफलता के हर सपने को निष्पादन ही साकार किया जा सकता है।

व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से लेकर पारिवारिक जीवन, कैरियर-निर्माण से लेकर कामयाबी हासिल करने तक की हर मंजिल को रोशन करने वाले ये प्यारे उद्देश्य हमारे लिए पूज्यश्री के कुपापूर्ण मार्गदर्शन का परिणाम है। हर प्रवचन अपने आप में प्रकाश की फिरणा है। प्रेणा व मार्गदर्शन के सुत्र खोजने वाली युवापीढ़ी के लिए यह पुस्तक एक श्रेष्ठ उपहार है। अपने उस परिचित से, जो उद्देश्य, मायूस अथवा अत्याधिक जीवन जी रहा है यह पुस्तक पढ़ने की प्रेणा अवश्य दीजिए। विश्वास है इसे पढ़कर उसे सुखी और सफल जीवन जीने का कोई-न-कोई सुकून अवश्य प्राप्त होगा।

► लता भंडारी एवं सोहन शर्मा
वाह! ज़ि़िन्दगी

घर को स्वर्ग कैसे बनाएँ?

“परिवार बच्चों की पहली पाठशाला है और सामाजिक जीवन का पहला मंदिर। परिवार का माहौल जितना सुन्दर होगा, नई कोंपलें उतनी ही सफल और मधुर होंगी।”

हर व्यक्ति का अपना एक घर, एक परिवार, एक समाज होता है। उसके जीवन का एक लक्ष्य होता है, परिश्रम होता है और उस परिश्रम का परिणाम भी होता है। खुशहाल परिवार और घर सभी को अच्छा लगता है। हर घर और परिवार का वातावरण ऐसा हो कि सुबह ईद का महोत्सव, दोपहर में होलि का फाल्गुनी पर्व और ठंडी सागर में दीपावली का सुख-सुकून हो। जिस घर में सुबह से ईद के पर्व की तरह प्रेम, अभिवादन, प्रसन्नता का वातावरण होता है उस घर की सुबह स्वर्ग जैसी हुआ करती है। जिस घर में दोपहर के समय सास-बहू, पिता-पुत्र, भाई-बहिन, देवरानी-जेठानी एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, अपना प्रेम एक दूसरे को समर्पित करते हैं, ऐसा करना घर में होलि को मनाने जैसा है। जहाँ साँझ ढलने पर, घर से बाहर गए लोग, अभिभावकगण हृद्य-खुशी के साथ घर में प्रवेश करते हैं, और एक साथ हिलमिलकर, एक दूसरे को देखकर अपने जीवन में चमक का आभा, आनंद लेते हैं। तो वह साँझ और रात भी दीवाली की तरह सुखदायी हो जाती है।

घर को स्वर्ग कैसे बनाएँ?
घर केवल घटे, चूंकि और दर्शन का निर्माण नहीं होता बल्कि उसमें रहने वालों के आपसी प्रेम, आत्मीयता, मर्यादा और त्याग की भावना से घर का निर्माण होता है। प्रेम, त्याग और मर्यादा का नाम ही घर-परिवार है। स्वाभाविक है कि जिस मकान की चिनाई अच्छे तरीके से हुई है, वह इमारत खूबसूरत हुआ करती है। ऐसे ही जिस परिवार का निर्माण अच्छे महौल और अच्छे संस्कारों के बीच हुआ है, वह परिवार समाज के बीच खूबसूरत मकान की तरह ही है।

परिवार सामाजिक जीवन की रीढ़ की हड्डी है। सामाजिक जीवन का पहला मंदिर परिवार ही है। परिवार का निर्माण व्यक्तियों के समूह से होता है और समाज का निर्माण परिवारों के समूह से होता है। इसलिए तब है कि जैसे व्यक्ति होंगे वैसा परिवार बनेगा, वैसा ही समाज बनेगा। जैसे समाज होंगे वैसा ही देश और विश्व बनेगा। विश्व और देश के बेहतरीन स्वरूप के लिए जरूरी है कि हममें से हर किसी के घर-परिवार का स्वरूप अच्छा हो, बेहतर हो, गरिमापूर्ण हो।

विश्व का पहला विकासवाद व्यक्ति का अपना परिवार ही होता है। स्कूल में पुस्तकीय शिक्षा तो प्राप्‌ हो जाती है, लेकिन सुसंस्कारों की पाठशाला तो उसका अपना घर ही है। सामाजिक चरित्र के निर्माण के लिए, गरिमापूर्ण समाज के निर्माण के लिए, अहिंसक और व्यसनमुक्त समाज के निर्माण के लिए परिवार का अहिंसक, व्यसनमुक्त और गरिमापूर्ण होना आवश्यक है। एक समाज में सात दिन होते हैं और अगर हम रात्रिकाल से शुरू करें तो पहला दिन ही छुट्टी का हो गया और जो छुट्टी के दिन परिवार के सारे लोग घर के कामकाज करते हैं, दोनों समय साथ बैठकर भोजन करते हैं तो वह छुट्टी का दिन संयुक्त परिवार का आनंद लेने के लिए, परिवार-निर्माण के लिए आधार बनता है। सोम से रवि तक सात दिन का समाह होता है। यह तो एक समाह के सात दिन हो गए। मैं एक आठवाँ ‘वार’ भी बताता हूँ और वह वार है ‘परिवार’। जहाँ घर के सारे सदस्य एक ही छट के नीचे मिल-जुल कर रहते हैं वहाँ परिवार होता है।

जहाँ सातों दिन इकड़े होते हैं उसे समाह कहते हैं। इस रहस्य से आप समझ सकते हैं कि आपकी एकता, सदृश्यता और समरसता आपके परिवार

2 वाह! जिन्दगी
का आधार बनती है। सात दिनों को एक कर दो तो वह समाह बनता है और समाहों को एक करो तो महीना और महीनों को संयोजित करो तो वर्ष निर्मित होता है। यही मेल-मिलाप परिवार के साथ भी लंघा होता है। भाई-बहिन, सास-बहू, देवरानी-जेठानी जहाँ मिलते हैं, वह परिवार है। परिवारों की एकता समाज बनाती है। समाजों से ही धर्म, राष्ट्र और विश्व अपना अस्तित्व रखते हैं। अलग-अलग भागों में बैंटा हुआ देश, अलग-अलग भागों में बैंटा हुआ धर्म, अलग-अलग भागों में बैंटा हुआ समाज और परिवार कुछ भी नहीं होता। न परिवार, न समाज, न धर्म और न देश। एक सूत्र में रहना ही परिवार को एक रखने का राजमंत्र है। एक-दूसरे के प्रति ल्याग-परायणता रखने से ही किसी का भी घर एक रह सकता है। एक सूत्र में बैंधे घर से बहुकर कोई मंदिर या मकान नहीं होता और न स्थान या मनुष्य होता है। जहाँ घर के सभी सदस्य साथ रहते हैं और एक ही चूल्हे का भोजन करते हैं, यह उस घर का पुप्पा है किन्तु जब एक ही माता-पिता की संतानें अलग-अलग घर बना लेते हैं और एक दूसरे का मुँह देखना भी पसन्द नहीं करती तो यही कारण उनके ‘परिवारिक पाप’ का बीज बन जाता है। माता-पिता के रहते हुए अगर बेटे अलग हो जाएँ, तो यह माँ-बाप के पाप का उदय है, और उनका साथ रहना दोनों के पुप्पों का उदय है।

ल्याग परिवार की एकसूत्रता का मूलमंत्र है। बचपन में आपने वह कहानी जत्रर सुनी होगी जिसका शरीक था ‘सूखी डाली’। वह कहानी यह थी कि एक परिवार जो प्राचीन परम्पराओं का संवाहक था, उसमें एक आधुनिक पढ़ी-लखी लड़की बहू बनकर आती है। घर के संस्कार और वहाँ का वातावरण कुछ इस तरह का होता है कि बहू उसमें ढल नहीं पाती। वह आपने पति को समझा-बुझा कर अपना घर, अपना मकान अलग बनाने का निर्णय कर लेती है, जब वे दमपति अपना सामना बौंधकर जाने के लिए तैयार होते हैं, तो घर के बुजुर्ग दादरसी पूछते हैं, ‘क्या बात है बेटा, कहाँ बाहर जा रहे हो?’

बहू आधुनिक थी, पर मर्यादित थी। उसे घर के पुराने सोफे, पुरानी टेबल, कुसियाँ, दीवारों का रंग-रोग्न आदि पसन्द नहीं था। वह तो दादा के सामने कुछ न बोली, पर उसकी ननद ने कहा, ‘भाभी अपना घर अलग बसा घर को स्वाभि कैसे बनाएं?’
रही है।' दादाजी चौंक पड़े, ‘अरे, ऐसी क्या बात हो गई? मेरे जीते जी घर का कोई सदय क्या अलग घर बसाएगा? मेरे होते हुए इस बत्तृक्ष की डाली क्या अलग हो जाएगी? आखिर क्या कारण है कि बहू को इस घर से अलग होने का सोचना पड़ा?’ नन्द ने बताया कि भाभी को दीवारों का रंग, पुरानी शैली के सोफे, टेबल-कुस्ती आदि अच्छे नहीं लगते। दादा ने सोचा और तत्काल निर्णय लेते हुए अपने बेटे से कहा, ‘बेटा, क्या तुम इतनी छोटी-सी बात के लिए बत्तृक्ष से अलग हुई डाली बनना चाहते हो? उन्होंने अपने पुत्र के दिसर पर हाथ फेंकते हुए कहा, ‘बेटा, मेरे पास इतना धन तो नहीं है कि मैं घर का पूरा परिवर्तन कर सकूँ। फिर भी तुम यह चाही लो और मेरे पास जो ठोड़ा-सा सोना है उसे बेचकर जैसा बहूरानी को पसंद हो, वैसा घर में परिवर्तन कर लो पर कम-से-कम घर को तो दूर ने मत दो।’

घर का अभिभावक होने के कारण बुजुर्ग का यह दासित्व बनता है वि वह बड़े-से-बड़ा ल्याग करके भी घर को हमेशा प्रेम, आत्मीयता, भाईचारा और सहभागिता से एक बनाए रखे। घर के बुजुर्गों के रहते हुए भी अगर घर टूट रहा है तो इसमें नई पीढ़ी से अधिक बुजुर्गियार दोषी है। पुरानी पीढ़ी को भी नई पीढ़ी के अनुरूप ठलना होगा और नई पीढ़ी को भी पुरानी पीढ़ी को समझते हुए घर के माहौल में समझौते के हालात बनाने होंगे। न तो हम पुरानी पीढ़ी को इन्कार कर और न ही नई पीढ़ी के प्रति ही अस्वीकार का भाव लेकर आएं। एक-दूसरे के प्रति रहने वाले ल्याग के भाव में ही परिवार की आत्मा समाई रहती है।

‘रामायण ल्याग का आदर्श है। मैं तो कहूँगा कि हर घर में ‘रामायण’ जरूर होनी चाहिए। गीता, आगम, पिटक, बाङ्गल, कुरान आदि सब शास्त्रों का मूल्य रामायण के बाद है क्योंकि रामायण बताती है कि घर और परिवार को किस तरह से ल्याग और आत्मीयता के धरातल पर रखा जा सकता है। रामायण हमारे लिए आदर्श है। मैं महज राम-राम रटने की प्रेणा नहीं ढूँगा। मैं यह से, रामायण से पर-परिवार में कुछ सीखने की प्रेणा ढूँगा। मैंने तो भी राम और रामायण से सीखा है। रामायण इसान के लिए पहली धार्मिक प्रेणा है जब कि कुरान और गीता दूसरी प्रेणा, पिटक तीसरी प्रेणा और

8

वाह! ज़िन्नमी
आगम चौथी प्रेरणा है। रामायण कुंजी है घर को स्वर्ग बनाने के लिए। हो सकता है कि रामायण में कुछ ऐसे पहलू भी हों जो हमें ठीक न लगें, पर दुनिया की कोई भी चीज आखिर हर दुःख से १००% सही या फिट हो भी तो नहीं सकती। हर युग की अपनी दुःखी और मर्यादा होती है, पर रामायण में भी ९०% तथ्य ऐसे हैं जो हमारे युग को, हमारे जीवन और समाज को प्रकाश का पुंज प्रदान कर सकते हैं। उन्हीं से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि एक बेटा अपने पिता के वचनों का मान रखने के लिए वनवास तक ले लेता है। एक पत्नी अपने पति के पदचिह्नों का अनुसरण करती हुई वन-गमन करती है तो एक भाई अपने भाई का साथ देने के लिए वनवास स्वीकार कर लेता है। एक भाई राजमहल में रहकर भी भाई के दृढ़ ज्ञान का स्मरण कर राजमहल में भी वनवासी का जीवन व्यतीत करता है। यह सब पारिवारिक त्याग की पराकाश है। इससे बढ़कर दूसरा शाब्दक्रिया क्या होगा? शायद राजमहल में रहते हुए राम को इतना भ्रातुसुख नहीं मिलता जितना वन में रहते हुए उन्हें लक्ष्मण और भरत से मिला था।

“राम और सीता को वनगमन करते हुए, देख कर लक्ष्मण अपनी माँ सुमित्रा के पास जाते हैं और कहते हैं—‘माँ, भाई राम और भाभी सीता वन की ओर जा रहे हैं।’ उनके जाने से फर्श पर भी भी तुम्हारे एक वर्दान (आज़ा) चाहता हूँ।’ सुमित्रा ने कहा, ‘बेटा, सीतलेपन के कारण एक धरी ने, एक दीदी ने जो वर्दान मांगा था उसका यह दुःपरिणाम हुआ कि राम जैसे पुत्र को वनवास जोलना पड़ रहा है और दार्शनिक पति की पत्नी होकर हमें वैधव्य का दाग लग गया है। बेटा, इस समय तुम मुझसे कौनसा वर्दान मांगना चाहते हो? तुम्हें माँ से कोई वर्दान चाहिए तो भी इस घटित घटना की बेला को गुजर जाने के बाद कुछ वर्दान मांग लेना।’ लक्ष्मण ने कहा, ‘माँ, यह वर्दान मांगने का समय आ चुका है। आपने एक मिनट की भी देर कर दी तो मैं जीवन में फिर कभी वह वर्दान मांगने योग्य न रह जाएगा।’ व्यक्तित्व होकर सुमित्रा ने कहा, ‘जब सारा घर ही उजड़ चुका है, तब तू भी अपना वर्दान मांग ले। जब उजड़ना ही है तो यह भी उजड़ने में एक और निमित्त बन जाएगा।’

तब लक्ष्मण ने कहा, ‘माँ, बड़े भाई राम और भाभी सीता जिस वनगमन घर को स्वर्ग कैसे बनाएँ?
के लिए तत्पर हैं, मैं भी उनकी सेवा के लिए चौथ वर्ष का बनवास स्वीकार करना चाहता हूँ।’ ‘माँ सुमित्रा गद्दूदाद हो गई। उसने लक्ष्मण की हुदाय से लगा लिया और बोली, ‘बेटा, तुमने ऐसा कहकर मैं और कुल का गौरव बढ़ा दिया है। जो भाई, भाई के काम आ गया, वही वास्तव में भाई होता है। आने वाले समय में लोग जितने आदर से राम का नाम लेंगे उससे कहीं अधिक सम्मान से तुम्हारा भी नाम लेंगे।’

समय ग़वाह है कि लक्ष्मण भी राम के समान आदरणीय हो गए। राम तो संभवतः पिता के वचनों का पालन करने को मजबूर रहे होंगे, पर लक्ष्मण और भरत तो ऐसा करने के लिए बिल्कुल भी विवश नहीं थे। पर यही तो परिवारिक भावना है और ये ही तो सामाजिक चरित्र और मूल्य हैं। सच्चाई तो यह है कि इन्हें मूल्यों से भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ है। यह संस्कृति जिसके भी घर में है, वहीं भारतीय है। यदि ऐसा नहीं है तो आप आपे भारतीय और आपे परदेसी हैं। हर व्यक्ति अपना-अपना कर्त्तव्य समझे।

परिवार में पिता अपने और पुत्र अपने कर्त्तव्य समझें। सास अगर अधिकार रखती है तो वह अपने कर्त्तव्य भी समझे, बहू भी अपने कर्त्तव्य निभाएं। भाई-भाई अपने कर्त्तव्य जानें तो देख-भाभी भी अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करें। परिवार तो यह के समान है जिसमें सभी सदस्य यदि अपने-अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए आहुति देते रहते हैं तो ही परिवार संयुक्त रह सकता है। परिवार को संयुक्त रखना परिवार में जन्म लेने वाले का पहला कर्त्तव्य और धर्म है।’‘अलग-अलग रहने वाले का तो नमक भी महंगा पड़ता है। एक साथ रहने वालों में अगर चार हैं तो ‘चौथरी’ और पांच हैं तो पंच कहलाते हैं। यदि चार भाई साथ रहते हों और उनमें से किसी एक की क्रिस्मत बिगड़ जाए और उसे हर ओर से घाटा उठाना पड़े तो अन्य तीनों भाई मिलकर उसके कठोर का निवारण कर देंगे जब कि अकेले रहने वाले को विपत्ति के समय में दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर होना पड़ेगा। जो भाई भाई का नहीं हो सकता वह भ्रम का भी नहीं हो सकता। जो भाई भ्रम का नहीं हो सकता, वह समाज का भी नहीं हो सकता। यदि तुम किसी का साथ नहीं दे सकते तो तुम्हारा साथ कौन देगा?

6

वाह! जिन्दगी
अगर आप पांच भाई हैं तो उनमें से तीन शहर में और दो गाँव में रह सकते हैं। यदि शहर में तीनों भाई अगर अलग-अलग रहते हैं और प्रत्येक भाई ढाई हजार रुपये किराया देता है तो साढ़े सात हजार रुपये लग गए किन्तु अगर साथ में रहते तो चार हजार में ही अच्छा-सा मकान मिल जाता। इससे खर्च भी कम होता और एक-दूसरे के साथ सहभागिता भी अधिक होती। आप जब बीमार हो जाओगे तो पड़ोसी नहीं अपितु आपका भाई ही काम आएगा।

अब हमारी बात सुनिए। जब हमारे पिता ने संयम सिया तो अपने बच्चों से (हम भाईयों से) कहा था, ‘बच्चे’, तुम्हें जैसा जीना हो जैसा जीना। मैं कोई दखल नहीं दूँगा लेकिन जब तक हम संत माता-पिता जीवित रहें, तुम लोग अलग-अलग मत होना। इसके अतिरिक्त जो तुम्हें करना हो, करते रहना।’ हमने भी अपने माता-पिता के साथ ही संयम अंगीकार किया था। आप अपनी पत्नी के साथ आठ घंटे बिताते हैं, बच्चों के साथ दो घंटे बिताते हैं, दुकान में बारह घंटे बिताते हैं। अरे, भाई-भाई लड़ने के लिए नहीं होते। हमारे माता-पिता ने हम में कोई लड़ने के लिए योग्य ही पैदा किया है। जो उसने कहा वह मुझे मंजूर और जो मैंने कहा वह उसे मंजूर, भाई-भाई के बीच अखंड प्रेम को बनाये रखने का यही मूलमंत्र है।

एक के कार्य में दूसरा हस्तक्षेप नहीं करता। तुमने अगर गुलत किया है तो उसका परिणाम भी सामने आ जाएगा और अच्छा किया है तो उसका परिणाम भी छिपने वाला नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे की सलाह ले लो। हम दोनों भाई तो तीन सी वैसा दिन एक ही पात्र में एक साथ भोजन करते हैं। एक भाई रोटी चूरूता है तो दूसरा भाई उसे आनन्दपूर्वक खाता है। भाई के हाथ से चूरी हुई रोटी का स्वाद ही अनेका होता है।

धर्म वह नहीं है जो शास्त्रोक है बल्कि धर्म तो वह है जिसे व्यावहारिक जीवन में धारण किया जा सके। पहले कर्तव्य तो माता-पिता के हैं अपनी संतानों के प्रति, दूसरे कर्तव्य संतानों के हैं अपने माता-पिता के प्रति। मैं घर को स्वर्ग कैसे बनाएँ?
चाहता हूँ कि आप लोगों का घर स्वर्ग का प्रतिनिधि घर बन जाए। माता-पिता, बुजुर्ग सभी अपने-अपने दायित्व निभाएँ। न जाने कितनी आस, आराज से घर में बच्चे का जन्म होता है, उसे मारे-पीटे नहीं, अपने टीटू के कान मरोड़े नहीं। वह आपका टीटू है, टददू नहीं। अपशब्दों का प्रयोग न करें। शराब, सिगरेट जैसे दुर्योगन से बचें। ऐसा कुछ भी न करें और न करें जिससे बच्चों पर गुलत संस्कार आए।'बच्चों का जीवन आईने जैसा होता है। वह जो जैसा देखेंगा, वैसा ही पुनः आपको दिखाएगा। बच्चे केमरे की भाँति हर चीज को अपने अंदर उतार लेते हैं और समझ आने पर वापस उसे ही दिखा देते हैं एकदम चलचित्र की तरह!

समाज का अध्यक्ष बन कर समाज का संचालन करना आसान हो सकता है लेकिन घर का अधिभाषक होकर अपने घर के बच्चों का पालन-पोषण करना कठिन होता है। देश के प्रशासनमंत्री के लिए शायद देश का संचालन करना सहज हो, पर अपने ही बेटे को मुसंस्कारित करना देश को संचालित करने से भी मुश्किल काम है। पिता इसीलिए तो आदरणीय होते हैं क्योंकि वे हमें अपने पौत्रों पर खड़ा होना सिखाते हैं। केवल उपदेशक न बनो, कर्ता बनो। जो शिक्षाप्रद बातें आपने अपने बच्चों, नाती, पोतों से कहीं हैं उनके उदारार्थ स्वर्य बनो। जब बच्चे आपको वैसा ही करता हुआ देखेंगे तो वे भी वैसा ही अनुकरण करेंगे। बच्चों के लिए सिर्फ़ पैसा ही होता नहीं, उन पर अपने समय का भी निवेश करें। आप उन्हें ऐसे संस्कार दीजिए कि सभी उस पर गर्व कर सकें। हाँ, अगर आपको लगता है कि बच्चा भटक रहा है तो उसे लताड़ने का भी हक़ करें। गुलत कायम के लिए बच्चों को संस्कार न दे।

‘‘ऐसा हुआ कि एक अमीर व्यक्ति के घर पर आधी रात के समय पुलिस ने दस्तक दी। मकान-मालिक उठा और उसने घर के बाहर पुलिस को खड़ा देखा। वह चौंक गया कि उसके घर पर पुलिस का क्या काम? उसने दस्तावेज खोला और पूछा, ‘किसलिए आना हुआ?’ पुलिस इंस्पेक्टर ने एक फोटो दिखाते हुए पूछा, ‘क्या आप इसे जानते हैं?’ मकान-मालिक ने कहा, ‘यह तो मेरा ही बेटा है। क्यों, क्या हुआ?’ इंस्पेक्टर ने बताया, ‘आज आपका बेटा इंडिया गेट के पास कुछ लड़कियों से छेड़खानी करते हुए पाया गया, 8 वाह! जिन्दगी
और उसने उनके साथ बद्दलमीजी की। इसलिए हम उसे गिरफ्तार करने आए हैं। उसके साथ अन्य दो लड़के भी थे जिन्हें हम पकड़ चुके हैं और अब आपके बेटे की बारी है।

पिता ने सब सुना, गहरी लम्बी सौंस भरी और वह बेटे के कमरे में गया। उसने बेटे से पूछा, ‘सच-सच बताओ, क्या तुम्हे किसी लड़कियों के साथ छेड़खानी की थी? बाहर पुलिस खड़ी है, सच-सच बता दो।’ बेटे ने शर्म से गर्दन झुका दी। पिता ने फिर दोहराया, ‘मैं पूछ रहा हूँ बेटा, क्या तुमने ऐसा किया?’ बेटे ने कुछ जबाब न दिया। पिता समझ गया। वह बाहर आया और इंस्पेक्टर से बोला, ‘मेरा बेटा कमरे में है। जाए, उसे गिरफ्तार कर लीजिए।’ बेटा गिरफ्तार हो गया। बेटे के मन में क्रोध भर गया कि यह कैसा पिता है जो मुझे बचाने के बजाए मुझे जेल भेज रहा है। इंस्पेक्टर के मन में भी विचार आ रहे थे कि यह अजीब आदमी है जो अपने ही पुत्र को गिरफ्तार करवा रहा है। लगता है, बाप-बेटे में अनबन है। लेकिन वह क्या करे! लेचला वह अपने मुज़ेरिम को फिर तभी पिता ने आवाज लगाई, ‘ठहरो। इंस्पेक्टर साहब आप जरा अंदर आइए।’ अपनी अलमारी से उसने पांच हज़ार रुपये निकाले और इंस्पेक्टर को देते हुए कहा, ‘ये रुपये मैं अपने बेटे को छुड़ाने के लिए नहीं, बल्कि इस बात के लिए दे रहा हूँ कि आज आप इसकी इतनी पिताई करें कि आज के बाद यह फिर से किसी भी लड़की पर गृहलन नजर डालने का साहस न कर सके।’

यह पता चलने पर कि बेटा विगड़ रहा है, माता-पिता होने के नाते, घर का बुजुर्ग और अभिभावक होने के नाते आपका भी यह दायित्व है कि आप उसे पुनः सही रास्ते पर लाएं।

‘जैसे माता-पिता के दायित्व हैं बच्चों के प्रति, वैसे ही बच्चों के भी कुछ कर्तव्य हैं अपने माता-पिता के प्रति। माता-पिता तो किसी पवित्र मंदिर की तरह होते हैं जिनके चरणों में ही स्वर्ग होता है। जो अपने माता-पिता की उपेक्षा करते हैं, वे भूल जाते हैं कि उन पर माता-पिता का कितना डरण है। इसलिए, मैं कहा करता हूँ कि जो व्यक्ति आठ घंटे अपनी पत्नी के साथ बिताता है, वह

घर को स्वर्ग कैसे बनाएं?
इतना नैतिक दायित्व ज़रूर रखे कि दो पण्णे अपने माता-पिता के साथ ज़रूर रहे और उनके साथ भी दो पण्णे बिताए। पति, तू यह जान ठों कि तुम पर किसी भी पत्नी का अर्ण नहीं होता और पति, तुम भी समझ ठों कि तुम पर भी किसी पति का अर्ण नहीं होता लेकिन हर पुरुष और महिला पर माता-पिता का अर्ण ज़रूर होता है।

माता-पिता ने हममें अपना भविष्य देखा है। उन्होंने हमारी रचना को सन्दर्भ में बनाने का प्रयत्न किया है। क्या हम रचना इतनी निष्पर होगी कि रचनाकार को ही दुःख के बैठे? जिसने हमें अपना भविष्य समझा, क्या हम उनका वर्तमान नहीं बनाएँ? ओह, धरती पर तो एक ही ईश्वर है, और वह ईश्वर हमारे अपने माता-पिता हैं। जितना उन्होंने हमारे लिए किया, उसका २५% भाग भी आप उनके लिए कर दीजिए। तो आप उनकी पुण्यावधी और आशीर्वाद के उत्तराधिकारी हो जाएँ।

कैसी विचित्र बात है कि बचपन में हम अपने माता-पिता का विचारण गीला करते थे और आज उनकी आँखों को गीला कर रहे हैं? यदि कोई जब तक तुम ठीक से चलने लायक न हुए, वे तुम्हारी अंगुली पकड़ कर तुम्हें चलाते रहे, अंगुली पकड़ कर तुम्हें स्कूल ले आप जाते रहे। वे हमारा सहारा बने हुए थे और आज जब वे अशक्त हैं तो तुम भी उन्हें अंगुली थामकर किसी मंदिर अथवा किसी तीर्थस्थल में ज़रूर ले जाओ। इसी बाद के शायद तुम्हारा थोड़ा-सा अर्ण उत्तर जाए। ऐसा करना जहाँ आपके लिए सुखदाई होगा, वहाँ आपको थोड़ा-सा उत्तर भी करेगा।

माँ, तुमने तीर्थकिरण को जन्मा है।
संसार तेरे ही, दम से बना है।
तू मेरी पूजा है, मन्त्र है मेरी।
तेरे ही चरणों में जन्मा है मेरी।

हे माँ, तुमने तीर्थकिरण को जन्म दिया है। देवराज भी तुम्हें प्रणाम करते हैं। तुम्हारे ही दम से संसार है। तू ही हमारी पूजा है, तू ही हमारी मन्त्री है। तेरे ही कदमों में हमारी ज़ज्ञत है। जो भी माता-पिता के प्रति अपने दायित्वों को,
कर्त्तव्यों को निभाता है, उन्हें सुबह उठकर प्रणाम करता है, उनके साथ भोजन करता है, रात्रि में सोने से पूर्व उनकी चरण-सेवा करता है, उसका पुत्र होना भी धन्य है।

मैं, महिलाओं से कहना चाहूँगा कि वे अपने पति को उसके माँ-बाप से अलग न करें, अलग न होने दें। अगर वह अलग ही होना चाहे तो आप उन्हें समझाएं कि वह माता-पिता से अलग न हो। हर महिला का कर्त्तव्य है कि अगर उसका पति श्रवणकुमार की भूमिका आदा करना चाहता है तो वह उसका अवशय ही सहयोग करे। यदि आप श्रवणकुमार की माँ बनाना चाहती हैं, तो कुछ आपने पति को श्रवणकुमार बनने की प्रेरणा दें। उसे ऐसे करने का प्रोत्साहन दे। सभी, माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करें।

घर में सभी समान रूप से अपने-अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करें, तभी घर स्वर्ग बन सकेगा। सास-बहू परस्पर न लड़ें। मैंने अभी कुछ दिन पहले एक बहू से पूछा, ‘आपको हाथ-खार्च की कोई झूठीना है? उसने बताया, ‘सास देती है।’ अच्छा हुआ, उस बहू ने सारी सासुओं की लाज रख ली। सास-बहू माँ-बेटी के समान होती हैं। सास हमेशा यही समझे कि बहू, बहू नहीं बल्कि बेटी है और बहू भी सास को माँ ही समझे। घर के सभी सदस्य अगर तरीके से जीना सीख ले तो दुनिया की कोई भी ताकत घर को नहीं तोड़ सकती। वाप-बेटे अलग नहीं हो सकते। सास और बहू के बीच वैचारिक संबंध नहीं होता। घर के कारण ही घर टूटा करते हैं। मैं सासुओं से कहना चाहूँगा कि आप अपनी बहुओं को इतना प्रेम, इतना स्नेह दें कि बहुएं अपने पीहर का फोन नम्बर तक भूल जाएं। कभी पीहर जाना भी पड़ जाए तो उसे सास रूपी मम्मी की याद आती रहे, और उसे वहाँ से जबल्दी ही वापस आने की इच्छा हो। अभी तो हालत उलटी है। यदि बहू समुदाय में है तो वह हमेशा ऐसा अवसर तलाशती रहती है कि उसे पीहर जाने का मौका मिले। कुछ भी नहीं तो वह अपने भाई को फोन पर कहेंगी, ‘बेटे का जन्म-दिन मना लो, ताकि मुझे पीहर आने का मौका मिल जाए।’

सासुओं, तुम अपनी बहुओं को इतना स्नेह दो कि वे पीहर जाने को इतनी बात न हो। उनके माता-पिता ने अपनी लड़की को तुम्हारे घर भेज घर को स्वर्ग कैसे बनाएं?
दिया है तो उन्हें प्रताडित मत करो। क्या आप बहू को अपने घर में लड़ने-झगड़ने के लिए लाए हैं? वैसे भी आजकल तो लड़कियाँ कम हो गई हैं। इसलिए लड़के मारे-मारे घुम रहे हैं। तुम्हें कितने से सम्पर्क किया होगा, कितने से कहा होगा तब वह बहू बन कर तुम्हारे घर में आई है और अब आप उससे संतुलन नहीं बिठा पा रहे हैं। सास और बहू का संबंध पवित्र संबंध है। इसी संबंध में घर का स्वर्ग बनाने की बुनियाद स्थित है। इसलिए कृपया आप एक दूसरे के प्रति प्रेमपूर्ण, समझौता भरा, विश्वासभरा व्यवहार करें। बहुएं अपनी सास के सम्मान में कभी कमी न आने दें जब वे मर्यादा में रहेंगी तभी गृहलक्ष्मी और कुलवधु कहलाएंगी। सास बहू को इतनी स्वतंत्रता अवश्य दे कि वह भी अपने मन से कुछ कर सके। वह बात-बात में दखलजंदाज़ी न करे।

तुलसीदास की चौथाई का एक सुन्दर पद है।

सास-ससुर पद-पंकज फूजा।
या सम नारी-धर्म नहीं दूजा।

सास-ससुर माता-पिता ही होते हैं। ये ही वे सौभाव्यदाता हैं जो नारी को उसका पति प्रदान करते हैं। जिस घर में बहू को गृहलक्ष्मी मानकर इजात दी जाती है और सास-ससुर को माता-पिता मानकर सम्मान दिया जाता है, वह घर अनायास स्वर्ग ही होता है। जिस घर में सास-बहू आपस में 'तू-तूः मैं-मैं' करते रहते हैं, वह घर तिनकों की तरह कभी भी बिखर सकता है।

संबोधि धाम के अध्यक्ष पारसमलजी भंसाली बता रहे थे कि उनकी पत्नी और माँ के बीच संतुलन का एक सबसे बड़ा राज़ यह है कि अगर मेरी पत्नी को सजबी भी बनानी है तो वह अपनी सास से पूछकर बनाती है और माँ की ख़ासियत यह है कि मेरी पत्नी जो करना चाहे, बनाना चाहे, उसमें सहज सहमति देती है। क्या आप समझे कि सास-बहू के बीच कैसा एडजेस्टमेंट होना चाहिए। बहू सास से पूछकर करें और सास बहू के कार्यकलापों में ज्यादा हस्तक्षेप न करें। सास कंट्रोल रखें, पर एक्स्ट्रा कंट्रोल भी नहीं।

एक सास ने मुझे बताया कि बहू के साथ उसकी काफी कलह रहती है। कोई समाधान बताए। बहू भी साथ थी। मैंने बहू को दो नुस्खे दिये। पहला

12

वाह! ज़िन्दगी
यह कि साप के सामने मत बोलो और दूसरा यह कि वह जो कहे, कर दो।
बस, हो गई शान्ति। आप भी इस नुस्खे को अपनाएं और लाभ उठाएं।

पति-पत्नी के बीच भी संतुलन रखें। दोनों के बीच विश्वास और प्रेम की आया कायम हो। जहाँ दोनों के बीच ‘तू-तू, मैं-मैं’ चलती रहती है, वहाँ दोनों ही एक दूसरे से दुःखी रहते हैं।

‘एक पति संतासिंह अपनी पत्नी बांटा से इतना अधिक परेशान था कि उसने अपने घर में लेत आना शुरू कर दिया। उसकी पत्नी ने उसे सबक सिखाने की सोची और वह काले कपड़े पहनकर तथा चुड़ैल का मेकअप कर घर के रास्ते में पड़ने वाले कब्रिस्तान के पास खड़ी हो गई।

जैसे ही उधर से उसका पति आया तो उसने भयानक आवाज निकालते हुए कहा, कौन हो? कहाँ जा रहे हो? ठहर जाओ।’

संतासिंह ने पूछा, ‘कैसे, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ? बांटा ने भयानक आवाज में कहा, ‘क्या तुम्हें मुझसे डर नहीं लग रहा है? मैं चुड़ैल हूँ।’

पति ने कहा, ‘इसमें डरने जैसी क्या बात है? आपकी हमारी तो रिश्तेदारी है।’

चुड़ैल ने पूछा, ‘कैसे?’

संतासिंह ने जवाब दिया, ‘दरअसल मेरी शादी आपकी ही बड़ी बहन से हुई है।’

झगड़ोगे तो दोनों ही परेशान होंगे। प्रेम से रहने गो दोनों ही सुखी जीवन जी सकोगे। पति-पत्नी का संबंध तो एक पवित्र सम्बन्ध होता है। यह सम्बन्ध चार बातों पर ही जिया जा सकता है। १. ट्रस्ट, २. टैक्स, ३. टॉकिंग और ४. टच। यानी एक दूसरे पर भशोला रखिए। एक दूसरे के लिए समय का भोग दीजिए। आपस में प्रेमपूर्वक बातचीत का सिलसिला जारी रखिए और एक दूसरे को सहयोग देते रहिए। यदि वह कोई संत ही होता तो आपसे शादी थोड़े ही करता। और हाँ, पत्नी की आवश्यकताओं और भावनाओं का आप भी ध्यान रखिए। धी का मन कोमल होता है। उसके सिर में दर्द होता ही माये को सहलाएं। वह इतने से ही अभिभूत हो जाएगी।

घर को स्वर्ग कैसे बनाएं?
टॉल्स्टॉय ने मरने से पहले कहा था कि मेरी पत्नी को तब तक ख़बर न
दी जाए, जब तक मैं मर न जाऊँ। क्योंकि अगर वह मेरे सामने होगी, तो वह
शांति से मुझे मरने भी न देगी। जिसने मुझे शांति से जीने न दिया, वह शांति से
मुझे मरने कैसे देगी? यह झगड़ा लुकाय के दम पर स्वर्ग की कहानी है। वहीं मार्क
ट्वेल ने पत्नी को ब्रह्माज्ञाति देते हुए लिखा है कि वह मेरे साथ जहाँ भी होती,
मेरे लिए वही स्वर्ग होता। अप एक ऐसी महिला बनिये कि आपके पति भी
आपके लिए यही नज़रिया बनाए कि तुम जहाँ हो, वही स्वर्ग है।

अभी देवर-भाभी के संबंध बचे हैं, भाई-भाई के संबंध बचे हैं। ये सभी
लोग मिलकर जब परिवार को संचालित करते हैं तो कोई प्रेम, कोई त्याग,
कोई आत्मीयता, कोई सहभागिता का अवधान देता है तभी परिवार एकजुट
रहकर आदर्श बनता है। क्या आपको भारतीय संस्कृति मर्यादा का स्मरण है?
जब सीता जी का अपहरण हो जाता है तो राम को बन में उनके आभूषण मिलते
हैं। राम सीता का हार लक्ष्मण को दिखाकर पूछते हैं, ‘क्या तुम इसे पहचानते
हो?’ लक्ष्मण कहते हैं, ‘क्षमा करें भैया, मैं इसे नहीं पहचान पा रहा हूँ।’ ‘क्या
यह सच है कि तुम नहीं पहचान रहे हो?’ लक्ष्मण कहने लगे, ‘भैया, मैं ने तो
जब भी देखा, भाभी के चरणों को ही देखा है। हों, आप भाभी के पैरों की
पायल ले आएं तो मैं पल भर में पहचान लूँगा। मैंने पांवों से ऊपर भाभी को
नज़र उठाकर कभी नहीं देखा है।’

कैसे बतलाउँ क्षमा करो, भैया यह हार न देखा।
मैंने जब भी देखा, भाभी के चरणों को ही देखा।
वे लाल वरण, भाभी के चरण, मेरे तीर्थधाम कहलाए।
श्री राम लखन तेज व्याकुल मन, कुटिया में लौट जब आए।

ये सब मर्यादाएं हैं, जिनमें घर-परिवार के स्वर्ग का रहस्य छिपा है। मैं
जो बारे कर रहा हूँ वे हम सब के लिए हैं।

देवर-भाभी, भाभी-नन्द, देवरानी-जेटूती-सबके बीच में प्रेमभरा,
पारस्परिक सौहार्दपूर्ण व्यवहार हो। चार-दीवारों का मकान घर नहीं होता,
पारस्परिक प्रेम, त्याग और मर्यादा का नाम घर है। घर का निर्माण, परिवार का

वाह! ज़िन्न्क्याँ
आधार भावनाओं की इंटेंसियों से होता है। भावना और कर्तव्य ये दो शक्तियाँ मिलकर ही घर को नन्दनवन बनाती हैं।

घर में सुबह सदा जल्दी उठें। सूरज उगे उससे पहले जग जाएँ। घर को अवश्य सजायें-सजावटें। पत्नी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो उसकी ओर पर्याप्त ध्यान दें। यह नहीं कि डॉक्टर बुलाया, पत्नी को दिखाया और अपने काम-धंधे पर रवाना हो गये। नहीं, उसे कुछ समय जरूर दें, भावनात्मक संबंध प्रदान करें। शायद आपके धन से अधिक उसे आपके प्यार, आपके दिल और आपकी आत्मीयता की ज्यादा जरूरत है।

सांझ को जब घर पहुँचो, तो अपनी जेब की तरह अपने दिमाग का कचरा जो आप दुकान या डफ्टर से लेकर आए हैं, उसे भी कचरे की पेटी में फेक दें ना तब घर में प्रवेश करें। शोड़ा-सा चिड़चिड़ापन, कुछ-कुछ खीबा, शोड़ा-शोड़ाई ईर्मा जो दुकान पर ग्राहकों से सिरपच्ची करते वक्त आपके दिमाग में घुस आई है और आप उसे अपने साथ ले आए हैं। पहले उसी की कचरपेटी में फेक दें, तब ही घर में जाएँ। नहीं तो इस कचरे को आप घरवालों पर डालेंगे और अशांति का वातावरण पैदा करेंगे। घरवाले आपकी प्रतीक्षा करते रहते हैं। आप एक अच्छे बेटे, अच्छे पति, अच्छे पिता बनकर घर जाएँ। घरवालों को आपकी बहुत जरूरत है। लेकिन वह जरूरत तब अच्छी बनेगी जब आप अच्छे इंसान बनकर घर पहुँचेंगे।

घर के सभी सदस्य समाह में कम-से-कम एक दिन अवसर ही साथ बैठकर भोजन करें। इससे आपके प्रेम और आत्मीयता बढ़ेगी। परिवार से ही समाज का निर्माण होता है, समाजों से देश का निर्माण होता है। परिवार पहली सीढ़ी है, पहली नीव है। जब हर परिवार सुखी होगा तो पूरा नगर भी सुखी होगा। नगर की खुशाली ईद की तरह होगी, होली-दिवाली की तरह होगी।

आज के लिए बस इतना ही। मेरे प्रेरम्पूर्ण नमस्कार स्वीकार करें।

०००

घर को स्वर्ग कैसे बनाएं ?
"औरों को अनुशासन में रखना किसी के लिए भी आसान हो सकता है, पर स्वयं को अनुशासन में रखना बहुत बड़ी चुनौती है।"

मानव समाज के बीच जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाता जा रहा है, जैसे-जैसे उसके जीने का स्तर भी ऊँचा होता चलता आ रहा है। शिक्षा के स्तर ने लोगों को अधिक सुखी, सफल और समृद्ध बनाया है। वर्तमान की सबसे बड़ी खोज तो यही है कि यदि व्यक्ति चाहे तो अपने नज़रिये में आमूलचूल परिवर्तन कर सकता है।

किवबंदती है कि मनुष्य का स्वभाव शमशान में जाकर भी नहीं बदलता। मौत ही कुछ करे तो ठीक अन्यथा...। नीम के पेड़ को चाहे दूध या धी से सौंचा जाए पर उसकी कड़वाहट खत्म नहीं होती। वर्तमान समय में व्यक्ति और पदार्थ में जैसा चाहे वैसा परिवर्तन किया जा सकता है। यही कारण है कि मैं जो आपसे मुखातिब हो रहा हूँ वह केवल इसीलिए कि सोच और नज़रिये में परिवर्तन लाकर जीने की शौकी और स्तर को बेहतर बनाया जाए।

विल्मा रोड्सर्फ जैसे लोग जीवन यदि में कुछ कर गुजारने का संकल्प और मानस बना लेते हैं तो विकलागता और हर अभाव के बावजूद भी अपने जीवन में सफलता की ऊँचाईयों को छू सकते हैं। विल्मा चार वर्ष की आयु में

वाह! ज़िंदगी
लक्वाग्रस्त हो गई थी। उसके पाँच में ब्रेसेज लगे थे। वह बैसाखियों के सहारे चलती थी। उसे काला बुखार और निमोनिया भी हो गया था। नौ वर्ष की आयु में उसने सकल्य लिया कि वह ताऊभ्रू बैसाखियों के सहारे नहीं चलेगी। भले ही उसे हजार बार क्यों न गिरना पड़े पर अब वह अपने पाँचों और हाथों के बल पर ही चलेगी। जिस दिन उसके मन में यह विचार उठा, उसी दिन उसने अपनी बैसाखियों फंसक दी। वह लड़खड़ाती हुई चलने लगी। तेरह वर्ष की आयु में उसने एक-एक सीढ़ी चढ़ना शुरू किया। आप सुनकर चकित रह जाएंगे कि १९६० के औलमिक में उसने दौड़ में तीन स्वर्ण पदक प्राप्त किये।

कोई अपने जीने के तौर-तरीकों में बेहतरीन नज़रिया और मजबूत मानसिकता ले आए तो वह अपने जीवन में ऊँचाइयों को छू सकता है। यौत्के के जीवन की सफलता में जो सबसे बड़ी उपयोगी चीज है, वह है मैनेजमेंट, अर्थात प्रबंधन। यौत्के से लेकर व्यापार, विद्यार्थी से लेकर राजनीति, समाज से लेकर अन्तरराष्ट्रीय संस्थान-सबकी सफलता के पीछे प्रबंधन-शैली ही आधार बनती है। आज एम.बी.ए. उत्तरी भारत के व्यक्ति जीवन जीने वालों के लिए प्रधानमंत्री महात्मा गौतम्बुद्धु है। व्यक्तिगत सफलता के लिए भले ही एम.बी.ए. हो जाना उचित हो लेकिन जीवन के प्रबंधन के लिए व्यवसाय का प्रबंधन मात्र एक चरण भर है। जीवन हर व्यवसाय से उपर है। हर मूल्य से उपर उसका मूल्य है।

आज में आपको लाइफ मैनेजमेंट की बातें इसलिए कहूँगा कि वह मात्र व्यवसाय की नहीं बल्कि जीवन की सफलता से जुड़ी हुई है। स्वयं का प्रबंधन, स्वयं को व्यवस्थित करना जीवन की महान साधना है। औरों को अनुशासन में रखना किसी के लिए भी आसान हो सकता है, पर स्वयं को अनुशासन में रखना, अनुशासन की सीधेदार देने वाले आचार्य के लिए भी कठिन होता है। हर व्यक्ति सूत्रों को तो व्यवस्थित देखना चाहता है पर में सबके देना चाहूँगा कि व्यक्ति सूत्रों का प्रबंधन करने से पहले स्वयं का प्रबंधन करे। औरों को व्यवस्थित करना प्रत्येक व्यक्ति की अपेक्षा और ख्याति होती है, पर स्वयं को व्यवस्थित करना बहुत बड़ी चुनौती है।

कैसे करें स्वयं का प्रबंधन ?

९७
व्यक्तिगत जीवन हो या परारिवारिक, सामाजिक जीवन हो या आध्यात्मिक, हरेक को सुन्यवस्थित जीवन जीना, उसके लिए अनिवार्य है। जहाँ लोग यह नहीं जानते कि सुबह कब उठना चाहिए, सांझ को कब सोना चाहिए, या और कैसे कब खाना चाहिए, कैसे चलना चाहिए, कब बोलना चाहिए, कब चुप रहना चाहिए, किस तरह से अपने कार्यों को नियोजित किया जाना चाहिए वहाँ पर जरूरत है कि व्यक्ति अपना प्रबंधन स्वयं करे। अगर किसी ने अपने जीवन में ऊँचाइयों को छुआ है तो अवसर ही उसने कोई-न-कोई तरीका अथवा कोई-न-कोई बुनियादी उसूल जबर अपनाया होगा।

हमें से प्रथम व्यक्ति अपने जीवन का प्रबंधन करने के लिए जरा अपने विचारों का प्रबंधन करे। जैसे विचार होते हैं, वैसे ही सोच बनती है; जैसी सोच होती है वैसी ही वाणि बनती है। वाणि व्यक्ति के व्यवहार का आधार होती है और व्यवहार आदतों का निर्माण करता है। जैसी आदतें होती हैं वैसा ही व्यक्ति का चरित्र बनता है। सामाजिक मूर्ति के बेहतर निर्माण के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपनी आदतों को बेहतर बनाए। आदतों की बेहतरी के लिए व्यवहार और शैली को बेहतर बनाए। व्यवहार और कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने के लिए अपनी वाणि और शब्दों को बेहतर बनाओ। जैसे बीज होंगे, वैसे बगद फलेंगे। जैसी जड़ होगी, वैसे ही जमीन से पूल खिलेंगे।

जो अपने विचारों का प्रबंधन नहीं कर सकता, अपनी सोच को सुन्यवस्थित नहीं कर सकता, उसे चाहिए कि वह अपनी शिक्षा, अनुभव और ज्ञान का पुन: पुन: उपयोग करे और अपने सोच-विचार को बेहतर बनाने का प्रयास करे। हम प्रतिवर्ष यह कहते हैं कि महाबीर के समक्ष पहुँचकर राजा श्रेणिक पूछते हैं कि राजस्त में उन्होंने जिस राजर्षि के दर्शन किये थे उस क्षण में उनकी मृत्यु हो जाती हो उन्हें कौन-सी गति मिलेगी? धार्मिक समाज के लोग भली-भाँति जानते हैं कि तब महाबीर ने कहा था, ‘एक पाँव पर खड़ा होकर तपस्या करने वाला व्यक्ति, जिस क्षण में उसके दर्शन किए उस क्षण आगे उसकी मृत्यु हो जाती हो वह सातवीं नरक में जाता। जीवन का रहस्य समझ लीजिए कि मुक्ति के आधार, स्वर्ग-नरक के आधार कर्म और क्रिया में।

बाह! जिन्दगी
नहीं बल्कि व्यक्ति के सोच और विचार में निहित है। जब गलत सोच में मृत्यु होती है तो नरक और स्वस्थ तथा बेहतर सोच में मृत्यु होने पर उसका परिणाम स्वर्ग है। व्यक्ति के विचार ही भविष्य की आधारिता होते हैं।

धर्मस्थल पर जाने वाले व्यक्ति जितना समय पूजा-पाठ, सामाजिक-प्रार्थना में देते हैं उससे लाख गुणा जरूरी है कि वे अपने विचारों को भिषज, निष्पाद, उज्ज्वल और सरल बनाएं। जब भी दिमागु पर ध्यान जाए तब एक बात ज़रूर अपनाते रहें। वह है प्रोजेक्टिवनेस- अर्थात सकारात्मकता। सोच के सकारात्मक होने पर आँखें भी सकारात्मक ही देखेंगी और कानों में पड़ने वाले शब्दों का रूप भी सकारात्मक ही बनेगा। नकारात्मक सोच वाला बेहतर विचारों को सुनकर भी उसे काटना चाहेगा। एक व्यक्ति ‘श्रोता’ होता है, एक व्यक्ति ‘सरोता’ होता है।श्रोता होना सकारात्मकता है अर्थात जो सुनता है, ग्रहण करता है। सकारात्मक सोच के लोग सरोते की तरह होते हैं जिनका स्वभाव ही ‘काटना’ होता है।

विचार आधार है। प्रेम और शांति से जीने वाले व्यक्ति हर हालत में अपने विचारों के प्रति सकारात्मक ही हुआ करते हैं। विचारों को बेहतर बनाने का तरीका भी यही है कि जब भी आप किसी से मिलें, समान के साथ मिलें। और तो और, परिवार के सदस्यों के साथ भी समान संपर्क बात करें, फिर चाहे वह बेटा हो या बहू, पत्नी हो या पुत्री। यहाँ तक कि आप अपने मातहत कर्मचारियों, नौकर-नौकरियों से भी अदब से बात करें। इस्तानियत के नाते उनके प्रति समान का जजस्त्रिया रखें। आपकी सोच और वैचारिकता खुद-ब-खुद सकारात्मक रहेगी। प्रेम और शांति आकाश में से तपकने वाले पूल नहीं हैं। वे तो आपकी सकारात्मकता की उपज हैं। मित्र ही नहीं बल्कि दुश्मन के प्रति भी सकारात्मक विचार रखें। पता नहीं, कब कौन-सा मित्र शात्रु और शात्रु मित्र बन जाए। इस दुनिया में कब कौन किस समय काम आ जाए, ऐसी स्थिति में हम किसी को अपना दुश्मन क्यों बनाएं। कल को ऐसा कोई काम अटक जाए कि हमें अपने दुश्मन की ही गरज़ करनी पड़ जाए अतः यहीं बेहतर है कि हम शुरू से ही अपना व्यवहार बेहतर रखें।

कैसे करें स्वयं का प्रबंधन?
‘पोजेटिव’ सोच का व्यक्ति अपने विपक्षी के गुणों से भी सीखने का प्रयत्न करेगा। अगर वह पोजेटिविनेस अथवा सकारात्मकता का स्वाद चख लेता है तो वह खुद-ब-खुद श्रीकृष्ण हो जाता है। कृष्ण अगर नेगेटिविनेस का अनुगमन करते, तो वे भी कंस का चरित्र अपना बैठते। सारी खामी सोच की है, वैचारिकता और मानसिकता की है। सकारात्मक विचारधारा का व्यक्ति हर हाल में राम के चरित्र को अपने में जीने की चेत्ता करेगा, जब कि नकारात्मक विचारधारा खुद ही रावण की बहिन है। आप चाहे नायक हों या खलनायक यदि किसी में किसी तरह का गुण अथवा विशेषता है तो उसे भी अवशय दाद दीजिए।

रामायण का एक बहुत सुनहरा घटनाक्रम है। ‘कहा जाता है कि जब राम और रावण के मध्य युद्ध होना तब हो गया तो राम की सेना के वानर समुद्र पर सेतु बनाने के लिए प्रयत्नशील हो गए। अभी तक यही कहा जा रहा था कि राम की वानर-सेना के लोग रावण की सैन्यशक्ति की तुलना में कहीं खड़े ही नहीं हो पाते। लोगों को लगता था कि रावण ने तो महादेव को भी प्रसन्न कर रखा है, ब्रह्मा की ओर से उसे अमरत्व का वरदान मिला हुआ है, ब्रह्मा से उसे ब्रह्माख्न भी मिले हुए हैं, ऐसे महाकली को कौन परास्त कर सकता है? लेकिन जब अकेले हनुमान के द्वारा पूरी लंका को तहस-नहस कर दिया गया तो पूरी लंका हिल गई। जब एक वानर में इतनी ताक्त है तो बाकी के वानरों की ताक्त का अनुमान लगाना सहज नहीं है। तब तो तत्त्व यह हो गई थी कि वानर कहलाने वाले वे लोग अपने हाथ में मोटे-मोटे पत्थर उठाकर उस पर ‘राम’ का नाम लिखकर समुद्र में फेंकने लगे और उस सागर में भी ऐसी ताक्त नहीं रही कि वह उन पत्थरों को हुबा सके।

लंकावासियों ने यह देखा तो वे हिल गए। वे सोचने लगे कि इस वानर जाति का मुकाबला करना तो रावण जैसे पराक्रमी के लिए भी प्रशंसक का काम हो जाएगा। रावण के पास यह बात पहुँच चक्कियें कि लंकावासी परेशान हो गए हैं। रावण की सेना के मंत्री और सभासद कहने लगे कि महाराज, पूरी देश में आपके प्रति अस्थिरता के भाव पनप रहे हैं, अविश्वास की तहर उठ रही है। अगर आपको जनता का विश्वास हासिल करना है तो आपको भी सागर के

20

वाह! जिन्दगी
किनारे जाकर अपना नाम पत्थरों पर लिखकर उन्हें समुद्र में उतारना होगा।
अगर आप पानी में पत्थर तिरा सके तो जनता का विश्वास जीतने में आप
सफल हो जाएगा।’ रावण जानता था कि उसके पास ढेरों प्रकार की शक्तियाँ हैं
लेकिन पत्थर को पानी में तैराने की कला और शक्ति उसके पास नहीं है पर
अगर जनता में लंकाधिपति के प्रति विश्वास ही न रहेगा तो युद्ध में उसके साथ
कौन लड़ेगा?

सभासदों के दबाव में आकर रावण समुद्र के किनारे पहुंच गया और
उसने घोषणा भी कर दी कि वह पत्थरों को पानी में तैरा देगा। राक्षसों द्वारा
वहाँ बढ़े-बढ़े पत्थर इकठ्ठे कर दिये गये। सबके ऊपर ‘रावण’ लिख दिया
गया। क्या आप जानते हैं कि वे पत्थर डूबे या तैरे? अगर डूब गए तो क्यों और
tैरते रहे तो क्यों? अगर तैरते रहे तो आप राम के बजाय रावण का जाप क्यों
नहीं करते?

अगर ‘राम’ नाम के पत्थर तैरते रहें तो जान लीजिए कि ‘रावण’ नाम के
पत्थर भी तैरते रहे। केवल सकारात्मक विचारों के कारण। रावण ने पत्थर
उठाए, कुछ सोचा और पानी में पत्थर उतार दिए। सारे पत्थर तैरने लगे। लंका
में रावण की जय-जयकार हो गई कि दुनिया में केवल राम की ताक़त ही नहीं
है बल्कि रावण की ताक़त भी ताक़त है।

रावण जब राजमहल में पहुंचा तो मंदोदरी ने कहा, ‘मैं यह तो जानती हूँ
कि आपमें बहुत शक्ति और ताक़त है लेकिन यह बात समझ में नहीं आई कि
आपके नाम में ऐसी कौनसी करामत है कि पत्थर भी तिर गये? क्योंकि जब
मैंने मुना तो मैं भी समुद्र के किनारे गई। मैंने भी पत्थर पर ‘रावण’ लिखा था
और जैसे ही उसे पानी में छोड़ा, पत्थर डूब गया। आपने ‘रावण’ लिखवाया
वह पत्थर कैसे तैर गया? ’ रावण ने कहा, प्रिये! अब तुमसे क्या छिपाना? हर
पत्थर पर रावण लिखा गया तो मैं भी संदिग्ध था कि पत्थर तैरेगा या डूबेगा।
मैंने पत्थर की हाथ में उठाया और मन-ही-मन उससे कहा, ‘हे पत्थर, तुम्हें
राम की सौगंध हे अगर तुम डूब गए, तो ऐसा कहते हुए मैंने पत्थर पानी में
छोड़ दिया और पत्थर तैर गया। पत्थर पर भले ही ‘रावण’ शब्द लिखा हो,
कैसे करें स्वर्ग का प्रवेश?
पर नीचे तो राम ही का नाम था।

अरे, अगर पता चल जाए कि दुर्सम में भी खास रहस्य छिपा हुआ है तो तुम्हारी सकारात्मकता इसी में है कि तुम उस गुण को अपने जीवन में उतारो, तुम्हारी ताक़त और दस गुणी बढ़ जायेगी। लड़ने-झगड़ने से किसी की सफलता का प्रबंधन नहीं होता और न ही सामाजिक जीवन जीने के स्तर का प्रबंधन होता है। इसलिए, अगर आपकी सोच और विचार ठीक व बेहतर हैं तो आपकी पूरी जिंदगी, हर व्यवहार और क्रिया बेहतर हो जाएगी।

‘व्यक्ति की पतित होने वाली विचार-दशा उत्साह करती है और उन्नत विचार-दशा उत्साह करती है जो उसे स्वर्ग के पथ का अनुयायी बनाती है।’ विचारों का प्रबंधन करना सीखिए। नकारात्मकता को निकालिए, सकारात्मकता को अपने जीवन से जोड़िए। बात-बात में हस्तक्षेप न कीजिए, बात-बात में अर्थगत अपशब्दों का प्रयोग न कीजिए। लड़ना ही है तो शातरंज खेलिए। अरे, आपस में क्या झगड़ना? राजा-रानी के प्यारों को लड़ाइए। विचार-प्रबंधन के लिए जरूरी है कि हम कल्पनाओं में न उलझे, बल्कि वर्तमान को उपयोगी बनाएं, हम सत्य के दृष्टि बनें, सच्चाइयों का सामना करें, जो है उसे स्वीकार करें। अपने स्वभाव और सपनों को पहचानें। व्यक्ति अपने कार्यों का स्वयं उत्तरदायी है। घर को जोड़ने और तोड़ने के उत्तरदायी हम स्वयं हैं।

जब सोचो तो अच्छा सोचो, जब देखो तो बेहतर ही देखो, अच्छा ही देखो। अपनी ओर से चीज़ उसका समान ही हो। अपना का दुर्गा हाथ मानो क्योंकि उसके पास देने के लिए यही था अत: उसने अपना ही दिया। तुम्हारे पास समान है अत: तुम समान देकर अपना दर्शन ऊँचा उठाओ। पूर्वों की माला दूसरों को पहनने के लिए होती है, औरों से पहनने के लिए नहीं होती। औरों से पहनकर वह लघुता रखे कि वह उसका बड़पन है जो मुझे माला पहना कर समान दे रहा है। यह न सोचो कि आज तुम इतने बड़े हो गए कि तुम्हारा समान किया जा रहा है। समान पाने से आह्मक बढ़ता है समान पाने की आकांक्षा से आह्मक का पोषण होता है। लघुता, रचूता, सरलता इसी में है कि आप औरों को समान दें।

22

बाह ! जिन्दगी
स्वयं का प्रबंधन करने के लिए हम अपनी जीवन-शैली को व्यवस्थित करें। कब उठना, कब सोना, कब खाना, कब न खाना, कैसे बोलना, क्या न बोलना, अपने से बड़ी के साथ कैसा व्यवहार करना और छोटी से कैसा बरताव करना—ये सब वे पहलू हैं जिनके प्रति जागरूकता बत्ती जाए, तो जीवन के व्यवहारिक पहलूओं के प्रति भी प्रबंधन का प्रभाव स्थापित किया जा सकता है। जीवन के रूपान्तरण के लिए यह एक बड़ी क्रांति होगी कि हम स्वयं को व्यवस्थित करने के लिए कृतसंकल्प हों। अगर आप रात में एक बजे सोते हैं और आठ बजे उठते हैं तो अपनी समूची दिनचर्या अव्यवस्थित कर लेते हैं। रात व्याघर बजे खाना खाते हैं तो रुपया का निम्नवर्ण देते हैं। उससे गैस बेचने पर पिता का प्रकोप बढ़ेगा। रात में सोने से तीन घंटे पहले खाना खाए। मैं देखता हूँ कि लोग दिन भर कुछ न कुछ खाया ही करते हैं। कुछ नहीं तो पान-जर्दा ही चबाते रहते हैं। अरे, पशु भी खाते हैं पर हमारे जितना नहीं। वे खाते कम और जुगाली ज्यादा करते हैं और हम बस खाए ही चले जाते हैं। वे खाते भी हैं और पीते भी हैं, हम क्या खाते हैं और क्या पीते हैं, न कहूँ तो ही ठीक है। अरे, यह हमारा पेट है। यह नगर-निगम की कचरा पेटी नहीं है कि इसमें कुछ भी डालते चले गए। समय निश्चित कीजिए कि सुबह इतने बजे उठेंगे और इस वक्त नाश्ता करेंगे। खाली पेट चाहे भी न पीयें। हो सके तो गाय का दूध पीएं। दूध घर की गाय का हो तो सर्वश्रेष्ठ! पता नहीं, आज कल कैसा-कैसा दूध मिलता है और हम पीये चले जाते हैं।

लोगों के घरों में चार कारें रखने को तो जगह है लेकिन एक गाय को रखने का स्थान नहीं है। हम सरकार को कोस्ते रहते हैं किन्तु स्वयं किसी एक गाय को भी संरक्षण नहीं दे सकते। घर में गाय को रखने की जगह न हो तो गौशाला से दूध ले आएं, पर गाय का दूध अवश्य पीएं। गाय का दूध पीयोगे तो बुद्धि बलिदंश रहेगी। दूध न भाए तो लौकी का सूप बनाकर ही पी लें। खाना समय पर खायें। कहते हैं न कि जब घर से बाहर निकलो तो खा-पी कर निकलो अर्थात समय पर भोजन लीजिए। नाखून काट कर रखें। अगर बढ़े हुए नाखूनों से खाना खाया तो बहुत से कीटाणुओं को शरीर में प्रवेश करने का मौका मिल जाएगा। हाथों को ठोकर ही खाना खाएं। भूख से आधी रोटी कम

कैसे करें स्वयं का प्रबंधन?
खाएँ। इतना न खाएँ कि खाने के बाद किसी पाचक पदार्थ का प्रयोग करना पड़े। भोजन का भी आप प्रबंधन करें। एक सीमा तय करें–कब खाना, कितना खाना, तैयार होना।

सबसे अच्छा है गुड़गुड़ मिले और खाना खाकर घर से निकलें। दोपहर में एक गिलास फलों का रस लीजिए या फल खा लीजिए। फलों का रस स्वास्थ्य के लिए अच्छा टॉपिक है। शाम को हल्का भोजन लीजिए। शाम को अगर किसी भोज में जाना भी पड़े तो भी आप तो हल्का भोजन ही लें। गरिछ भोजन शाम को लेना शरीर के लिए ज्यादती है। हाँ, इतना अवश्य ध्यान रखें कि रात को सोने से 3 घंटे पहले भोजन से अवश्य निपट जाना चाहिए ताकि पानी पूरी मात्रा में मिल जा सके। दिन-भर खाते-पीते न रहें। आहार-पानी का भी आखिर एक सिस्टम होना चाहिए।

वस्त्र भी हमेशा सख़लीके के पहनें। एक मिल के बाहर महिला-कर्मचारियों के लिए चेतावनी दैँगी थी–‘यदि आप ठीकते कपड़े पहनती हैं तो यहाँ चालू मशीनों से दूर रहें और यदि चुस्त कपड़े पहनती हैं तो मिल के कर्मचारियों से दूर रहें।’

आप जर्दी, तम्बूकू, सिगरेट और शराब से पहेज रखें। इनका उपयोग शरीर के साथ खिलवाड़ा है। ये स्वास्थ्य के लिए शुद्ध हैं। ये शरीर और मस्तिष्क के सेल्स को दुर्भावित करते हैं। इनके उपयोग से सभ्य समाज में आपकी ‘हमेज’ भी खराब होती है।

और हाँ, हमेशा विनम्रता और मधुरता से बोलें। जिसके पास विनम्रता और मधुरता के दो गुण हैं, वह कभी विफल और दीर्घ नहीं हो सकता। सफलता के मायने ही हैं हर हाल में मधुरता, शांति, आनंद अर्थात् कुल मिलाकर जीवन को एक सिस्टम दीजिए। खाली दिमाग के नहीं बल्कि खुले दिमाग के आदर्श बनिये। अच्छाई का समान हो, अच्छाई को जीने का अनतर्विरोध हो।

जीवन के प्रबंधन के लिए समय का भी प्रबंधन करें। ‘टाइम मैनेजमेंट’ ‘लाइफ मैनेजमेंट’ के लिए जरूरी है। समय तो सबका सूत्रधार है। समय से ही

२४
हमारा जीवन बना है। समय है तो ही जीवन है। अगर समय ही न हो तो जीवन ही नहीं है। बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता। देवता अगर रूठ जाएं तो उन्हें मना सकते हैं पर समय रूठ गया तो उसे लौटाकर वापस नहीं ला सकते। इसलिए समय का प्रबंधन कीजिए। जीवन बहुत मूल्यवान है लेकिन समय के प्रबंधन के साथ। अगर आप समय का अपनाय करते हैं तो मान लीजिए कि यह जीवन का अपनाय है। प्रत्येक कार्य के लिए समय का सम्मुखित विभाजन कीजिए। स्वयं को व्यस्त रखिए। खाली दिमाग़ नहीं रखें। बेकार बैठा हुआ व्यक्ति शैतान का घर होता है। अपने समय को व्यवस्थित कीजिए।

हर नया दिन ईश्वर की ओर से मिलने वाला एक उपहार है। आप हर दिन को सार्थक कीजिए। जीवन की सार्थकता प्रत्येक दिन को सार्थक करने में है। मृत्यु जब आएगी तब आएगी, लेकिन जब तक जीव, हर दिन सार्थक करते हुए जीवे। निर्धन रूप से सी साल जीने से बेहतर है कि सिंह जैसे चार ही दिन जिया जाए। मरना कोई नहीं चाहता, लेकिन हम जीवन का मूल्यांकन भी नहीं करते कि हमने अब तक जो जीवन जीया, उसमें क्या खोया और क्या पाया? हम सभी सोचें कि मरने से पहले कुछ होकर मरने तो जीना सार्थक है अन्यथा व्यर्थ का जीवन तो जीवित लाश को होने की तरह है। हमारे लिए एक-एक दिन मूल्यवान और सार्थक होना चाहिए।

जीवन में एक वृट्ट की क्या कीमत है, यह उस विद्यार्थी से पूछो जो परिक्षा में फेल हो गया है। एक माह की कीमत उस महिला से पूछो जिसके आठ माह का बच्चा अपरिपक्व पैदा हुआ है। वह बताएगी कि एक माह और गर्भ रह जाता तो पूर्ण विकसित बच्चा पैदा होता और वह मंदबुद्धि नहीं होता।
एक दिन का मूल्य दैनिक वेतनभोगी श्रमिक से पूछो कि जिस दिन वह काम न करे उस दिन सांझ को घर में चूल्हा ही न जले। एक घंटे की कीमत किसी सिकंदर से पूछो जिसने मरने के पूर्व कहा था कि मुझे जीवन में एक घंटे की मोहलत मिल जाए तो मैं आधा साम्राज्य दे दौंगा। एक मिनट की कीमत उस व्यक्ति से पूछिए जो वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के ध्वस्त होने के ठीक एक मिनट पहले बाहर निकल आया। जीवन में एक सैकेंड की कीमत क्या होती है, यह उस ओलम्पिक खिलाड़ी से पूछिए जो मात्र एक सैकेंड पीछे रह जाने के कारण कैसे करें स्वयं का प्रबंधन?
स्वर्णपदक न पा सका। प्रतिक्रिया बेशकीमती है, उसे व्यर्थ न गवाएँ।

लोग बातों में ऐसा रस लेते हैं कि उन्हें समय का भान ही नहीं रहता। ऐसा हुआ कि एक प्रोफेसर किसी के घर गया। वहाँ बातों में वह भूल ही गया कि अपने घर भी जाना है। रात के दो बज गए। तब उनका नौकर दूले-दूले वहाँ पहुंचा और बोला ‘मालिक, अब घर चलिए।’ रात के दो बज रहे हैं।’ प्रोफेसर का माथा ठनका। वह बोला, ‘तो क्या मैं अपने घर में नहीं हूँ? अरे, मुझे तो इतनी देर से ही लग रहा था कि वह व्यक्ति जो मुझसे बातें किये ही जा रहा है, मेरा दिमाग खा रहा है वह जाता ही नहीं है। यदि वह जाए तो मैं सोऊँ।’ यह हमारी स्थिति है।

अपने समय का ध्यान रखिए। कहीं पर जाना हो तो समय निष्ठित कर लीजिए कि आपको वहाँ अमूक समय तक पहुंच जाना है। लेट-लेटीफी न कीजिए। देर से पहुंचने वालों का यही इम्प्रेशन पड़ता है कि वह अपने जीवन और समय के प्रति जागरूक नहीं है। आप अपने समय को ऐसा नियोजित करें कि यथासमय सब कुछ सम्पादित हो सके। यूं तो हमें विदेशियों के कार्यकलापों, खान-पान, रहन-सहन की नकल करने का बहुत शोक है, पर हमारे घर में कभी उनकी समय की पाबंदी का अनुसरण करने का ख्याल क्यों नहीं आता? वहाँ की कुछ अच्छी चीजों को भी आयात करो। अपनी अच्छी चीजों को तो हम निर्यात करते जा रहे हैं किंतु हम वहाँ की अच्छी बातों का भी आयात करें। वह अच्छी बात है उनके समय की पाबंदी।

समय की पाबंदी ग्रामस्त संसदीय, जीवन के प्रबंधन का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। इसके अतिरिक्त स्वाभाविक जीवन जीएं। जो स्वाभाविक जीवन जीते हैं, वे अधिक स्वस्थ रहते हैं और उनका घर सुध्वस्थित रहता है। छोटे-छोटे कार्य अपने आप करें, किसी पर निर्भर न रहें। आप अपना खाना खुद लेकर खा सकते हैं। घर के कार्यों में भी आप अपनी पत्नी को सहयोग दे सकते हैं। बच्चों को पढ़ाएँ, उनके साथ खेलें। भोजन किये ठुके अपने बर्तन अपने हाथ से साफ करें। हम एक दूसरे के लिए सहयोगी बन सकें, इसीलिए स्वाभाविक जीवन के साथ जोड़ें। अपना काम खुद

26

बाह! स्नित्भवी
करने से करने में विश्वास रखें। अपना हर कार्य सलीके से करें, वस्तुंगत यथास्थान रखें। कार्य नहीं करोगे तो कोई उलटाहो तो नहीं है। पर उल्टा-सीधा करोगे तो मुस्किलें झड़ी हो जाएंगी। अरे, जो चलेगा ही नहीं वह गिरेगा कैसे? जो चलेगा वह गिरेगा भी। मैं बोलूँगा तो गलती होगी। बोलूँगा ही नहीं, तो गलती क्या होगी? पर गलती करने वाला इतनी जागरूकता अवश्य रखे कि आज गलती हो गई तो क्या, कल गलती नहीं करूँगा।

अपने कार्यों को इतने सुव्यवस्थित ढंग से सम्पादित कीजिए कि वे कार्य स्वतः ही प्रार्थना बन जाएं। आपके कार्य करने का तरीका आपकी पहचान बन जाए। आने वाला कल ऐसा हो जो आपसे प्रेरणा ले सके। हर कार्य को सिस्टेमेटिक ढंग से डेवलप करें। यह में ऐसी व्यवस्था है कि आपका बच्चा सही तरीके से कार्य करना सीखे। आपकी व्यवस्था ही आपके लिए सुविधाजनक और लाभदायक होगी। अगर आप अपने कपड़े सलीके से समेटकर रखते हैं तो आपको उनमें सिलवट नहीं मिलेगी। पेन, डायरी सही जगह पर रखने तो अंधेरे में भी ढूँढ़ होंगे। अन्यथा पूरे पर में ढूँढ़ते फिरोंगे और उन्हें खोज न पाएंगे। अगर सुई भी हो तो वह भी ठीक जगह पर रखी जानी चाहिए।

दिन भर में क्या-क्या कार्य करना है, सुबह उठकर ही उसकी योजना बनाना लीजिए। जब सुबह चाहा-नाश्ता कर रहे हो तो पास में एक लेटर-पैड और पैन रख लीजिए और लिखते जाइए कि दिन भर में क्या-क्या काम करने हैं? बिना व्यवस्था के सोचे तो करने के तीन काम भी याद नहीं आएंगे, लेकिन जब लिखने वैटेंगे तो सत्रह काम लिख पाएंगे। अब यह तय कीजिए कि किन कामों को कब करना है, किन कार्यों को पहले करना है? अपनी दिनचया को व्यवस्थित क्रम प्रदान करें ताकि सभी काम सुचारू रूप से सम्पन्न हो सकें। कोई भी काम कल पर न टलें और आज का काम आज ही पूरा करें। योजनाबद्ध तरीके से काम करने वाला व्यक्ति अपने हर कार्य पूरे कर लेता है। याद रखें कि आगे के लिए कार्य ठालते रहने से वह कार्य भारभूत हो जाएगा। रात को सोने से पहले आज का जितना काम भिन्न न हो सकता है, जस्ता निपटा ले। ध्यान रखें कैसे करें स्वयं का प्रबंधन?
कि किसी काम को छोटा न समझें। हमारी छोटी सोच के कारण काम छोटे या बड़े हो जाते हैं। अच्छी सोच होने पर छोटे-से-छोटे काम को बेहतर दंग से किया जा सकता है। दूसरों पर निर्भर रहने से अच्छा है कि साफ-सफाई का काम हमें खुद ही कर लें। स्वच्छता ही स्वर्ग की जननी होती है। अर्थात्, ज्ञान भी लगाओ। इतने प्रेमपूर्ण तरीके से कि ज्ञान लगाना भी प्रार्थना बन जाए। उस वक्त यदि देवता भी वहाँ से निकल तो वे भी ठिठक जाएं कि रज का एक कण भी नहीं है, कहीं मकड़ी का जाला भी नहीं है। इतनी सफाई कि उनका भी शांति देने का मन हो जाए।

जो भक्ति ज्ञान भी सलीके से लगाता है, वह अपने जीवन के हर कार्य का समुचित प्रबंधन करने में सफल होता है। समय को, अपनी कार्यशैली को, विचारशैली को बेहतर बनाइए। उसे प्रबंधन दीजिए। एक एम.बी.ए. अपने जीवन का भी कीजिए। उसे सही मैनजरमेंट दीजिए। जिसमें जो कमी हो, उसे ठीक कर लें। अगर कमी नहीं है तो बहुत ही अच्छा है क्योंकि आप बहुत ढंग से जीते हैं। यदि सलीके की जरूरत है तो सलीका अपना लें। सलीके की बात अच्छी होती है, सलीके का वचन अच्छा होता है। हर चीज के पीछे एक प्रबंधन, एक तरक़ब, एक मनोवैज्ञानिकता, बेहतर सोच और नज़रिया जरूर होना चाहिए।

अपनी ओर से आप सभी को इतना ही प्रेमपूर्वक निवेदन है।

नमस्कार।

000

बाह! जिन्दगी
वाह ! ज़िन्दगी
आइए, प्रेम की दहलीज़ पर

“बिना प्रेम के आप मकान तो बना सकते हैं पर वह घर तब ही बनता है, जब उस मकान में प्रेम की खुशबू खिलती है।”

आ
ज की बात कबीर की पंक्तियों से शुरू कहुँगा—
पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥

हम सभी को कबीर का यह दोहा तो याद है, लेकिन सोचता हूँ कि
कबीर को न जाने किन विसंगतियों का सामना करना पड़ा होगा कि उन्होंने
इतनी कठोर बात कही। केवल पुस्तकों को पढ़कर पंडित हो जाने वाले व्यक्तियों
के लिए यह जरूरी नहीं है कि वे जीवन के भी पंडित हो। पुस्तकों को पढ़कर
पंडित होने वाले कोरे तर्क-वितर्क, वाद-विवाद और शास्त्रार्थ भर करते रहते
हैं जबकि जीवन के धरातल पर पंडित और प्रज्ञावान वह होता है जिसने अपने
जीवन में प्रेम और शांति के पवित्र पाठों को पढ़ा है।

पुस्तकों को पढ़-पढ़कर पंडित होने वालों को एक तरह से गाली ही दी
जा रही है, ‘पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ।’ यह सारा जगत किताबों को पढ़-
पढ़कर पागल हो गया है लेकिन जब तक वह अपने हृदय में उन्हें नहीं उतारेगा
तो, तब तक हृदय के अनन्त प्रेम को वह उपलब्ध नहीं हो सकेगा और उसे
आइए, प्रेम की दहलीज़ पर

२९
‘मुआ’ ही कहा जाएगा। लेकिन ‘प्रेम के ढाई अक्षरों’ को पढ़ने वाला बिरला ही होता है। मेरे देखे, प्रेम ही विश्व की सारी समस्याओं का समाधान हो सकता है। प्रेम से ही जीवन की यात्रा शुरू होती है। जन्म से लेकर मरण तक व्यक्ति केवल प्रेम को ही जीना चाहता है। माँ का वास्तव प्रेम का ही रूप है, भाई-बहिन का सन्त्र प्रेम का ही रूप है, पति-पत्नी का सम्बन्ध प्रेम का ही प्रतिरूप है। चाहे मैत्री भावना हो या करुणा का रूप हो या ईश्वर की प्रार्थना और भक्ति हो, हकीकत यही है कि व्यक्ति किसी-न-किसी प्रकार प्रेम को ही जीना चाहता है। प्रेम ही व्यक्ति का मार्ग है और प्रेम ही उसकी मंज़िल है।

धरती पर प्रेम न हो तो यहाँ चार-दिन जीना भी मुश्किल हो जाएगा। जीवन में प्रेम होने पर मनुष्य सो-सो मुसीबतों का सामना भी धैर्यपूर्वक कर लेता है। प्रेम का अपना स्वाद है, अपनी सुगंध है, और अपना आनंद है। प्रेम तो हिमालय की तरह उज्रत, सागर की भांति अथाह और आकाश के समान अन्यत है। जिस जीवन में प्रेम नहीं, वह जीवन अपाहिज के समान है और जहाँ प्रेम के गुलाब खिलते हैं, वहाँ जीवन अमृत के समान है। प्रेम वास्तव में वह तत्त्व है जिसे हर हाल में जिया जाना चाहिए।

यदि महावीर की अहिंसा को सकारात्मक अर्थ में देखें तो पाएँगे कि वह प्रेम है। राम की मर्यादा प्रेम का सकारात्मक पहलू है। कृष्ण की भक्ति का रास्ता भी प्रेम की पगड़ी से ही जाता है। व्यक्तिगत जीवन में मनुष्य को प्रेम ही माधुर्य देता है, जीवन की नीरसता को प्रेम ही भरता है। अगर जीवन में रिकात है तो वहाँ अवश्य ही प्रेम की कमी होगी। रूप से रूप और अवसादग्रस्त व्यक्ति को प्रेम के दो मीठे बोल मिल जाएं तो उसके हदय को सुकून मिलना शुरू हो जाता है। परिवार में त्याग, आत्मीयता और भाईचारा प्रेम से ही आते हैं। बिना प्रेम के आप मक़ान तो बना सकते हैं लेकिन वह घर तब ही बनता है जब उस मक़ान में प्रेम की खुशबू खिलती है। परिवार का प्राण है प्रेम। समाज की ताकत है प्रेम। धर्म की धुरी है प्रेम।

समाज में सामाजिक जीवन और सामाजिक संगठन के लिए हम सभी प्रेम की दहलीज़ पर अपने कदम बढ़ाएं। क्या आप ऐसे समाज की कल्पना

20

वाह! ज़िन्दगी
कर सकते हैं जिसमें सौ लोग हों पर उनमें किंचित्मात्र भी प्रेम न हो? उन दो भाइयों का क्या साथ रहना जिसमें वैर-विरोध का परदा पड़ चुका हो और अगर भाई अलग-अलग देशों या शहरों में रहते हों पर उनमें प्रेम है तो दूरी, दूरी नहीं लगती, वे दूरीयाँ भी करीबी का आधार बन जाती हैं। पूरा विश्व के लिए अकेला समाधान प्रेम है। रूस भारत से दूर है फिर भी दिलों के नज़दीक है और पाकिस्तान भारत से लगा हुआ है पर दूरीयाँ बहुत ज्यादा हैं। आतंकवाद, उग्रवाद, हिंसा और प्रतिहिंसा की ज्वाला को बुझाने के लिए प्रेम ही एकमात्र सीधा-सरल उपाय है।

महावीर के समय में अहिंसा ही एकमात्र समाधान थी क्योंकि तब पशुओं की बलि दी जाती थी। राम के समय में मर्यादा का मूल्य हुआ। मैं अपने समस्त संदेशों को एक ही शब्द में पिरोंवाला कि हम प्रेम के साथ अपना जीवन जीएं। प्रेम से स्वर्ग का रास्ता खुलता है। हक़ीकत तो यह है कि प्रेम के मार्ग से ही परमात्मा की झलक मिलती है। जिस प्रार्थना में प्रेम न हो वह केवल शब्द-जाल है। जिस पूजा में प्रेम न हो वह केवल चंडन का घिसना है। यदि नमाज और इबादत में प्रेम और भक्ति का समर्पण न हो वह इबादत उठक-बैठक भर है। परमात्मा के द्वार पर पहुँचने के लिए अन्ततः हर किसी व्यक्ति को प्रेम की दहलीज़ पर आना ही होगा। प्रेम ही प्रसाद है, प्रेम ही प्रणाम है और प्रेम ही आशीर्वाद है। मेरे अमृत प्रेम में प्रसाद, प्रणाम और आशीर्वाद तीनों छिपे हैं। ये सब चीजें प्रेम के ही विस्तृत रूप हैं।

जो परमात्मा की ओर अपने क्रमम बढ़ाता है, मेरे देखे वह प्रेम ही है। आखिर जब भगवान की स्तुति के लिए योगी योग करते हैं, भक्त पूजा और अर्चना करते हैं, ऋषि-मुनि उनका ध्यान धरते हुए भी सीमा नहीं पाते लेकिन वही प्रम पिता परमेश्वर लोगों के प्रेम से पूर्ण हो जाने पर स्वयं उनकी दहलीज़ पर चले आते हैं। रसखान ने कहा है—

शेष गणेश दिनेश महेश सुरेश हुं जाहि निरंतर ध्यावें।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछूद, अभेद, सुवेद बतावें।
नारद से शुक्ल व्यास रूँ, पनि हारे तउ पुनि पार न पावें।
ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरी छाँ ये नाच नचावें॥

आइए, प्रेम की वहलीज पर
जिस भगवान को पाने के लिए शेष, गणेश, महेश, दिनेश, रात-दिन
अनुष्ठान, पूजा-अर्चना करते रहते हैं, उन्हीं भगवान को अहीर की छोटी छात्रीयों,
छिड़िया भर छात्र के लिए नाचने पर मजबूर कर देती हैं। प्रेम का जादू ही ऐसा
है। उसका तो खेल है प्रेम का खेल है।

जहाँ मामला प्रेम का आ जाए उसमें केवल लैला-मजनू, हीर-रांझा की
विरह-व्यथा ही नहीं छिपी है बल्कि प्रेम में राघा-कृष्ण का आनंद भी छिपा
hुआ है। प्रेम में कृष्ण और सुदामा के सत्तू भी छिपे हैं। प्रेम में नेम और राजुल
की वैराय-कथा भी है। प्रेम के हजार रूप होते हैं और अनंत-व्यक्ति को प्रेम
की शरण में आना ही पड़ता है। बिरागी वही बना हुआ घूमता है जिसने अभी
तक प्रेम का सच्चा रस, सचे प्रेम का सुख और सच्चा आनंद नहीं चखा।

पुत्र से, पत्नी से जुड़ा हुआ प्रेम सामान्य कोटि का प्रेम है। यही प्रेम जब
माँ से जुड़ता है तो वह प्रेम का पवित्र रूप हो जाता है। माँ से हटकर जब यह
gुरू से जुड़ता है तो प्रेम का उच्च रूप प्रकट होता है। लेकिन जब यह प्रेम
परमात्मा से जुड़ता है तो वह प्रेम प्रेम नहीं रहता बल्कि वह तो किसी मीरा
के पैरों की पाजेब बन जाता है। वह प्रेम सामान्य प्रेम नहीं रहता-‘पग चुंगुचुं
बांध मीरा नाचीरे।’ तब कोई मीरा वृद्धावन की छुंज-गलियों में पांव में चुंगुचुं
बांध कर नृत्य करने लगती है उसके नाम पर! ‘मैं तो मेरे नारायण की आप ही
hो गई दासीरे। लोग बढ़े मीरा भरईं रे बावरी न्यात कहें कृलनासी रे पग चुंगुचुं
बांध मीरा नाचीरे।’ जग भले ही उसे कृलनासी कहें या समाज अपनी जाति से
उसे बाहर निकाल दे लेकिन जिसके हदय में परम पिता परमात्मा के प्रति प्रेम
की हिलोर उठ चुकी है, ऐसी मीरा दुनिया की परवाह नहीं करती। प्रेम-
दीवानी हो जाने पर तो राजुल, नेम के पथ का अनुसरण कर लेती है तो कोई
मीरा कृष्ण-कृष्ण रटे वृद्धावन की गलियों की खाक छानती फिरती है।

सौभाग्य कहाँ सहगमन कहाँ, अनुगमन कहाँ ऐसा वर दो।
जो हाथ, हाथ में नहीं दिया, वो हाथ शीश पर तो धर दो।

राजुल व्यथित हो उठती है कि यदि आपने अपना हाथ मेरे हाथ में नह।
dिया तो कम से कम माथे पर ही उसे रख दो। कौन समझेगा प्रेम की आत्मा

32

वाह! जिन्दगी
को? कौन समझेगा प्रेम की पुकार को? हर आदमी प्रेम का नाम सुनते ही पवित्र जाता है, भयभीत हो जाता है। लोगों को लगता है कि प्रेम तो समाज में निन्दा का कारण है लेकिन जान लीजिए कि जब तक हृदय में प्रेम की वीणा की झंकार नहीं होती तब तक जीवन में रिक्तता और अभाव का आलम ही बना रहता है, प्रेम ही शांति है, प्रेम ही पवित्रता और सुधार है। अतः, प्रेम से बढ़कर पुन्ना क्या? प्रेम से बढ़कर धर्म भी क्या? प्रेम ही ज्ञान है। कबीर कहते हैं जिसने प्रेम को जान लिया वही ज्ञानी है। बाकी सब तो कितने पढ़-पढ़कर पंडित हो गए हैं। जिसने प्रेम की गहराई को जीया, वही ज्ञानवान कहला सकता है। जिसकी दृष्टि प्रभुर्य है, वही धार्मिक है।

अहिंसा को भी कैसे जीोगे, प्रेम के बिना? माना कि अहिंसा के नाम पर मैंने आपको कष्ट नहीं पहुँचाया लेकिन इतने मात्र से जीवन की खुशी नहीं मिलती। चांदा न मारना अहिंसा हो सकता है लेकिन सेह से माथा चूमना अहिंसा का विस्तार और प्रेम की प्रगाढ़ता का ही परिणाम है। यह अहिंसा को जीने का आधार है। जिसने प्रेम को समझा, उसने जीवन जीने का मार्ग पा लिया। प्रेम आत्मा को पाने का, परमात्मा तक पहुँचने का मार्ग बन सकता है। प्रेम तो सम्प्रभु का, स्वं्को मिटाने का रास्ता है। प्रेम संबंध मात्र नहीं है बल्कि उससे भी ऊँचा है क्योंकि संबंधों में तो राग और विराग होता है जब कि प्रेम है परम वीराङ्ग जिसमें अपने प्रिय के लिए कुछ भी किया जा सकता है। सफी संतों से पूछो, वे बताएँगे तुम्हें कि प्रेम क्या है? प्रेम कुर्ल्नी है, प्रेम मार्ग है, प्रेम परमात्मा है।

"ऐसा हुआ कि जो उद्वच हमेशा ही ज्ञान और वैद्यक की बातें किया करता था, वह मन में सोचा करता था कि इस कृष्ण को न जाने कैसा पागलपन सवार है कि जो कहते तो है विष्णु के अक्षार लेकिन हमेशा ध्येय रहते हैं गोपियों से। अनासक्त योगी कहते वाले की यह अनासक्ति समझ में नहीं आती। एक बार उद्वच कृष्ण से बातें कर रहे थे कि अचानक कृष्ण पेट पकड़कर कहने लगे, 'उद्वच, मेरे पेट में दर्द हो रहा है। जाओ, किसी वैद्यक जो बुला लाओ।' उद्वच वैद्यक जो बुला लाए। वैद्य ने नब्ज-नाड़ी देखकर कहा, 'महाराज, आपका यह पेट का भयंकर शूल किसी साधारण औषधि से मिटने आएँ, प्रेम की वहलीज पर"
वाला नहीं है। इसके लिए आपको कोई तंत्र-मंत्र-टोटका करना होगा, तभी आप इस दर्द से छुटकारा पा सकेंगे।’ ‘टोटका? कृष्ण ने पूछा, ‘कैसा टोटका?’ वैद्यराज ने बताया कि, ‘महाराज आप की पटरी या रानियाँ अपने पाँव की धूल दे दें और उस धूल को पानी में घोलकर यदि आप पी ले तो आपके पेट का दर्द ठीक हो जाएगा।’

कृष्ण ने उद्वेग से कहा, ‘तू तो मेरा मित्र है और तू ही मुझे पेट के दर्द से बचा सकता है। जा, रनवास में जा और मेरी पटरानियों और रानियों के पाँवों की धूल ले आ।’ उद्वेग महल में जाकर सत्यभामा, रुक्मिणी आदि रानियों को कृष्ण की हकीकत सुनाता है। तेजमक्क़ली सत्यभामा एकदम आग-बबुला हो जाती है। ‘उद्वेग, तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है? हम कृष्ण की पत्नियाँ अपने पाँव की धूल अपने पति को पिलाएँ? तुम क्यों हमें पाप में धकेल रहे हो? आज तो तू (उद्वेग ने यह बात कही है, आज के बाद फिर ऐसी बात न उठाना, वरना तुझे हम सीधा कर देंगी।’

उद्वेग तो सर पर पाँव रखकर भागा और सीधा कृष्ण के पास पहुँचा और कहा ‘हे कृष्ण, तुम्हारी रानियाँ तो यह काम नहीं करने वाली हैं।’ कृष्ण ने कहा, ‘दर्द के मारे मेरा दम निकला जा रहा है, कुछ तो प्रबंध करो।’ उद्वेग बोला, ‘मैं तो आपकी सब रानियों के पास जाकर आ गया हूँ। कोई भी रानी आपके लिए पाँव की धूल देने को तैयार नहीं है।’ तब श्री कृष्ण ने कहा, ‘उद्वेग, तुम कहते हो न कि मैं गोपी-गोपिकाओं के बीच पड़ा रहता हूँ। तुम अब बूढ़दावन जाओ वहाँ शायद कोई गोपी तुम्हें अपने पाँवों की धूल दे दे।

उद्वेग मशुरा-बूढ़दावन पहुँचते हैं। उन्हें देखते ही गोपिकाएँ चारों ओर से उन्हें घेर लेती हैं और उत्सुकता से पूछती हैं, ‘हे उद्वेग, तुम हमारे कान्हा का क्या संदेश लेकर आए हो?’ ऊधी ने कहा, ‘क्या बताओँ? कहते हुए भी लाज आती है। क्या कहैं, कृष्ण ने काम ही ऐसा सींपा है कि आगर तुम लोग वह काम कर दो तो तुम्हें सातवें नरक में जाना पड़ेगा।’ गोपियाँ बोली, ‘ऊधी, तू नरक की चिता छोड़ और यह बता कि कौनसा संदेश लेकर आया है?’ तब ऊधी ने कृष्ण के पेट-दर्द की बात बताकर किसी एक गोपिका के पाँवों की
धूल मांगी और कहा, ‘यह धूल अगर पानी में घोलकर कृष्ण को पिला दी जाय तो उनका पेट दर्द जता होगा।’ गोपियों ने कहा, ‘बस इतनी सी बात! और उसे कहने में तुम इतना संकोच किया? अरे लाओ, तुम अपना अंगोखा नीचे रख दो। एक-दो गोपिका तो क्या पूरे वृद्धावन की गोपिकाएं तुम्हारे अंगोखे पर धूल छिड़कने को तैयार हैं।’ हर गोपिका ऊँची के अंगोखे पर आती चली गई और मिट्टी के कण उस पर झरते गए।

ऊँची ने कहा, ‘अरे गोपिकाओ, तुम यह क्या कर रही हो? इससे तो तुम्हें सातवें नरक में जाना पड़ेगा।’ गोपिकाओं ने कहा, ‘अपने भगवान के लिए सातवें नरक तो क्या, सात जन्म भी अगर नरक में बिताने पड़ें तब भी ये गोपिकाएं पीछे नहीं हटेंगी। भगवान ने मांगा है, यह तुम क्या जानो कि उन्होंने चरण की धूल मांगकर हम से क्या चीज मांग ली है? तुम नहीं समझते इसीलिए उन्हें ‘माखनचोर’ कहा करते हो। हकीकत यह है कि जिसके भाग्य संवारने होते हैं, उसी की दहलीज पर पहुँचकर भगवान माखन मुआया करते हैं। जिस पर भगवान की कृपा होती है वे उसी की मटकी फोड़ते हैं। तुम्हें लगता है कि वे मटकी फोड़ते हैं किन्तु नहीं, वे तो उसके पापों की मटकी फोड़ते हैं। जिस पर उनका रहम होता है, उन्हों के पापों की मटकी वे फोड़ते हैं。”

यह प्रेम का मार्ग है, केवल समझने वाले ही इसे समझ सकते हैं। सूफी संत तो प्रेम को ही अपनी सम्पूर्ण साधना का मंत्र मानते हैं। वे खुद को मज़ूर और भगवान को लैला मानते हैं। मुझे तो हीर-रंजा, लैला-मज़ूर, शीरी-फरहाद की कहानियाँ बहुत प्रतीकात्मक लगती है क्योंकि उनमें एक ओर हम, दूसरी ओर भगवान होते हैं। उसके लिए बड़ी गहन प्यास होती है कि उसे पाने के लिए भगवान खुद मज़ूर बन जाते हैं।

एक बार युनान के बादशाह ने मज़ूर से कहा, ‘तुम दिन-रात लैला-लैला पुकारता रहता है, आखिर तैर लैला में ऐसा क्या है? मेरे पास तो हजारों रूपसियाँ हैं, तुम मेरे महल में आ जाना तुम्हें लैला दे दूंगा।’ दूसरे दिन वह महल में पहुँच गया। बादशाह ने सोचा, ‘लगता है यह मेरी बातों में आ गया है। इसे लैला से कोई लेना-देना नहीं है।’ उसने कई लड़कियों को खड़ा कर दिया और कहा, ‘इनमें से जो तुझे पसंद आए, पसंद कर ले।’ मैं उससे तेरा आए, प्रेम की दहलीज पर
निकाह करवा दूंगा।’ मजरूं हरेक के पास जाता है, उन्हें गोर से देखता है और आगे बढ़ जाता है। एक से बढ़कर एक खूबसूर्त! कहते हैं लौटा बहुत सुंदर भी न थी। मजरूं ने कहा, ‘इनमें मेरी लौटा कहाँ है?’ बादशाह ने कहा, ‘यहाँ इतनी खूबसूर्त परियाँ हैं, आखिर तेरी लौटा में भूषा क्या है जो इनमें नहीं है?
‘मजरूं ने कहा, मेरी लौटा में क्या है यह आप तभी समझेंगे जब आप मजरूं की आंखों से उसे देखेंगे।

हर धार्मिक व्यक्ति सुन लेकि मेरे भगवान को तुम तभी देख पाओगे जब तुम्हारा हृदय प्रेम से पूरीत होगा, परमात्मा का प्यासा होगा।

स्वयं समझते पंख, गगन के मौन अधर की भाषा,
तृषित न केवल कंठ, नीर भी है उतना ही प्यासा।

केवल तुम ही नहीं, वह भी तुम्हें पाने के लिए प्यासा है। माती की सौंदर्य महक ही पुकार से भरी हुई नहीं है, बल्कि बादल में भरा हुआ जल भी पुकार से भरा है। ऊपर वाला नीचे आना चाहता है पर तब जब नीचे वाला अपने को ऊपर उठाने के लिए तत्पर हो।

प्रेम से जीओ भाई! प्रेम के राष्ट्र से ही जीवन सुखमय होगा। प्रेम के राष्ट्र से ही घर, परिवार और समाज सुखी होगा। प्रेम के राष्ट्र से ही परमात्मा के नू की झलक मिलेगी। तोग तो प्रेम को बहुत साधारण सी चीज समझते हैं लेकिन मैं प्रेम के आसाधारण रूप की चर्चा कर रहा हूँ।

मेरे देखे मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के दो मार्ग हैं—एक ध्यान, दूसरा प्रेम। ध्यान अपने आप के लिए है और प्रेम इस जगत के साथ जीने के लिए है। अगर आप पूर्णतः विश्वास और वैराग्यवासित हो चुके हैं तो आपके लिए परमात्मा का द्वार ही खोलता है। यदि ऐसा नहीं है तो मैं कहूँ कि आप सारे जगत के साथ प्रेम और प्यार की ढोर बोधि। ध्यान रहे कि आप प्रेम को गोपनीय न रखें। यह तो पवित्र मार्ग है। अगर इसे गोपनीय रखेंगे तो यह प्रेम की प्रवंचना हो जाएगी।

“जापान में एक ज्ञानध्यान—साधिका हुई है—‘ईशुन। वह जब विद्यालय में पन्चवीं तीस विद्वानों के साथ ध्यान करने की कला सीख रही थी तो उनमें से एक विद्वान का ईशानू से प्रेम हो गया। वह ईशानू से मिलना चाहता

36

वाह! ज़िंदगी
था इसलिए उसने एक पत्र लिखा कि, ‘ईश्वर, मैं तुमसे प्यार करता हूँ और एकांत में तुमसे मिलने का समय चाहता हूँ।’ कहते हैं कि दूसरे दिन जब ध्यान की कक्षा पूर्ण हो गई तब ईश्वर क्लास में खड़ी होकर बोली, ‘कल मेरे पास एक खट्टा आया है, जिसमें मुझसे मिलने का वक्त मांगा गया है। मैं जानना चाहती हूँ कि यह खट्टा मुझे किसने लिखा है? पूरी क्लास में सनाता छा गया, क्योंकि कोई भी लड़का खड़ा नहीं हुआ। क्लास में कोई खड़ा भी कैसे होता?

तब ईश्वर ने कहा, ‘आगर वह लड़का सचमुच मुझसे प्रेम करता है तो सबके सामने आकर वह मुझे बाहों में ले ले और अपने गले से लगाए। आगर ऐसा है तब तो वह मुझसे वाकई प्रेम करता है और यदि ऐसा नहीं करता है तो उसमें मुझसे प्रेम करने का साहस नहीं है। यह विद्यार्थी जीवन में गुलाम रहे पर जाने का मार्ग है। आगर तुम प्रेम करते हो तो छिपकर मत करो क्योंकि तब वह प्रेम पाप बन जाता है। इसी प्रेम को सार्वजनिक कर दिया जाए तो वह प्रेम पण्य बन सकता है।’

प्रेम को केवल व्यक्ति-विशेष तक ही सीमित मत करो। प्रेम तो बहुत विशाल है, ‘वसुधैव कुटुम्बक्मू’। तब प्रेम को एक दायरे में क्यों सीमित करते हो? मदर टेसैस जैसे लोग प्रेम के पवित्र रूप को जिया करते थे, जहाँ उनके लिए प्रेम का अर्थ प्रारंभिक, प्रारंभिक का अर्थ सेवा, और सेवा का अर्थ परमात्मा होता था। प्रेम का प्रारंभ तो मनुष्य से होता है लेकिन जब उसका विस्तार पत्थर, पवित्र, फूल, पौधे, प्रकृति तक होता है तब यह इमादत हो जाता है और जब उस प्रेम का जुड़ाव परमात्मा से हो जाता है तो वह भक्ति का स्वरूप बन जाता है। हम प्रेम को विस्तृत रूप दें।

‘आप सभी मेरे प्रेम के पात्र हैं। कोई भी व्यक्ति-विशेष ही मेरे लिए प्रेम का हकदार नहीं है। सभी मेरे प्रेम के पात्र हैं। जिनसे भी प्रेम करो, उन्हें निभाओ। ऐसे पंखी मत बनो जो सरोवर के किनारे जाए और अपना दाना-पानी चुपकर उड़ जाए। और, ऐसी मछली बनो जो उस सरोवर से एकाकार हो जाए। प्रेम के रिस्ते बनाने और बिगाड़ने के लिए नहीं होते। माना कि जहाँ चार बर्तन होते हैं वे कहने भी हैं लेकिन प्रेम को जीने वाला आवाज नहीं होने देता। वह तो आइए, प्रेम की वहलीज पर
वक्त आने पर त्याग कर देता है लेकिन परिवार में टूटन नहीं होने देता।

कल्पना करें ऐसे बांध की जिसमें दारा पड़ चुकी हो। आपका परिवार, आपका समाज एक बांध है। अगर उसमें दरार आ जाए तो? यह टूटन है, टकराहट है। हम अपने समाज और परिवार के बीच दारा न पड़े दे। बड़ा वह नहीं है जो आयु में बड़ा है बल्कि बड़ा वह है जो बिखडार की स्थिति आने पर त्याग कर सके। जिंदगी की चार दिन की है। इसे प्यार से जिओ, वरना जिंदगी बोझ बन जाएगी। आपके जो भी रिश्ते हैं-पति-पत्नी, भाई-बहन, पिता-पुत्र, माता-पुत्री, पुत्र-पुत्री जो भी रिश्ते हैं उन्हें प्रेम से जिओ।

रहिमन धागा प्रेम का, मंत तोड़ो छिटकाय।

टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गांठ पड़े जाय।

प्रेम का धागा बहुत महीन होता है लेकिन होता बहुत मजबूत है। फिर भी अगर वह टूट गया तो चाहे जितनी मरहम-पढ़ी करो, जुड़ तो सकता है लेकिन उसमें गांठ भी पड़ जाती है। उस समय रिश्तों में वह मजबूत नहीं रह जाती, खटास आ जाती है। मेरे लिये तो प्रेम ही चंदन है, वाल्स्केप है, प्राणम है और आशीर्वाद भी है। जहाँ प्रेम हो, वहाँ सब चीजें माफ़ होती हैं और जहाँ प्रेम न हो वहाँ थोड़ी-सी भी अमर्यादा हो जाए, तो वह भी अक्सर अपराध हो जाता है।

निभाएँ, जिससे भी आपके सम्बन्ध बने हें, उन्हें निभाएँ। संबंध बनाने आसान होते हैं पर उनको निभाना कठिन होता है। समय आने पर ही संबंधों की परख होती है। अयोध्या में जिस समय मंदिर-मस्जिद का झगड़ा चल रहा था, हम लोग ऐसे मुहूर्त में धर गए जहाँ केवल मुस्लिम बसती थी। लेकिन वे लोग जानते थे कि हमारी दृष्टि धर्म के प्रति विराट है, उदार है। उन लोगों ने हमसे कहा, 'महाराज, आप बिल्कुल भी फिक्क न करें। जब तक मुहूर्त में एक भी मुसलमान जीवित रहेगा, आप पर तनिक भी ऊंच नहीं आएगी।' हम लोग वहीं रहे। ऐसे तनावपूर्ण महात्मल में एक साधिका कमलाजी हमारे लिए आहार लेकर आई। हम चाँक गये क्योंकि कफ्फ़ू लगा हुआ था। किसी को बाहर दिखते ही गोली मारने के आदेश थे। हमने पूछा, 'वे यहाँ तक कैसे
पहुँचीं? उन्होंने बताया कि वे पुलिस को यह बताकर आई है कि उनके भाई अस्पताल में हैं और उन्हें खाना पहुँचाना है।

कमला जी ने हमें आहार दिया। बीच-बीच में अपनी कमर भी दबा रही थीं। मैंने पूछा, ‘क्या हुआ?’ कहने लगी, ‘कुछ नहीं। बार-बार पूछने पर बताया कि रास्ते में पुलिस ने पांच-सात बेंत मारे थे। मेरा हृदय सजल हो उठा। उस महिला ने सेवा के नाम पर दंड भी झेल लिया था। इसे कहते हैं सच्चा प्रेम, सच्ची श्रद्धा।

आप अपने प्रेम को विराट रूप दीजिए। सबको सम्मान दीजिए। अपने कर्मचारियों का भी सम्मान करें। आपकी पत्नी भी उतनी ही सम्मान की पात्र है जितने कि आप उसके द्वारा। अगर आप किसी बालिके में हो रहा है फूल को भी सम्मान व प्यार से निहारें। कुदरत के इस नायाब तोहफ़े को भी आप सम्मानित दृष्टि से देखें। अपने जीवन से हिंसा का बहिष्कार करें। मन, वचन और कार्य से हिंसा न करें। स्पर्श रखें कि आप किसी के गाय पर चांटा नहीं मारेंगे, न ही कट्टु वाणी का प्रयोग करेंगे। न आप किसी के दिल को चोट पहुँचाएं और न ही किसी के प्रति दुर्विचार रखकर उसके आभासांक्त को दूषित करें।

हिंसा नहीं, अहिंसा हो। प्रेम को जीने के लिए कभी किसी की हिंसा न हो। हिंसा के द्वार-दरवाजे भूल चुके हैं। अब आप उन पर प्रेम का ताला डाल दीजिए ताकि प्रेम के द्वार खुल जाएं। जब हमें सुई भे जाती है तो कितनी पीड़ा होती है। जरा सोचिए, उन पशुओं के बारे में जिनकी गर्दन रेत दी जाती है, तथा लोग किसी पशु को तीर मार कर जमीन पर गिरा देते हैं। मानव इन निरीह पशु-पक्षियों की मूक वेदना को समझने में क्यों असमर्थ है? अरे, पक्षियों को मार-गिराने के बजाय उनकी उन्मुक्त उड़ान का आंदोलन। मछलियों को पानी से बाहर निकालकर तड़ागने के बजाय उनके तौर पर की खुशी में शामिल हो जाओ। किसी तिलकी की चटनी बनाने की बजाय उसके खूबसूरत रंगीन पंखों का सौंदर्य आत्मसात करो। किसी अंडे को फोड़ने के बजाय, उसमें से निकलने वाले जीवन को अभय जीवन प्रदान करो। वक्त आने पर भूखों को अपना हिंसा भी जरूर प्रदान करते ही।

आइए, प्रेम की दहलीज पर
आप परिवार में भी सहभागिता निभाएं। आप चार बहुत हैं तो ऐसा न करें कि आज एक ने काम किया, कल दूसरी ने, परस्परी तीसरी और फिर चौथी ने। न-न, ऐसा न करें। सब साथ मिलकर काम करें ताकि एक पर बोझा न पड़े। अब तो लोग पैसे का बंटवारा कर लेते हैं और महिलाएं काम का बंटवारा कर लेती हैं। सभी अपनी सहभागिता निभाएं। साथ में काम करने से हर कार्य हल्का हो जाएगा। प्रेम को जीने के लिए वक्त-बेवक्त दूसरों के काम भी आये। बेवक्त में जो काम आता है, वही हमारा अपना होता है। प्रेम की कसौटी इसी बात में है कि बेवक्त में व्यक्ति दूसरों के काम आए। जब हमारे घर में खुशियाँ होती हैं तब तो सभी अपने हैं लेकिन जब फाकाफकी का आलम हो तो जो साथ निभाए, वही हमारा अपना है। बाकी सब तो सपना है।

"अपनी बात समाप्त करें उससे पूर्व अतीत की एक घटना का जिक्र करेंगा। घटना यह है कि एक संत आहारचर्चा के लिए निकले। धूप में चलते-चलते थक गए तो विश्राम करने के लिए एक चौथी पर बैठ गए। वह घर किसी वेश्या (गणिका) का था। गणिका ने ऊपर से झाँका तो देखा कि जो व्यक्ति चौथी पर विराजमान है, उसका मुख चमक रहा है और वह बहुत सम्भव और सीम्य लग रहा है। वह उतर कर नीचे आई और संत से अनुरोध किया, ‘आप बाहर क्यों बैठे हैं? भीतर आ जाइए।’ चौथी संत थका हुआ था अतः वह घर के भीतर आ गया। गणिका ने पुनः अनुरोध किया कि, ‘आप भोजन कर लें।’ संत तो आहार-चर्चा के लिए ही निकला था तो आहार भी कर लिया। गणिका ने कहा, ‘महाराज, आप धूप में कहाँ जाएंगे? यहाँ आराम कर लीजिए।’ संत वहीं ठहर गया और उसने आराम कर लिया। लेकिन ही उसे नींद आ गई।

गणिका उसके रूप पर, उसके तेज पर इतनी अधिक मोहित हो गई कि उसने संकल्प कर लिया कि इसी व्यक्ति को वह अपना पति और प्रेमी बनाएगी। संध्या-समय जब संत रवाना होने को हुआ तब गणिका ने अपने मन की बात और अपने सारे भाव व्यक्त कर दिए और कहा, ‘अब मैं आपके बिना जीवित नहीं रह सकती। मैं आपके लिए ही जीवित और आपके लिए ही महँगी।’ संत ने कहा, ‘जब तुम्हें अपने आपको मुझे समर्पित कर दिया है तो मैं भी तुम्हें स्वीकार करता हूँ लेकिन आज नहीं। मैं तुम्हें तब स्वीकार करेंगा जब मेरे बाह! ज़िन्दगी
अलावा तुम्हारा कोई न होगा।' यह कहते हुए संत वहाँ से निकल गया।
गणिका ने अपने घर के दरबारे औरों के लिए बंद कर दिये क्योंकि संत ने कहा था कि जब तुम्हारा कोई न होगा तब मैं तुम्हारा बनूँगा। प्राकृतिक रोज आते, पर कोई भी गणिका के पास न पहुँच पाता। गणिका फहरे से ही देह-व्यापार करती रही थी सो उसे संक्रामक रोग हो गया। वह कोड से पीड़ित हो गई।

gणिका की देह गलने लगी। उसके शरीर से दुर्ग्ध उठने लगी। खून, मवाद, पानी उसके शरीर से रिसने लगा। राजा तक यह खबर पहुँची तो राजा ने उसे नगर से निकलवा दिया। अकेली, नगर के बाहर बृक्ष के नीचे बैठी हुई भगवान से प्रार्थना करने लगी, 'भगवन, तू किसी को चाहे जैसा जन्म देना पर किसी को तू मेरे जैसी नारी मत बनाना। मैं अपनी जिंदगी में केवल पाप ही बटोरे हैं और उन पापों का जो परिणाम आज मुझे भुगतने को मिल रहा है, वह किसी को न देना। हे प्रभु, मैं तो एक गुरुब घर में पैदा हुई थी और मुझे अपनी रोजी-रोटी के लिए शरीर को बेचना पड़ा था, लेकिन वे लोग जो मेरे यहाँ आए थे, वे कौन से मज़बूर थे? ' वह रोती जाती थी और भगवान से प्रार्थना करती जाती थी।

तभी उस अंधियारी रात में उसने पाया कि किसी व्यक्ति ने उसके कंधे पर हाथ रखा है। वह चौंकी, ऊपर देखा तो पाया कि वह व्यक्ति वही संत है।
गणिका फूट-फूट कर रोने लगी और कहती रही, 'मेरे प्रभु, इतने वर्षों तक मैं तुम्हारी प्रतीक्षा ही प्रतीक्षा की, पर तुम न आए। अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं बचा है जो मैं तुम्हें दे सकूँ। मेरे शरीर से खून मवाद, पीप, पानी रिस रहा है। अब मैं तुम्हें कुछ भी देने में समर्थ नहीं हूँ। संत ने कहा, 'मैंने कहा था न, जब कोई तुम्हारा न होगा तब मैं तुम्हारा बनूँगा। आज तुम अपनी काया मुझे सौंप दो ताकि मैं उसे ठीक कर सकूँ।' इतना कहकर संत ने उस गणिका के घाबों को धौला, अपने संत-जीवन की पवित्र चदरिया से मवाद और खून को पीछा।
संत की पवित्रता और अर्जित पुष्पों के प्रभाव से, मात्र चदरिया से उसको पीछने से उसके घाब ठीक होने लगे। एक माह की सेवा करने से वह गणिका पूरी तरह स्वस्थ हो गई। कल तक की गणिका को संत ने जीवन के ऐसे संदेश

आदेश, प्रेम की दहलीज पर ४१
दिए कि एक माह बाद वह गणिका श्राविका बन गई।

संत उस श्राविका को लेकर भगवान के पास पहुँचा और कहा, ‘भंते, मैं लगातार जिस साधना में रत रहा, आज उस साधना का पुण्य पीड़ित महिला के बेवकूफ काम आया। यह कभी गणिका थी लेकिन अब वह श्राविका बन चुकी है। यह पवित्र भावों से भर चुकी है, भंते, आप इस महिला पर कृपा करें और इसे संयम से प्रदान करें, इसकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करें।’’

गणिका साध्वी बन गई। इसे कहते हैं प्रेम के पवित्र मार्ग को जीना। प्रेम को समझकर ही जीवन को समझा जा सकता है। प्रेम को जी कर ही जीवन के परम को जिया जा सकता है। प्रेम का रास्ता ही जीवन में मेघदूत का अमर काव्य रचना है और सीता वनवास के कष्ठ को स्वीकार कर लेती है। सोचिए, अगर धरती पर प्रेम न होता तो क्या सीता, सीता होती? क्या गीता, गीता लगती? सच्चता, प्रेम ही वह दोर है जिस पर बादल भी झूमते हैं और बिजलियाँ भी नाचती हैं।

चाहे यह बसे जेठ अंगारे,
या पतझड़ हर फूल उतारे।
अगर हवा में प्यार घुला है,
हर मौसम सुख का मौसम है ॥

कितनी भी कमबख्त रात हो,
दीपक सुबह बुला लाता है।
एक कली की आंगड़ाई से
सारा बाग महक जाता है ॥

कंकड़-काँटीं भरी डगर हो,
या प्याले में भरा जहर हो।
पीड़ा जिसकी पटरानी है,
उसको हर मुश्किल मरहम है ॥

भीतर से रंग जाय न जब तक

४२

वाह! जिन्दगी
आवारा मिर्दू की चौली।
पिचकारी है तब तक गाली
होली है वेशार्म ठिठोली।
काबा जाओ, काशी जाओ,
गंगा में डूबकियाँ लगाओ।
दिल का देवालय गंदा है तो
फंदा सारा धरम-करम है।

रंग-रोगन कर देने भर से
नया न होता भवन पुराना।
सिर्फ़ गृंधी का मज़ाक है
साड़ी में पैदन्द लगाना।
गली-गली में दिया जलाओ,
बंजर-बंजर फसल लगाओ,
नफरत जब तक राज कर रही
सब का सब सरगम मातम है।

जिसके पास शब्द हैं जितने
उतना उससे अर्थ दूर है।
पर घृंघट का नहीं, रूप तो
आत्मा का जलता कपूर है।
नारों से मत अधिक पुकारो।
साड़ी कुत्ते ही न साँवारो,
उसको दो आवाज कि जिसका
दर्द दिया, आँसू शबन्म है।

दुनिया क्या है, एक बहम है,
शबनम में मोती होने का,
और ज़िन्दगानी है जैसे
पीतल पर पानी सोने का।

आइए, प्रेम की दहलीज पर
किन्तु प्यार यदि साथ सफर में
तो सचमुच इस मृत्यु-नगर में
शाम सुबह की एक कसम है।
मरण मनुज का नया जनम है।
अगर हवा में प्यार घुला है,
हर मौसम सुख का मौसम है।
मरण मनुज का नया जनम है।

प्रेम की दुनिया में मृत्यु, मृत्यु नहीं है बल्कि मरण भी एक नया जन्म है।
हवा में प्रेम हो, तो हवा, हवा नहीं, सुख और आनंद देने वाला मौसम है। प्रेम
की शक्ति ह्युडय में हो, तो मुखिल भी मरहम और आंसू शबनम बन जाते हैं।
मन में अगर नफुत है तो जीवन का कोई भी सरगम भयंकर मातम ही बन
जाता है।

हम आए प्रेम की दहलीज़ पर। सबको अपने प्रेम का पत्र बनाएँ, सबके
प्रेम के पत्र बनें। जीवन को जीएँ प्रेम से। सचमुच, जीवन जीने का रंग ही
अनेका हो जाएगा। जीवन की पिंकता और निराशाएँ स्वतः मिट जाएँगी। जीवन
प्रभु का प्रसाद और पुरस्कार हो जाएगा।
अपनी ओर से सबके लिए अमृत प्रेम समर्पित है।

०००
वाह ! जिन्दगी

बेहतर जीवन का बेहतर नज़रिया

"अच्छा नज़रिया जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। अगर आपके पास यह पूंजी है तो निर्धारित ही आप पूंजीपति हैं।"

अपने जीवन में किसी भी सफलता को अर्जित करने के लिए पाँच बुनियादी बातें हैं—

1. सकारात्मक सोच (Positive thinking)
2. बेहतर नज़रिया (Positive attitude)
3. आत्म-विश्वास (Self-confidence)
4. कार्य-योजना (Work-Planning)
5. कठिन परिश्रम (Hard Working)

ये पाँच बातें सफलता के शिक्षा की छुट्टी के लिए आधारभूत मापदंड हैं। कामयाबी पाने के लिए इन पाँच बातों को मूल महामंत्र की तरह स्वीकार करें।

स्वस्थ और सकारात्मक सोच स्वस्थ शरीर, प्रसन्न मन और मधुर जीवन जीने का मूलमंत्र है। यह मंत्र आज तक निष्कासित नहीं हुआ है। मेरी शांति, संतुष्टि और तृप्ति का राज्य मेरी सकारात्मक सोच ही है। सकारात्मक सोच ही जीवन का सबसे बड़ा पुणीत धर्म है और नकारात्मक सोच ही जीवन का सबसे बेहतर जीवन का बेहतर नज़रिया
बड़ा विचार है। सकारात्मक सोच से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है और नकारात्मक सोच से बढ़कर कोई पाप नहीं है। जिस व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक सोच का मंत्र लगातार गुरुजित रहता है, उसके साथ हमेशा स्वर्ग का सुख बना रहता है। सकारात्मक सोच और बेहतर नज़रिया जिसने भी अपना लिया, वह हर हाल में सत्य और शांति का अनुयायी बना रहता है।

सकारात्मक सोच और बेहतर नज़रिया एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सकारात्मक सोच विपरीत वातावरण में भी अपने अन्तर्मन की शांति और सौभाग्या बनाए रखने के लिए आगर है। बेहतर नज़रिया संसार के अच्छे और बुरे-दोनों ही हालात में अच्छाई को तलाशने के लिए कारगर होता है। आत्म-विश्वास जीवन की दहलीज पर अपनी इच्छा-शक्ति और संकल्प-शक्ति को प्रगाढ़ करने के लिए अचूक साधन है। कार्य-योजना किसी भी सफलता की नींव है और कठिन परिश्रम के बल पर तक्ष्य और तदबीच दोनों को एक ही मंच पर खड़ा किया जा सकता है।

जिस मकान की नींव जितनी मजबूत होगी, उस नींव पर उतनी ही मजबूत और खुबसूरत इमारत को खड़ा किया जा सकता है। दुनिया का एक मशहूर टॉवर है -- कैलगरी टॉवर जो कि १९० फुट ऊंचा है। इसका कुल वज़न ग्यारह हज़ार टन है और आस्थिर्य यह है कि इस भवन का साठ प्रतिशत भाग ज़मीन में है और चालीस प्रतिशत भाग बाहर है। वृक्ष जितना आकाश की ओर बढ़ता है, उससे कहीं अधिक उसकी जड़ें ज़मीन के भीतर जाकर वृक्ष को मजबूत आधार प्रदान करती हैं। जिसने अपने जीवन में सकारात्मक सोच और बेहतर नज़रिया अपना कर जीवन को मजबूती प्रदान की है, वह हर हाल में स्वयं को सफल और सार्थक बनाने में सफल हो जाता है। यही कारण है कि मैं सदा प्रत्येक व्यक्ति के लिए सकारात्मक सोच और बेहतर नज़रिये के जीवन में पहला स्थान प्रदान करता हूं। इन्हीं से जीवन में शांति, सफलता और मिठास का आनंद उपलब्ध होता है।

सकारात्मक सोच यदि नीला आकाश है तो बेहतर नज़रिया उस आकाश में उगने वाला सूरज है। जिसने सकारात्मक सोच को अपनाया और बेहतर
नज़रिये की कला हासिल कर ली, उसने धरती पर देवता 'पा लिया। सकारात्मक नज़रिया तो जीवन की एक अनोखी पूजा है। सकारात्मक नज़रिया ही जीवन को सकारात्मक और सार्थक परिणाम दे पाएगा। जीवन को बाँस बनाना है या बाँसुरी, सब कुछ जीवन के प्रति रहने वाले नज़रिये पर ही आधारित है। बाँस का उपयोग लोग केवल अंतिम संस्कार के समय करते हैं जबकि जीवन अंतिम संस्कार के लिए नहीं है। जीवन को बाँसुरी का रूप दीजिए और उसके बेहतर परिणाम निकालिए। सवाल न हानि का है, न लाभ का। सवाल है दोनों स्थितियों के प्रति रहने वाले नकारात्मक और सकारात्मक नज़रिये का। नकारात्मक नज़रिये के लोग जहाँ लाभ में खुशियों का आनंद नहीं लें पाएँगे, वही सकारात्मक नज़रिये के लोग हानि में भी अपनी मन की स्थिति को ठीक रख लेंगे। वे अपनी गुलामी को सुधारने की सोचेंगे और वापस उत्साह और ऊर्जा के साथ काम में लग जाएँगे।

हम अगर एक बार यह फैसला कर ले कि मैं जीवन के प्रति हर हालत में सकारात्मक रहूँगा, तो हमारा यह फैसला ही हम्मी जीवन के प्रति उत्साह-भाव से भर देगा। आखिर सब कुछ फैसले पर ही तो निर्भर है। अगर मेरा यह फैसला है कि मैं हर हाल में खुश रहूँगा, तो निश्चित ही खुश ही रहूँगा। मैं मानता हूँ कि कोई हमें गाली दे सकता है, हमारे साथ बदलमौजी कर सकता है, पर अगर हमारा फैसला खुशी का है, तो हम गाली पर ध्यान नहीं देंगे।

कहते हैं : एक एस. पी. पर किसी ने गुस्से में थूक दिया। हैड कांस्टेबल ने यह देखते ही रिवाल्वर निकाल लिया। वह थूकने वाले पर गोली चलाए, उससे पहले ही एस. पी. ने उसे रोक दिया और रिवाल्वर वापस पर से डालने का संकेत किया। एस. पी. ने रुमाल निकाल और थूक पौछकर रुमाल फेक दिया। लोग यह देखकर विस्मित हो उठे। एस. पी. ने कहा, ‘जो काम रुमाल से निपट सकता है, उसके लिए रिवाल्वर निकालने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह है सकारात्मक दृष्टिकोण।

मैं शांत और प्रसन्न रहूँगा—आपके इस फैसले के कारण ही आप ऐसा व्यवहार कर सकेंगे। अच्छा नज़रिया तो किसी जादुई छड़ी की तरह है जिसका
आप अपने व्यावहारिक जीवन में उपयोग करते रहिए और उसके चमत्कार देखते रहिए। सफलता की बुनियाद है सकारात्मक नज़रिया। सार्थकता की नींव है सकारात्मक नज़रिया। समृद्धि की कुंजी है सकारात्मक नज़रिया। सुख-शांति की आत्मा है सकारात्मक नज़रिया। स्वर्ग और आनन्द का रास्ता है सकारात्मक नज़रिया। नज़रिये की कला को ठीक से न अपनाने के कारण ही परिवारों में दरारे पड़ती है, समाजों के तुकड़े हो जाते हैं, धर्म और पंथ आपस में टकराते हैं, देश के विभाजन हो जाते हैं। सत्य तो सारी दुनिया का एक ही है, ईश्वर तो सारे जहाँ का एक ही है, उस तक पहुँचने के रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं। जो लोग सत्य को महत्व देते हैं, वे पंथों के दुराग्रह में नहीं उलझते। जो पंथों को महत्व देते हैं वे सत्य के सूरज से वंचित रह जाते हैं।

आज प्रतिभाओं की लड़ाइयों ज्यादा हैं, सत्य की लड़ाई कम है। सूरज को अगर कटोरों में पानी भरकर देखा जाए तो सूरज के अनेक प्रतिभिम्ब नज़र आएंगे। अगर पाँच कटोरों में पानी है तो सूरज के बारे में प्रतिभिम्ब बन जाएंगे लेकिन पाँच प्रतिभिम्ब होने से सूरज कभी भी पाँच सिंभ में नहीं बैंट सकता। दीयों में फर्क होने से ज्योति में कोई फर्क नहीं हुआ करता। जो लोग दीयों को लेकर अपने-अपने पंथ के दुराग्रह पाल लेते हैं, वे धर्म के वास्तविक मूल्य, वास्तविक सत्य और वास्तविक परिणामों से वंचित रह जाते हैं। बेहतर नज़रिये का अर्थ ही यही हुआ कि व्यक्ति के सामने पाँच कटोरों में सूरज का प्रतिभिम्ब दिखाई देता है लेकिन फिर भी वह जानता है कि बिज्ञ और प्रतिभिम्ब में क्या भेद है? कटोरे सूर्य-चन्द्र को जानने के माध्यम तो हो सकते हैं, पर सम्पूर्ण सूर्य या चंद्र नहीं हो सकते।

घटिया नज़रिये के कारण ही परिवार और समाज में ढंग होता है। छोटी सोच छोटे नज़रिये का कारण है। हीन और शुद्ध दृष्टि का परिणाम है यह। जो भाई-भाई आपस में लड़ते हैं, यह उनकी घटिया सोच और घटिया नज़रिये का परिणाम है। समाज में जो तुकड़े हो जाते हैं, उनके लिए या तो उनका मार्गदर्शन करनेवाला छोटी सोच का आदमी है या फिर उनका अनुसरण करनेवाला हल्के नज़रिये का मालिक है। संतुष्ट समाज को तोड़ते नहीं हैं।

वाह! ज़िन्दगी
और जो संत समाज को ठोंड डाले, वे संत नहीं, असंत हैं। धर्म का पहला उद्देश्य ही दूरे हुए दिलों को आपस में जोड़ना है और धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाले संत अगर समाज के मध्य खड़े होकर समाज को प्रेम का चिराग नहीं दे पाते हैं तो मैं कहूँगा कि वे अपना नज़रिया दुस्स्त करें।

समाज के मध्य खड़े होकर समाज का मार्गदर्शन करने से पहले व्यक्ति का दृष्टिकोण साफ-सुभरा, सौहार्दपूर्ण होना ज़रूरी है।

मैंने देखा कि एक नगर में जहां एक परम्परा के अनुयायियों में विभाजन हुआ, एक समुदाय अलग, दूसरा समुदाय अलग। दोनों एक ही आचार्य के शिष्य थे मगर हमें उस नगर में यह देखकर आँख खोल नहीं देते, बल्कि वे दरवाजे तक बंद कर लेते। और, जिस गृहस्थ की देहलीज़ पर अतिथि के पहुँचने मात्र से वह गृहस्थ धन्य हो जाता है वही अगर कोई संत पहुँच जाए और तुम उसके लिए दरवाजे बंद कर लो तो मैं कहना चाहूँगा कि यह हमारी बदक़समती है। यह हमारा घटिया नज़रिया है। अच्छा नज़रिया होने पर तो हम अपने दुष्मन के आत्मवाद-रत्नक लेने बहुत अच्छा होता है।

नज़र-नज़र का ही फर्क है। अगर कोई बड़ई बगीचे में पहुँचे तो पेड़ की लकड़ी की ब्लॉकिनी को ही देखेंगा। आनंदमय शान्ति के भाव लेते हुए उस बगीचा में पहुँचे वाला व्यक्ति कोई-न-कोई कांटा ही ढूँढता फिरेगा। जबकि प्रेम की सौगात अपने हद में भरकर रखने वाला व्यक्ति वहाँ के गुलाबों से मिलना चाहेगा। वह सुवास और सीन्द्रिय का आनन्द लेगा।

एक चर्चित उदाहरण है। एक गिलास में आधा पानी भरा है और आधी गिलास खाली है। एक व्यक्ति कहेगा 'आधा गिलास खाली है', दूसरा कहता है 'आधा गिलास भरा है'। गिलास तो आधा ही रहता है। एक कहता है, 'क्या दूध पिलाया? आधा गिलास दूध पिलाया था। आधा गिलास दूध देकर उसने हमें बेज्जत कर दिया।' दूसरा कहता है, 'अरे वाह! वह कितना भला मानुष है जिसने हमें दूध पिलाया। हालांकि मैं तो दूध पीने का आदी नहीं था।

बेहतर जीवन का बेहतर नज़रिया 89
उसने अच्छा किया जो पहले ही दूध धोड़ा कम कर दिया, नहीं तो दूध कम करने की तकतिफ और उठानी पड़ती।

आधे खाली गिलास पर जोर देना नकारात्मकता है, वहीं आधे भरे गिलास पर गौर करना जीवन की सकारात्मकता है।

जीवन के हर पहलू के प्रति बैसा ही रखेगा अपनाएँ जैसा कि आधा गिलास के प्रति अपनाते हैं। यदि खालीपन पर गौर करने रहेगे, तो ध्यान रखिए दुनिया में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है कि जिसमें कमी न हो। यदि भरेपन पर गौर करने तो दुनिया में ऐसा कोई आदमी, प्राणी या कसूर नहीं है जिसमें कोई-न-कोई विशेषता न हो। अपने नज़रिए को ठीक कीजिए, सदा पोज़ेटीव रखिए, आप हर कदम पर ज्ञान में रहेंगे।

सास अगर बहू को किसी कारणवश डाँट देती है तो बहू यह न सोचे कि मेरी गृहता पर तो सास ने डाँट दिया मगर यही गृहता उससे हो जाती तो उन्हें कौन डाँटता? बल्कि वह यह सोचे कि सास तो घर की बड़ी महिला है उन्होंने यदि डाँट भी दिया तो क्या हुआ! अगर वे न कहेगी तो और कौन कहेगा? नज़रिए में होने वाला यह सकारात्मक बैताव आपके चित की तथा अनतरापण की स्थिति को ठीक करने में सफल हो जाएगा। घटिया नज़रिए रखने पर पति के घर में आते ही सिर फुटवॉल शुरू हो जाएगी और छः महिने बाद एक ही पिता का रहने वाला खुद, पाँच भाइयों का एक ही खून तब पिता के सामने ही बॉंट जाएगा। कोई कहाँ रहेगा और दूसरा कहाँ और!

बुजुर्गों को घर के लिए भारतूँ न समझो। बुजुर्गों तो वे रोशनदान होते हैं जो हर हालत में घर की व्यवस्थाओं और मर्यादाओं का हृदयाल रखते हैं। वे तो घर-आँगन में लगे उस पेड़ की तरह होते हैं जो फल न भी दे, तब भी खाया तो अवश्य देते हैं। उनकी बात का बुरा न मानें। वे जैसे भी हैं, उन्हें निभाने का गौरव अवश्य लीजिए। उनकी दुआएँ आपकी सात पीढ़ी के काम आएँ।

छोटों से अगर गळती हो जाए तो उन पर इतनी जलदी तैश न खायें। बच्चे हैं, बच्चियों से गळती नहीं होगी तो भला किससे होगी? बच्चे तो गळतियाँ करते ही रहते हैं। बड़े डाँट दे तो लघुता रखो और छोटों से गळती हो जाए तो

वाह! जिन्दगी
बड़पन रखो। पहले जन्म लेने से कोई बड़ा और बाद में जन्म लेने से कोई छोटा नहीं होता। जो छोटी नज़र रखता है, वह छोटा होता है और जो बड़ा नज़रिया रखता है, वही बड़ा होता है। यह तो नज़रिये का फर्क है कि कौन व्यक्ति किस बात को किस एंग्ल से लेता है? अपनी मानसिकता को, अपने नज़रिये को यदि आप हर हाल में श्रेष्ठ, हर हाल में पोजेशन बनाकर रखते हैं, तो आप सामान्य से सामान्य काम के भी असामान्य और ऊँचे परिणाम पा सकते हैं। इस तरह का ऊँचा नज़रिया होना क्या अपने आपमें जीवन की सबसे बड़ी पूंजी नहीं है?

ऐसा हुआ एक बार में किसी निर्माणाधीन भवन के पास से गुजर रहा था। मैंने धूम ही वहाँ के लोगों से बातचीत शुरू कर दी। मैंने देखा कि एक व्यक्ति मिट्टी खोद रहा था। मैंने उससे पूछा, ‘कहो भाई, क्या कर रहे हो?’ वह बोला, ‘क्या करूँ साब, भाग फूटे हैं, मिट्टी खोद रहे हैं और जैसे-जैसे दाल-रोटी की व्यक्ता कर रहे हैं।’ वहीं दूसरे आदमी से आगे बढ़कर पूछा, ‘कहो भाईजान, क्या कर रहे हो?’ वह बोला, ‘साब, मकान बन रहा है, उसकी चारदीवारी बना रहा हूँ।’ दो कदम आगे बढ़कर एक और से पूछा, ‘भाई, यहाँ क्या बन रहा है?’ ‘एक खुबसूरत इमारत बना रहे हैं।’ उसने ज़वाब दिया।

क्या आप समझ सकते हैं कि एक ही मकान के बाहर काम करने वाले तीन किस्म के लोग हैं? जिसका जैसा नज़रिया और स्तर, उसके जीवन में वैसा ही परिणाम। जो अपने को भाग-पूटा समझ रहा है वह जिंदगी भर मज़बूरी करके ही पेट भरेगा। जो सोचता है कि ईट-चूँचा सजा रहा हूँ, वह कारीगर ही बना रहेगा। जिसकी नज़र में वह उदात्त भाव है कि वह एक खुबसूरत इमारत बना रहा है, निश्चित ही वह इंजीनियर, आर्किटेक्ट या खुबसूरत कल्पनाओं का अदाकार रहा होगा। जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि।

मेरे देखे, बेहतर नज़रिया जीवन के हर क्षेत्र का मूलमंत्र है। अपनी दृष्टि को, अपने नज़रिये को सकारात्मक बनाया जाए। बिना बेहतर नज़रिये के तुम अच्छे बेहतर जीवन का बेहतर नज़रिया ५८
माँ-बाप का आपको नज़र में रखने के कोई गुरु अच्छा गुरु नहीं हो सकता। अगर नज़रिया ठीक नहीं है तो कोई भी दुकानदार ठीक से दुकान नहीं चला पाएगा। नज़रिया ठीक न होने पर कोई भी कर्मचारी ठीक से काम नहीं करेगा। बेहतर नज़रिया रखने-वाला व्यक्ति कर्मयोग करता है, मेहनत करता है इस भाव के साथ कि कर्म करना मेरा कार्य है और फल देना परमात्मा का अधिकार है। बेहतर नज़रिया रखने वाला दुकानदार अपने ग्राहकों से बहुत तमीज से बात करता है। अपने कर्मचारी को भी बेहतर नज़रिया अपनाने के लिए सिखाएं तो उनका आपके प्रति व्यवहार, उनका रहन-सहन, रीति-रीताज्ज, तौर-तरीके बदल जाएंगे।

शुरुआत स्वयं से करें। दूसरों को बदलने से पहले खुद को बदलें। खुद को बदले बगैर दूसरों को बदला भी नहीं जा सकता। आप अपने पिता को नहीं बदल सकते। अपनी पत्नी और भाई को भी नहीं बदल सकते। यहाँ तक कि अपनी बहनें और भाईं को भी नहीं बदल पाते। कोई और बदले या न बदले, आप अपने आपको बदल लें। आपकी नज़रिया बदला कि दुनिया बदली। एक पति-पत्नी के बीच झगड़ा होता था। उसने खुद को बदला की, सुधारने की बहुत कोशिश की, पर वह सफल न हो पाया। एक दिन उसने इस बिन्दु पर सोचा। उसने अन्ततः खुद को बदल लेने का संकल्प कर लिया। बास, बात बन गई। झगड़े खत्म हो गए। तुमने अपने आपको सुधार लिया, अपने आपको बदल लिया, तो पत्नी तो अपने आप ही बदल गई। बेहतर जीवन के लिए नज़रिये का बेहतर होना बहुत ज़रूरी है और बेहतर नज़रिये के लिए खुद को ही बदलने का, सुधारने का संकल्प लेना पहली आवश्यकता है।

जीवन को बदलने के लिए एक ही गुणमंत्र की जरूरत है: बेहतर नज़रिया, सकारात्मक और सार्थक नज़रिया।

बेहतर नज़रिये का पहला लाभ यह होता है: हमारी कार्य-क्षमता में वृद्धि होती है। दूसरा लाभ होता है: मिल-जुलकर काम करने की उत्सुकता हमारे भीतर पनपने लगती है। तीसरा लाभ: हमारे रिश्तों में मधुरता आने लगती है। चौथा लाभ: तनाव से बचने का मौका मिलता है। पाँचवा लाभ: 

वाह! ज्ञिनभी
यक्ष्मित्व निर्माण में मद्द मिलती है। छठा लाभ: हमारा कैरियर अपने आप अच्छा बनने लगता है। सातवीं लाभ: अच्छे नज़रिये वालों की भाषा भी शालीन, मधुर और विनम्र हुआ करती है। वहीं अगर नज़रिया छोटा है, हीन है तो पहला नुकसान यह है के व्यक्ति निराशा, तनाव, अवसाद और घुटन में जीता है। दूसरा नुकसान यह है कि उसके भीतर कार्य करने की उत्सुकता, उर्जा और उमग नहीं रहती। वह हमेशा छोटी-छोटी बातें सोचता रहता है। वह यह नहीं सोचता कि दूध शुद्ध दूं, बल्कि वह यह सोचता है कि दूध में पानी कैसे मिलाउँ। जब यह नज़रिया वाला सोचता है कि मिर्ची में दूसरा पाउडर कैसे मिलाउँ, चाय की पत्ती में लकड़ी का क्रियावन रंग मिलाकर कैसे घोटूँ? नज़रिया हलका है, छोटा है, छोटा है, छोटा है, घटिया है इसलिए व्यक्ति के सारे कार्यकलाप भी घटिया स्तर के होते हैं। तीसरी हानि यह है कि वह लक्ष्यहीन जिन्दगी जीता है।

जीवन में मिलने वाली विफलता और असम्पन्न के पीछे एक कारण हमारी छोटी सोच, छोटी दृष्टि ही है। अपनी सोच को, अपनी मानसिकता को विराट और उदार, मैत्रीपूर्ण और क्षमापूर्ण बनाकर देखिए, लोग आपको दिल में बेड़ाकर रखेंगे।

छोटी और स्वार्थी सोच होने के कारण ही इस देश का स्तर गिरा है। उसके नैतिक मूर्तियों में गिरावट आई है। भ्रष्टाचार, रिस्क्विट्वोरी बढ़ी है। वेतन-प्रथा को बढ़ावा मिला है। शराब पीने जैसी मनोवृत्ति का बेटहाशा विस्तार हुआ है। घर दूर हैं, परिवार दूर हैं। आपसी प्रेम और शांति में कटौती हुई है। आदमी खुदगरज हुआ है।

अच्छा नज़रिया लेकर चलने वाले नैतिकता से, ईमानदारी से, प्रामाणिकता से अपना जीवनयापन करते हैं और वैसा ही उनका नज़रिया बनने लगता है। जैसा वातावरण होगा, वैसा ही नज़रिया बनेगा। जैसा घर का माहौल होगा, वैसा ही बच्चा बनता चला जाएगा। अपने घर का माहौल देखिए। आप जो किताबें पढ़ते हैं, उनका स्तर समझिए। आप जो टी.वी. देखते हैं, वह भी आपके नज़रिये को प्रभावित करता है। व्यापार में जो व्यवहार करते हैं, जिसे बेहतर जीवन का बेहतर नज़रिया बनाए जाएगा.
भाषा और बोली का उपयोग करते हैं, उसके स्तर को समझने के लिए तत्त्व को दर्शाते हैं। अगर कोई बच्चा गाली देता है तो 
मान लीजिए कि परिवार में कोई बड़ा व्यक्ति ज़ूरत गाली देता होगा। अगर 
आपका बच्चा गुस्सा कर रहा है तो आप यह मानकर चलें कि माँ-बाप में से 
कोई-न-कोई ज़ूरत गुस्सा कर रहा है। अगर आप गुस्सा कर रहे हैं तो बच्चों 
को शांति से जीने को कहने के लिए आपका हक नहीं बनता। जहाँ लोग कुत्ते- 
बिल्लियों की तरह लड़ते-झगड़ते हैं, जरा बताइये कि वहाँ संतान अच्छी कैसे 
बन पाएँगी?

आप बताएँ कि क्या आप कभी गाली देते हैं? आप कहेंगे ‘कभी-कभी’।
ईमानदारी से बताएँ तो पता चलेगा कि आप रोज़ ही गाली निकालते होंगे।
कोई भी आदमी तभी तक शांत रहता है, जब तक उसे अशांत होने का मौका 
नहीं मिलता। कोई भी व्यक्ति तब तक ईमानदार रहता है, जब तक उसे बेरोज्जा 
होने का निमित्त नहीं मिलता। निमित्त मिल जाने पर भी जो व्यक्ति ईमानदार रह 
सके, वास्तव में वही ईमानदार है। सच्चाई तो यही है कि जैसा घर का माहौल 
होता है, वैसा ही व्यक्ति का निर्माण होता है। देवता कोई आकाश से नहीं 
उतरते और भूत कोई पाताल से नहीं आते। समाज और घर-परिवार का जैसा 
वातावरण होता है, मनुष्य वैसा ही बनता है।

मैंने एक प्यारी बच्ची शालिनी से पूछा, ‘बेटी, तुम इतनी शालीनता से, 
इतने अदब से, इतनी बिनम्रता से कैसे पेश आती हो?’ उसने कहा,
‘इसमें नई बात क्या है? हमारे घर में सभी लोग इसी तरह व्यवहार करते 
हैं।’

जहाँ घर के सभी लोग एक-दूसरे से इतनी शालीनता से पेश आएँगे तो 
बच्चों में भी वे ही संस्कार आएँगे। जो आप करेंगे, बच्चे भी वही करेंगे। बच्चे 
तो आपके जीवन के आईने होते हैं। जैसे आप होंगे, वे वापस वैसा ही आपको 
दिखाएँगे। अगर आपको किसी प्रकार का व्यसन या लत है तो बच्चे भी चीरी- 
छिपे उसे अपनाएँगे और आने वाले कल में खुद्दम-खुद्दम वह सब करेंगे जो 
आप आज कर रहे हैं। आज बच्चों में भी दुर्व्यसन आए हैं, आज जो वे आपके

54
बाह! जिन्दगी
कहे हुए का अतिक्रमण करने का साहस करते हैं, देखिए इस सबकी शुरुआत के कारण आप स्वयं ही तो नहीं हैं? इसलिए भाभी पीढ़ी के निर्माण के लिए, एक सफल और समृद्ध देश व समाज के निर्माण के लिए जुटी है कि अभिभावक अपने घर का वातावरण ठीक करें। व्यक्ति के गाजियन ही उसके पहले गुरुजन होते हैं। गाजियन गुरु का काम भी करें। कहीं ऐसा न हो कि पोता अपने दादा की अंगुली पकड़ते हुए भी शर्माएं। अगर हमयं गुलत आदत या व्यवहार है तो उसे आज ही घर से बाहर निकालने का संकल्प कर ले। मैं चाहता हूँ कि मेरा घर अच्छा हो, मेरे पड़ौसी का घर अच्छा हो, मेरे पूरे समाज और देश का माहौल अच्छा हो। ऐसा करने के लिए जुटी है कि हम अपने घर के माहौल को ठीक करें। अच्छी माहौल में बच्चा तो क्या, आपका कर्मचारी भी अच्छा काम करेगा और बुरे माहौल में कर्मचारी का भी मन नहीं लगेगा। उसमें कार्य-क्षमता होते हुए भी वह अच्छा कार्य नहीं कर पाएगा। चाहें आपके घर का बच्चा हो या कर्मचारी, घर के माहौल का उस पर सबसे पहले प्रभाव पड़ता है।

‘एक न्यायाधीश ने चोर को छः साल की सजा सुनाई। चोर ने कहा, ‘ठहरो, मैं इस सजा को अकेले नहीं भोगौगा। मेरा बाप भी इस सजा की भोगेगा।’ जज ने कहा, ‘चोरी तुमने की, बाप सजा क्यों भोगेगा?’ चोर ने कहा, ‘इसलिए, क्योंकि वह जानता था कि मैं चोरी कर रहा हूँ और उसने मुझे कभी चोरी करने से नहीं रोका। जितना गुनाहगार मैं हूँ, मेरा पिता भी उतना ही गुनाहगार है।’

अगर पुत्र बिगड़ रहा है तो इस कारण कि माता-पिता उस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। आप अपने बच्चे को चाहे जितना प्यार करें पर जरूरत पड़ने पर उसे समझाएँ, डॉटे और कभी एकाध चपत लगाने से भी न चौके।

जब किसी लड़के ने किसी लड़की के साथ छःढ़छाड़ की, तो पुलिस उसे पकड़ने आ गई। लड़के के पिता को जब इस बात का पता चला तो उसने पुलिस को यह कहते हुए ५,०००/- की रिश्वत दी कि उसके बेटे की ऐसी पिटाई की जाए कि वह भविष्य में फिर किसी के साथ ऐसा काम न करे।

बेहतर जीवन का बेहतर नज़रिया

५५
यह है सुधारने की प्रक्रिया वहीं यदि पिता पुत्र को पैसा देकर छुड़ा लाता, तो वह होती बेते को बिगाड़ने की प्रक्रिया।

अच्छे घर, अच्छे नज़रिये के निर्माण के लिए वातावरण का अच्छा होना ज़रूरी है। नज़रिया अच्छा होने पर आपके कर्मचारी भी बेहतर काम करेंगे अनुष्ठाव योग्यता होने के बावजूद घटिया नज़रिये के कारण उनकी कार्य-क्षमता प्रभावित होगी। मेरा अनुरोध है कि अगर आपके घर में है तो आप अपने आस-पास के माहौल को बेहतर बनाने के लिए तत्पर हो जाइए।

आपकी शिक्षा कैसी है, इसका भी नज़रिये पर बहुत प्रभाव पड़ता है। आज की शिक्षा केवल रोज़ी-रोटी कमाना सिखाती है। मैं देश के कर्मचारी और शिक्षाविदों से कहना चाहूँगा कि शिक्षा ऐसी हो जो सिर्फ रोज़ी-रोटी कमाना ही नहीं बल्कि जीने की कला और जीवन-मूल्यों को भी सिखाए। जिस विद्यालय में जीवन के संस्कार दिये जा सकें, वे ही वास्तविक विद्यालय हैं। आजकल की इंग्लिश पब्लिक स्कूलों की भीड़ में हमारे संस्कार भी कहीं गुम होकर रह गए हैं। हम नहीं देखते कि वहाँ बच्चों को कैसे संस्कार दिये जा रहे हैं? विद्यालय इसलिए नहीं है कि वहाँ बच्चे केवल पुस्तकें पढ़ना ही सीखें। विद्यालय तो ज्ञान व संस्कार का वह झरना होता है जिसमें हर विद्यार्थी को स्नान करते रहना चाहिए। जो शिक्षा व्यक्ति का चित्रण-निर्माण न कर पाए, वह शिक्षा, शिक्षा नहीं, शिक्षा की तकनीकी भर है। माता तकनीकी शिक्षा।

अपने बच्चों को आदर्श विद्या मंदिर जैसे किसी विद्यालय में पढ़ाएं। कम-से-कम पाँचवी तक तो वहाँ पढ़ाएं, फिर उन्हें किसी और स्तरीय विद्यालय में पढ़ा लें। जीवन में जितना ज़रूरी विद्वान है, उतना ही ज़रूरी है: संस्कार। सबह कब उठना चाहिए, सबह उठकर क्या करना चाहिए, माता-पिता को प्रणाम करना, बड़ों का आदर-अदब करना, बड़ों से कैसा व्यवहार करना, अपने सहपाठियों के साथ कैसा मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना, किस अदब के कपड़े पहनना आदि बहुत सी बातें ऐसी हैं, जिनके संस्कार घर और स्कूल में ही दिए जा सकते हैं। यदि हम शुरू में ही इस बात के प्रति सावधान न हुए तो संतान गई काम से।

५६

वाह! जिन्दगी
अज तो बच्चा ए फॉर एटम, बी फॉर बॉम्ब सीख रहा है। बचपन से ही जब बच्चों को हिंसा और विध्वंसमूलक शब्दों से ज्ञान की शुरुआत कराई जाती है, तब सोचिए कि वह इस्मान अपने जीवन में सृजनात्मक शिक्षा को भला कैसे आत्मसातु कर पाएगा? बेहतर होगा जब हम किसी विद्यालय में अपने बच्चे को दाखिल कराएँ तो पता कर लें कि वहाँ के संस्कारों का स्तर क्या है? फिर तो जैसे-जैसे अनुभव प्रगाढ़ होते हैं मनुष्य का नज़रिया भी वैसा ही बनता जाता है। जीवन में आने वाले उतार-चढ़ावों से जीवन का निर्माण होता है।

सही अर्थ में शिक्षित वह है तो अच्छे और बुरे में चुनाव करना जानना हो, जो हालातों का सही दंग से सामना करने में समर्थ हो और जो अपनी काबिलियत और बुद्धि का निर्माण साठर्क उपयोग करता हो।

नज़रिये के निर्माण में एक और बिन्दु है जिसका सीधा प्रभाव पड़ता है वह है ज़िम्मी में लगाने वाली ठोकरें। ठोकर अपने आप में एक परिपक्व अनुभव है। ठोकर कोई यो ही नहीं पड़ जाती। हर ठोकर आदमी को सम्हलने की प्रेरणा है। ठोकर कुदरत के घर से दी जाने वाली सिखावन है। जो ठोकर खाकर न सम्हले, वह बुद्धि ही होता है। जो दूसरों को ठोकर खाए देखकर अपने जीवन के लिए प्रेरणा ले लेता है, बुद्धि का प्रकाश उसी के द्वार पर उतरता है।

इसे यो समझें। दो भाई हैं, एक ही पिता की संतान लेकिन एक भाई शराबी है और दूसरा भाई सभ्य और भली ज़िम्मी जी रहा है। लोगों ने शराबी से पूछा, ‘तुम शराब पीते हो, पत्नी के साथ दुर्विवहार करते हो, बच्चों के साथ मापीट करते हो, पत्नी की कमाई भी शराब में उड़ा देते हो, आखिर ऐसा क्यों करते हो?’ उसने कहा, ‘क्यों न करहूँ? मेरा बाप भी यही सब करता था, उसी से तो मैंने यह सब सीखा है।’ लोगों ने उसके भले सजना-सम्पत्त भाई से भी पूछा, ‘तुम्हारा बाप तो शराबी था। वह पैसे-पैसे को तरसता था, पत्नी, बच्चों से दुर्विवहार करता था, पर तुम तो बहुत इज़हार की ज़िम्मी जी रहे हो। प्रसन्न रहते हो, सम्पत्त हो, आखिर क्या बात है?’ उसने कहा, ‘जो बेहतर जीवन का बेहतर नज़रिया”
कुछ भी आप कह रहे हैं वह सब सच है। मैंने बचपन में जब-जब भी पिता के इस रूप को देखा तब-तब मेरे भीतर यह प्रेरणा जगने लगी कि शराब के कारण पिताजी ने घर को तहस-नहस कर दिया, मेरी देवी जैसी माँ के साथ दुर्घटनाहरू किया लेकिन जब मैं बड़ा होऊँगा तब कभी शराब नहीं पीऊँगा, अपनी पत्नी से उपेक्षा और अपमानजनक व्यवहार नहीं करूँगा और न ही बच्चों से मारपीट करूँगा। बचपन के दो कटु अनुभव ही मेरी अच्छाई का मूल कारण है।

एक ही घर में पैदा होने वाले दो बच्चों में एक बिगड़े होता है और एक सुधर जाता है। एक का नज़रिया घटिया और दूसरे का बढ़िया हो जाता है। जो ज़िन्दगी से कुछ सीखता चाहता है, वह अपने आपको वैसा ही बना लेता है और जो अपने आपको बनाना चाहता, उसे कोई भी गीता और रामायण भी श्रेष्ठ नहीं बना सकता। ज़िन्दगी के अनुभव ही जीवन का पहला शाखा है, उसमें समझ और सीख। आप अपने बच्चों का उनके बचपन से ही अच्छा नज़रिया बनाने के प्रति जागरूक हो जाए। बच्चों की जरूरतों के अंतरिक्ष उनसे पूछिए कि ‘उनके मन की कैसी स्थिति है, उनके मन में कैसे विचार उठते हैं, आज सपने में उन्होंने क्या देखा? उन्हें अच्छी कहानियाँ सुनाइए और उनके नज़रिये को ऊँचा उठाने का प्रयास कीजिए। भीतर आप कोई बीज पनप रहे हैं और यदि उनमें केवल या कोई हैं तो उन्हें पहले से उखाड़ कर फेंकने का प्रयास करेंगे तो जीवन का उदास सौम्य, सुंदर और मधुर होगा।

अपने नज़रिये को बेहतर, सकारात्मक, पोज़ीटिव बनाने के लिए कुछ और कीमिया सूत्र लें। पहला गुरु है: बेहतर नज़रिया बनाने के लिए और अच्छी अच्छाइयों को तलाशें, अपनी सोच को बदलें और अच्छाइयाँ देखने की ही मानसिकता पैदा करें। अच्छाइयें देखना चाहिएगों तो हर किसी में अच्छाइयों ने जाएगी और बुराइयाँ देखने तो अच्छाइयें में भी बुराई दूंढ ही लोगे। अच्छाइयें को तलाशने का अर्थ ही यह है कि हम अपनी गुलतियों को नज़र-अंदाज़ कर दे। जो गुलतियों को नज़र-अंदाज़ करने का जन्म रखता है, वही अपने नज़रिये को बेहतर बनाने में सक्षम होता है। हरेक में कोई-न-कोई गुण होता है। बंद
घड़ी में भी दो बक्क तो ऐसे आते हैं जब वह सही समय दिखाती है। अगर हम किसी एक गलत बात पर अपना ध्यान केन्द्रित कर बैठे तो नियान्त्र अच्छाइयों से बंचत रह सकते हैं।

दुसरा अनुरोध है: सबको प्रेम दीजिये, सबको समान की नज़रें से देखिए। पत्नी हो या बच्चे, पता-पिता हों या कर्मचारी, पड़ोसी हों या रिश्तेदार, सभी का समान रूप से समान कीजिए। मैं तो कहूँगा कि अगर हमारे पर दुसरा भी आ जाए तो उसे भी समान दीजिए। यदि कीजिए जब राम के सामने रावण और मेघनाथ का शत लाया जाता है तब क्या होता है? विभिन्न वर्गों में लंकावासी सोच रहे होते हैं कि रावण ने राम की पत्नी सीता का हरण किया था अतः निश्चित ही अब यह राम रावण और मेघनाथ के शब्द के तुलना-तुलना करके गिद्धे और कुंठों को खिलाएगा। पर नहीं, जब रावण और मेघनाथ का शत आता है तो राम तत्काल उनके समान में खड़े हो जाते हैं और अपने कंडे पर रखे हुए उत्तरीय को उतारकर आदर्पूर्वक उस शूरुवीर योद्धा को सम्पूर्ण अपने कर रहे हैं।

अरे राम के भीतर राम को देखा तो कौनसी बड़ी बात हो गई? जो रावण में भी राम को देख सके उसी का नज़रिया बेहतर कहलाता है। संत में तो संत दिख जाएगा लेकिन असंत में भी संत देखने का नज़रिया अपने भीतर विकसित करो-यही तो अच्छा नज़रिया अपनाने का मूल सूत्र है।

तीसरा अनुरोध है: अपने हर दिन का प्रारंभ आप ज्ञान की किसी अच्छी बात से करें। अपनी एक पुस्तक है ‘क्या करें कामयाबी के लिए’? उसमें ३६५ सूत्र दिये गए हैं। प्रतिदिन एक सूत्र पढ़ा जाए। जिस माह, जिस दिन जो तारीख है उसका पत्ता खोलें। उसमें एक बात चर्चा हो गई है। उसे पुनः पुनः पढ़ें, दिमाग में उतरें और दिन का प्रारंभ करें। ज्ञानपूर्वक अपने दिन की शुरुआत करने वाला व्यक्ति पूरे दिन ध्यान पूर्वक, होशपूर्वक जीता है।

नज़रिया अच्छा और बेहतर बन सकें, इसके लिए चौथा सूत्र है: सदा सीम्य सरें। चेहरे पर सदा मुस्कन रखें। शुरुआत में भले ही यह मुस्कन कृत्रिम लगे, पर बाद में वही, ज्यों-ज्यों मुस्कन करने का संस्कार भीतर उत्तरता आत्मविश्वास नज़राएँ, असंभव का ‘अ’ हटाएँ। ५९
जाएगा, वह स्वतः हमारा स्वभाव और प्रकृति बनता जाएगा। अपने हर दिन की शुरुआत मुस्कान से करें। मेरी यह सत्ता प्रेरणा रही है कि सुबह जैसे ही अंख खुले, एक मिनट तक मुस्कुराया करें। शरीर की ताज़गी और मन की तंदुरुस्ती के लिए यह सबसे अच्छा टॉनिक है। मुस्कुराहट, अभी भी, कभी भी। मुस्कान को सदी में खिलने वाली उस धूप की तरह है जो हर हाल में अच्छी ही लगती है।

अंतिम अनुरोध : हर सुबह पन्नह मिनट योग और प्राणायाम करें।

लगभग आधे घंटा ध्यान अवस्था करें। अपनी आती-जाती सांसों पर ध्यान करें। सांसों के आवागमन को देखने का आनंद ले। आंतरमन में यह भाव रखें कि मैं ध्यान धर रहा हूँ। अर्थात् स्वयं को शांतिमय और आनंदमय बना रहा हूँ। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें और सकारात्मक भाव लिये हुए ध्यान योग में अधिकृत हों।

नज़रिये को अच्छा बनाने के ये कुछ सूत्र हुए। अच्छा नज़रिया, अच्छी सोच, आत्म-विश्वास, कार्य-योजना और कठिन परिश्रम ये ही तो सफल जीवन के आधार हैं। अगर आप सफल जीवन की चाहना रखते हैं तो अभी इसी क्षण अपनी सोच और दृष्टि को, वाणी और व्यवहार को बेहतर और सकारात्मक बनाने का फैसला कर लीजिए। आपका यह फैसला ही आपके भविष्य को तय करेगा।

60

वाह! जिन्दगी
वाह! जिंदगी

आत्मविश्वास जगाएँ, असंभव का ‘अ’ हटाएँ

“संघर्ष के मैदान में जीतता वही है जिसके भीतर जीतने का ज़रुरा है। आप जीतने का विश्वास जगाएँ, आपके भीतर सिंकर्द की छवि स्वत: उभरने लग जाएगी।”

अनि बात का प्रारम्भ ऐसी घटना से कहेंगा जिस पर विचार करने से हमारा सोया हुआ आत्म-विश्वास फिर से जाग्रत और सक्रिय हो सकता है।

“सूमो पहलवानों के इतिहास में ओनामी नामक एक प्रसिद्ध पहलवान हुआ है। वह इतना सबल था कि अगर वह हाथी को पकड़ लेता तो हाथी का उसके चंगुल से छूटना मुश्किल था। जिसके शरीर में इतना बल था फिर भी न जाने वह कैसे और क्यों मानसिक कमजोरी का शिकार हो गया और उसका मनोबल टूट गया। परिणामतः जिसके नाम से देश के पहलवान दर्शन उठे थे, वह अब अपने ही शिष्यों से परास्त हो जाता था। उसने अनेक प्रयास किए तगुरू अपने मनोबल को वह फिर से प्राप्त न कर सका। आखिर में परेशान होकर वह अपने ध्यान-गुरु के पास गया और उन्हें अपनी समस्या कह सुनाई।

आत्मविश्वास जगाएँ, असंभव का ‘अ’ हटाएँ ६९
ध्यान-अध्याय 1 का 8 वां श्लोक हाकूजू ने उसकी सारी मनोदशा समझी और कहा,
‘ओनामी, तुम्हारी समस्या केवल बच्चों का खेल है। तुम अगर चाहो तो आज की रात में ही अपने मनोबल को पुनः पा सकते हो। इसे तो तुम्हारे भीतर एक महान सागर और सागर में एक महा तरंग उठती हुई दिखाई दे रही है। मुझे लगता है कि तुम्हारे भीतर इतना सामर्थ्य है कि देश तो क्या, पूरा विश्व ही इस सामर्थ्य के सम्पूर्ण नतमस्तक हो सकता है। तुम मेरे साथ मेरे श्रावन (ध्यानक्रम) में चलो। मैं आज की रात तुम्हें ऐसा ध्यान करवाएं हूं, ताकि तुम अपने खोये हुए मनोबल को प्राप्त कर सकों।’

ध्यान-क्रम में पहुँचकर हाकूजू ने ओनामी से कहा, ‘तुम ध्यान करो और ध्यान भी केवल सागर की तरंगों को। अपने भीतर देखते चले जाओ कि सागर की तरंग उठ रही है। उस तरंग के साथ तुम इतने भक्ती हो जाओ कि वह तरंग बढ़ते-बढ़ते महातरंग हो जाए। तुम सागर की महातरंग हो और उसी रूप में स्वयं को देखने की कोशिश करो।’

कहते हैं कि ओनामी ध्यान करने बैठा लेकिन रात के तीन घंटे पहर बीत जाने के बाद भी न तो उसका ध्यान में मन लगा और न ही आंखों के आगे कोई सागर उमड़ा और न ही उसकी मानसिकता में सागर की कोई तरंग लहार उठी। चौथे पहर में अचानक उसने पाया कि उसके भीतर सागर की लहर उठ रही है। उसने अपनी एकाग्रता को उस तरंग पर स्थित किया। तरंग उठती रही और उसी तरंग ने महातरंग का रूप ले लिया। ओनामी ने पाया कि वह महातरंग केवल उस तक या उसके मनोमत्स्तिक तक ही सीमित न रहकर उसके बाहर भी आती जा रही है। महातरंग की चपेट में वह ध्यान-क्रम भी आ चुका है। उसने देखा कि पूरा मठ, पूरा आश्रम, गाँव, नगर, पूरा देश और पूरा विश्व ही महातरंग की चपेट में आता जा रहा है। उस महातरंग के भरे में बड़े-बड़े दानव, बड़े-बड़े जहाज, बड़े से बड़े सूमो पहलवान आते चले आ रहे हैं और धराशायी हो रहे हैं।

तभी हाकूजू उस श्रावन में प्रविष्ट हुए और उन्होंने देखा कि ओनामी के चेहरों पर अदभुत चमक और आभा है। उन्होंने जान लिया कि यह आभा ओनामी के आत्म-विवाह की है। हाकूजू ने उसके सिर पर हाथ रखा, पीठ बाह! सिंद्रिय
थपथपाई और कहा, ‘अब तुम खड़े हो जाओ। तुम्हारे चेहरे पर आई हुई चमक को देखकर कहा जा सकता है कि तुमने उस महासंग का अनुभव कर लिया है।’ ओनामी गुरु का आशीर्वाद लेकर आश्रम से चल पड़ा और कहते हैं कि जब तक वह जिया, उसकी तुलना में कोई भी उसकी टकर का पहलवान न हो पाया।

ओनामी प्रतीक है। यह मेरा और आपका प्रतीक है। वह हर व्यक्ति का प्रतीक है जो शरीर से तो सबत है लेकिन मन से निर्वकल हो चुका है। ‘निर्वकल का बल राम होता है’ पर राम का बल व्यक्ति का मनोविकल होता है। जिसका मन मज़बूत, उसका पूरा जीवन मज़बूत और जिसका मन कमजोर उसका जीवन कमजोर। ‘मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।’ जो मन से हार गया वह निश्चय ही हार गया और जिसे यकीन है कि वह हर हाल में जीते उसे जीतने से कोई रोक नहीं सकता। लेकिन जिसके मन में वह भय समा गया कि कहीं वह असफल हो गया तो? ‘तो’ का संदेह उसे अवश्य ही असफल कर देगा। जिसके भीतर आत्मविश्वास जाग्रत हो गया है, वह निश्चित ही सफल होगा। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों, वह अवश्य में सफल होगा।

जीतने वाला कोई आसमान से नहीं टपकता और हारने वाला किसी पाताल से नहीं निकलता। मनुष्य का मन ही उसे विजय दिलाता है और यही मन उसे हार दिलाता है। हारा हुआ मन हार का कारण है और जीता हुआ मन जीत का आधार है। हरेक को चाहिए कि वह अपनी मानसिक शक्तियों को पहचाने। हमारे भीतर ऐसी मानसिक और आत्मिक शक्तियाँ हैं जिनके बलसे पर हम जो चाहें, वह कर सकते हैं। आल्प्स की पहाड़ियों से गुजरने वाले नेपोलियन को मजबूती से यह सुनने को मिला कि, ‘जाने कितने सेनानायक आए और चले गए, चले गए, पर आल्प्स की इन पहाड़ियों को वे पार न कर सके। इसलिए तुम अपने विश्व-विजय के खाब को छोड़कर अपने वतन लौट जाओ।’ नेपोलियन बोला, ‘मैं, अगर तुम बुझी न होती तो मैं हाथ पकड़कर तुम्हें रास्ते से हटा देता। तू मेरी माँ के समान हूँ, इसलिए मैं तेरी इजन करता हूँ और बता देना चाहता हूँ कि नेपोलियन के शब्दकोश में ‘असंभव’ नाम का शब्द ही नहीं है।’

आत्मविश्वास जगाएँ, असंभव का ‘अ’ हटाएँ 63
कोई व्यक्ति अपने जीवन में कामयाबी की ऊंचाईयों को हासिल करना चाहता है तो वह ‘अ-संभव’ शब्द में से ‘अ’ को हटा दे। दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं है, जिसे वह करना चाहे और कर न पाए। तब उस बुढ़िया ने कहा था, ‘नेपोलियन, तुम्हारे भीतर जो साहस और आत्म-विश्वास के शब्द में उमड़ रहे हैं, वे अवश्य ही तुम्हें जीवन में सफलता दिलाएंगे।’ इन पहाड़ियों को पार करने के लिए कई सेनानायक आए पर जो आत्म-विश्वास तुरहारे भीतर है, वह किसी में न था।’ इतिहास गवाह है कि नेपोलियन ने आल्पस की दुर्गम पहाड़ियों को पार कर अपने विश्व-विजय के सपने का मार्ग प्रशांत किया।

आत्म-विश्वास व्यक्ति को विजय दिलाता है। जो हारे वे केवल इसलिए कि जीतने के प्रति वे पूरी तरह कूटसंकल्प नहीं थे। जो जीते हैं वे इसलिए कि जीतने की बुनियादी मानसिकता अपने भीतर लेकर चलते रहे। मैं चाहता हूँ कि हर आदमी अपने मनोबल को जाग्रत करे। कुश्ती लड़ने वाले दो पहलवान सबलता को दृष्टि से एक जैसे ही होते हैं, दोनों की ताकत भी एक जैसी ही होती है। दारासिंह और किंग-कांग ने जब कुश्ती लड़ी थी तो किंग-कांग दारासिंह से दुशुष्ण वजनी और ताक़तवर था लेकिन फिर भी वह मात खा गया। इसका क्या कारण था? कुश्ती लड़ने वाले दोनों लोग सबल होते हैं, रेस में दौड़ने वाले धावक सबल होते हैं, क्रिकेट में बॉलिंग और बैटिंग करने वाले दोनों सबल होते हैं, पर जीतता वह है जिसके भीतर जीतने का विश्वास है।

जिनके मन में कमजोरियाँ आ चुकी हैं, उनसे में कहना चाहूँगा कि अगर आप अपनी मानसिकता को बदल लें तो अपनी जिंदगी की नई शुरुआत कर सकते हैं। अंततः वर्ष की उम्र में व्यक्ति बूढ़ा नहीं हो जाता। जिसके मन में तनाव, अवसाद और निराशा आ चुके हैं, वह बचपन में ही पचन का हो गया, ऐसा जाने। शरीर से बुढ़पा नहीं आता। मन बूढ़ा तो आदमी बूढ़ा, जिसका मन जवान है, वही युवा है। नाव उसकी ही पार लगती है जिसमें नाव को पार लगाने की दूढ़ मानसिकता है। मन बूढ़ा तो नाव बूढ़ी, मन तिर रहा है तो नाव को तिरना ही पड़ेगा। तूफान लकड़ी की नौका को तो तोड़ सकता है, पर इंसान के मनोबल को नहीं।

आज की समस्या साम्राज्याधिक, सामाजिक, गरीबी और बेरोज़गारी

६४
की कम है। आज की सबसे बड़ी समस्या व्यक्ति की मानसिकता की है। मन में धीरे से सारी समस्याएं घिरी हुई हैं। निराशा, तनाव, घुटन, अवसाद के भाव जब-जब पैदा हो जाते हैं तब तब ओनामी जैसा सबल-समर्थ पहलवान भी ऐसी पतली हालत में आ जाता है कि वह अपने ही चेलों से मात खा जाता है। मन की धाराएं मजबूत हो जाएं तो सभी कार्य सरलता से सम्पन्न हो जाते हैं। अंधेरों को कोसने का काम बहुत हो गया। अब तो आप मोमबत्तियाँ जलाईये, आत्मशक्ति की मोमबत्तियाँ, मनोबल की मोमबत्तियाँ।

“एक खरगोश की कहानी बताती है कि वह जानते हुए भी कि हर रोज एक जानवर शेर को भेंट किया जाता है और आज उसकी बारी है। फिर भी उसने तय कर लिया कि वह शेर का भोजन नहीं बनेगा। खरगोश शेर के पास पहुँचा और बोला, ‘महाराज, माफ करें। मुझे आप में बहुत दर हो गई। शेर भूख के कारण बिलबिला रहा था। वह क्रोधित भी था। जब उसने देखा कि रोज तो बड़े-बड़े जानवर आते हैं और आज यह अदना- सा खरगोश और वह भी इतनी दे से आया है। तभी खरगोश बोला, ‘महाराज, मैं तो बहुत जल्दी रवाना हो गया था। मुझे पता था कि शेर अंकल को बहुत तेज भूख लग रही होगी, लेकिन जब मैं बीच जंगल में पहुँचा तो सुना कि कुएं में से तेज दहाड़ की आवाज आ रही है। मैं उसमें झाँककर देखा तो पाया कि उसमें एक और शेर बैठा है। मैं उससे पूछा ‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’उसने कहा, ‘मैं यहाँ रहता हूँ, कुएं की गुफा में, और इस जंगल का राजा भी मैं हूँ।’ मैं थे जल्दी से इस कुएं में कूद जाना चाहिए ताकि मैं तुहारा आहार ले सकूँ।’ खरगोश ने कहा जारी रखा, ‘महाराज, मैं बड़ी मुखिल्ल से उससे पीछा छुड़कर आया हूँ। मैं तो यह सोच रहा हूँ महाराज कि मैं तो छोटा- सा जंतु था, जैसे-जैसे निकलकर आ गया। कल से फिर कोई जानवर आएगा आपके आहार के लिए। कहीं ऐसा न हो कि वह बीच में ही उसे झपट ले जाए।’

यह बात सुनते ही शेर और क्रोधित हो गया। ‘अरे, जंगल का राजा तो मैं हूँ। मेरे रहते दूसरा जंगल का राजा कैसे बन सकता है?’ शेर ने तमामताते हुए कहा। ‘महाराज, यह तो आप जाने। मैं भला शेर से कैसे मुकाबला कर सकता हूँ? अगर, आप कहें तो मैं आपको कुएं आ, ज़रूर दिखा सकता हूँ, खरगोश ने आत्मविश्वास जगाए, असंभव का ‘अ’ हटाएँ।
उकसाते हुए विनयता से कहा। शेर उतावला हो गया और क्रोध में उसका विवेक नष्ट हो गया। वह चल पड़ा खरगोश के साथ कुएं की ओर। कुएं के पास आकर पूछा, ‘कहाँ है वह शेर?’ खरगोश ने कहा, ‘कुएं में झाँककर देखिए।’ शेर ने कुएं में झाँका तो वहाँ सचमुच ही एक शेर दिखाई दे रहा था। बावला शेर जोर से दहाड़ा, अंदर से दूनी ध्वनि से दहाड़ वापस आई। क्रोधी क्रोधी दे देखकर अपने पंजे गाड़ देना चाहता है। शेर ने आव देखा न ताव, एक ही छलांग में कुएं के अंदर जा पहुँचा। शेर कुएं में मिर पड़ा। खरगोश बाहर बैठा तालियाँ बजा रहा था।

कहते हैं कि जंगल के सारे जानवर इनके हुए और खरगोश से पूछा, ‘क्या बात है? दोपहर बीतने को आ गई है और तुम अभी तक शेर के पास नहीं पहुँचे? अब वह बहुत क्रोधित होगा और कल बहुत सारे जानवरों का शिकार कर डालेगा।’ खरगोश अपने सभी मित्र जानवरों को कुएं के पास ले गया और बोला, ‘जरा इसमें झाँककर तो देखो।’ कुएं के पानी में एक लाश तैर रही थी। वह लाश एक सबल, समर्थ, सशक्त, बलवान शेर की थी जिसे कोई परास्त नहीं कर सकता था।

मनुष्य अपने मनोबल का प्रयोग कर जीवन की हर समस्या का समाधान कर सकता है। महावीर हों या बुद्ध, राम हों या रहीम, कृष्ण हों या कबीर-चाहे जैसे अवतार पुरुष क्यों न रहे हों अथवा शेक्सपाइयर हो या मैक्स्बूलर, नोबल हों या नेल्सन, गांधी हों या गोर्वाचोर, कौन व्यक्ति ऐसा है जिसे बिना मनोबल और आत्म-विश्वास के जीवन में कामयाबी पाई चोटी हो। राटा, बिरला या अंबानी हों, विद्याधर हों या व्यापारी, कर्मचारी हों या अधिकारी, राजनीतिज्ञ हों या खिलाड़ी, हर किसी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने का मूल आधार व्यक्ति का अपना मनोबल है। मनोबल की ही दृष्टि रूढ़ी में आत्म-विश्वास कहा जाता है।

आत्म-विश्वास हमारे जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है। यह मानसिक शक्ति भी है और आध्यात्मिक शक्ति भी। आत्म-विश्वास ही प्रगति की सीढ़ी है। कामयाबी की मंजिलों तक ले जाने वाला भी आत्म-विश्वास ही है। अगर हम चाहें तो अपने आत्म-विश्वास को, हिम्मत और साहस को मजबूत रखकर बाह! जिन्दगी
मौत को भी शिक्षक दे सकते हैं।

मैंने सुना है कि एक टूक में दूध के केन रखे हुए थे। दूध मालिक ने दो केन
खोलकर उनके फैट की जांच की तो पाया कि ठीक है। लेकिन तभी कहीं से
उछलते हुए दो मेंढक आए और एक-एक केन में गिर पड़े। मालिक देख न
पाया और उसने ढकन लगा दिए। एक मेंढक ने सोचा, ‘अरे, ढकन तो बंद हो
गया, अब मैं बाहर कैसे निकलूँ?’ वह इधर से उधर आया गया पर बाहर
निकलने का रास्ता न मिला। वह उदास होने लगा कि ‘हे भगवान, अब मैं
कैसे बाहर निकलूँ? हे भगवान, मुझे बचाओ।’ धीरे-धीरे उसे लगा कि अब
tो वह मरेगा ही क्योंकि वह पानी में तौर सकता है पर दूध में नहीं। मेंढक झूलता
चला गया और अन्तत: मर ही गया।

उधर दूसरे मेंढक की भी यही स्थिति थी, पर उसने हार न मानी। वह
लगातार दूध में उछल-कूद करता रहा। इधर से उधर पाँव चलताता रहा, दूध में
धीरे-धीरे क्रीम उपर आने लगा। क्रीम की ढेरी बन गई और मेंढक उस पर जा
बैठा। टूक जब आपने गंटव्य पर पहुंचा तो केनों के ढकन खोले गये। एक केन
में से मरा हुआ मेंढक निकला और दूसरे केन में गिरा हुआ मेंढक छलांग
लगाकर बाहर निकल गया।

अगर हमें हिम्मत है तो बेड़ा पार है और अगर हिम्मत ही टूट गई,
आम-विश्वास ही डगमगा गया तो असमय ही मृत्यु ही सकती है। सफलता के
रास्तों पर चलने के बावजूद असफलता मिलना तय है। लोग आठ-आठ
उपवास करते हैं। आखिर, किसके बल पर? हिम्मत के बल पर। तन के बल
पर क्या आठ दिन भूख रहा जा सकता है? एक महीने का उपवास करना तो
प्रकृति के नियम के बिखूर किरसवार है फिर भी आप लोग किस ताकत के बल
पर एक महीने का उपवास कर लेते हैं? मैं कहूँगा, ‘अपने मनोबल के सहारे।’
इसलिए कहा करता हूं- ‘निर्बल का बल राम है तो राम का बल मनोबल।’
आत्म-विश्वास ही राम की शक्ति है। राम में इतनी ताकत न थी कि वे रावण
को हरा सके। बंदरों के बल पर क्या रावण से टकर ली जा सकती थी?
देवताओं को पसीना आ जाता था दैत्यों से लड़ने में। रावण तो इंद्र जैसों को
बगल में दबा लेता था। दैत्यों के सामने तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी कमजोर पड़ जाते हैं। ऐसे दैत्यों को परास्त करना हैं-खेल नहीं है।

राम ने ईश्वरीय शक्ति के बल पर कम, किंतु अपने आत्म-विश्वास के बल पर ही राज्य पर विजय प्राप्त की थी। जो भी अपने जीवन में सफल और कामयाब हुआ है, निश्चित ही उसने अपने जीवन के साथ कुछ बुनियादी बातें जोड़ी होंगी। यह न समझें कि प्रारंभ ही जीवन का परिणाम देता है। मैं ऐसे प्रारंभ में विश्वास रखता हूँ जिसे हासिल करने के लिए व्यक्ति पुरुषार्थ करे। जब तक तदबीर नहीं होगी, तक परिश्वर क्या परिणाम देगी? कीड़ों की कण के लिए और हाथी को मण के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। शेर अगर गुफा में बैठे-बैठे सोचे कि शिकार आ जाएगा तो सावधान! शिकार तो नहीं आएगा बल्कि कोई तेज-तरीफ खरगोश वहाँ पहुंच जाएगा जो उसकी मौत का कारण बन जाए।

व्यक्ति अपने आत्म-विश्वास को जाग्रत करके अपने जीवन में नई दिशाएँ पा सकता है। मैं आपके ही नागर (भीलवाड़ा) के एक व्यक्ति का नाम लेना चाहूँगा, इसलिए कि आप सभी को उससे प्रेरणा मिल सके। वह व्यक्ति है संगम ग्रुप के मालिक सोनीजी। मुझे बताया गया कि संगम ग्रुप का मालिक एक दिन ऐसी स्थिति में था कि वह जिस मकान में रहता था, उसका ₹२५ महीना किराया देना उसके लिए बहुत बड़ी बात होती थी। लेकिन वहीं व्यक्ति आज सम्पत्ति की ऊँचाइयों को छू रहा है। आखिर वे क्या कारण होंगे जिनसे व्यक्ति ऊँचाइयों को हासिल करता है?

कोलम्बा जो भारत की खोज के लिए निकला था, सात समुद्र पार करते-करते अमेरिका पहुंच गया। यह बात अलग है कि वह निकला तो था भारत की खोज के लिए, पर पहुंच गया अमेरिका। पर वह क्या ताकत थी जिसके बल पर सात महासागरों की पार करके वह अनुसंधान करना चाहता था। वह आत्म-विश्वास है उसका जी जाओगा और ऐसे देश की खोज करके आओगा। पीयरे ने उत्तरा भूमि की खोज की थी इसी आत्म-विश्वास के बल पर। एडीन जिसने बलब का आविष्कार किया और संसार को रोशनी से भर दिया, प्रारंभ में वह हजारों बार असफल होता रहा। आशा, विश्वास और 

68
उत्साह से भरे लोग तारों के रहस्य को भी खोज निकालते हैं, वह निराशावादी लोग एक नया दरवाजा भी नहीं खोल पाते।

हर सफलता के पीछे असफलता की कहानी छिपी होती है। जो असफल होकर मनोबल गिरा देता है, वह फिर अगला कदम नहीं उठा पाता। अरे, जिजिप्पा तो एक जुआ है, जिसमें आदमी को तब तक चैन से नहीं बैठून चाहिए जब तक वह अपने लक्ष्य को हासिल न कर ले। आत्म-विश्वास से ही व्यक्ति को लक्ष्य-निर्धारण की क्षमता उपलब्ध होती है। आत्म-विश्वास से ही किसी बिंदु पर निर्भय लेने की ताकत उपलब्ध होती है। जिन्हें स्वयं पर विश्वास नहीं होता, वे भी दूसरों के भरोसे चलते हैं। उन्हें दूसरों के सहारे पर चलने के लिए मजबूर होना पड़ता है। जिसका अपने आप पर यकीन होता है, वह अपनी अंतर्यो आत्मा की आवाज़ को ईश्वर की प्रेरणा मानता है।

जिसके पास आत्म-विश्वास है, वही परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम होता है। अन्यथा छोटी-सी समस्या आने पर ‘हे भगवान्, हे भगवान्, हे रामजी, हे भोले-नाथजी, हे हथुमानजी न जाने कितने-कितने संकट-मोचकों को वह याद कर लेता है। अरे, भगवान ने तुम्हें बुद्धि दी है, दो-दो हाथ दिए हैं, तुम्हें कार्य करने की क्षमता दी है, समस्याओं का सामना करने के लिए बौद्धिक प्रतिभा दी है। तुम दूसरों के सामने नाक राग देने और गड़गड़ाने के बजाय स्वयं की मानसिक शक्तियों पर विश्वास रखते हुए उनका उपयोग करो। ईश्वर के प्रति तो केवल कृतज्ञता रहे कि प्रभु तुमें मुझे बहुत कुछ दिया है।

उसकी कृपा तो देखो कि एक पेट को भरने के लिए दो हाथ दिए हैं। प्रकृति की व्यवस्था तो देखो कि अगर एक असफल हो जाए तो दूसरा उसकी मदद कर सके।

यह सब मानसिकता पर निर्भर है। एक आदमी तभी तक उदास रहता है जब तक उसके पास खाने को रोटी न हो, पहनने को बच्च न हों, लेकिन जब उसकी निगाह पड़ोस में झोपड़-पड़ी की ओर जाती है तो उसे ईश्वर का निकट हो जाना चाहिए कि उसने पड़ोसी को झोपड़-पड़ी दी और उसे पका मकान दिया है। हो सकता है कि तुम अपने पांव में जूते न देखकर उदासीन हो जाते होगे पर यदि तुम रास्ते से गुजरते हुए किसी अपाहिज, विकलांग को देखतोगे

आत्मविश्वास जगाएं, असंभव का ‘अ’ हटाएँ

६९
तो तुम्हारा आत्म-विश्वास लौट आएगा। अरे, उसके पास तो पाँव भी नहीं हैं, जबकि मेरे पास पाँव तो हैं। जूते न हुए तो क्या हुआ, पाँव तो हैं अभी तक।

हम अपने मन को और उसकी मानसिक शक्ति को पहचानें। आत्म-विश्वास जाग्रत करके अपने मन की धाराओं को दुरुस्त कीजिए। प्रत्येक कार्य को उत्साहपूर्वक सम्पन्न कीजिए। किसी भी कार्य को टूटे हुए मन से, बोझिल मन से मत कीजिए। हर कार्य को उत्साह, उमंग और कर्म से सम्पन्न कीजिए।

यह उत्साह भरा है कि भाग्य साथ दे या न दे लेकिन जब तक आपके अंदर ताक़त है, उस अंतिम क्षण तक मेहनत करते रहें। आपके मन की बेहतर दशा कार्य को बेहतर बनायें। अपने मन का अंतर देखकर आईना ही बदल देते हो, पर आईनों की बदलने से कुछ न होगा। आपको अपना चेहरा ही बदलना होगा। थोड़ी खुशी, थोड़ा विश्वास जगाना होगा। अपने मन की प्रसन्नता, उत्साह, उमंग से भरा हुआ बना लो तो यही समझ लो कि आईना अपने आप बदल गया।

उत्साह के साथ प्रत्येक काम कीजिए। व्यापारी हैं तो उत्साह से व्यापार कीजिए। ध्यान-आराधना, तपस्या भी उत्साह के साथ कीजिए। अगर विद्वानों हैं तो उत्साहपूर्वक विद्यार्थी कीजिए। तात्त्विक पहेलियों में रखने के लिए नहीं होते। उन्हें खेलियें। आप प्राणों कि जो सफलता अभी तक आपके इर्द-गिर्द फूली थी, वह अब चौमुखी आनी शुरू हो गई है। जिंदगी में किसी भी काम को छोटा न समझें। कोई भी काम छोटा नहीं होता। अगर जीव-पौवाचा भी करो तो भी इतना सफाई से करो कि अगर कहीं वहाँ पर भगवान भी आ जाएं तो उन्हें भी आपके घर में रहने की इच्छा हो जाए। काम को छोटा-बड़ा समझने के कारण ही हमारे देश में इतनी बेरोजगारी है। काम तो बस काम है। उत्साहपूर्वक किया गया कार्य व्यक्ति की सफलता का द्वार बन जाता है। बोझिल मन से किया गया काम ही बंधन की बेड़ी बना करता है।

मन की दशा को अगर ठीक कर लिया जाए तो आप उत्साहपूर्वक, आत्म-विश्वास से लबरेज होकर करने पर छोटे से छोटे काम भी बड़े-से-बड़े परिणाम देने में समर्थ हो जाएं। आप उत्साहपूर्वक काम करने की कोशिश करें। इसलिए मैं कहा करता हूँ कि जब भी आप सुबह उठें, जी भरकर मुस्काएँ,

70

वाह! जिंदगी
अंग-अंग से मुस्कराएं। क्यों? ऐसा क्यों? अगर आप अपने भीतर प्रसन्नता संचारित करेंगे तो आप में उत्साह जागरूक होगा। बुझे हुए मन से दिन का प्रारंभ करने से सारे दिन उदासी ही छाई रहती है। बुखार आ जाने पर भी तबीयत में उत्साह भरा रहे तो आप पाएँगे कि तत्काल ही आपकी मनोवशस्त्र बेहतर हो गई है।

एक प्रयोग करते हैं। माना कि किसी ने आपका अपमान कर दिया या आपको कठु वचन कह दिये। उस वक्त आप बिना कोई प्रतिक्रिया प्रकट किये धैर्यपूर्वक उसकी बात को सुन लीजिएगा और तत्काल अपने भीतर अपनी अनतुष्टि ले उठे। अपने तन-मन में उत्साह और ताज़गी का संचार कर ले और ताज़गी से भर जाए। आप पाएँगे कि आपकी बुद्धि बेहतर हो गई है। आप उस अपमान का ज्वाब भी समझने से पड़े। मैं ऐसे प्रयोग करता रहता हूँ, इसलिए किसी की भी अपमानजनक टिप्पणी सुनकर युक्त गुस्सा नहीं आता, बुरा नहीं लगता।

एक बात और, आत्म-विश्वास को पाने के लिए उस ईश्वर पर विश्वास अवश्य रखें जिसने आपको जीवन दिया है। मेरी दृढ़ आस्था है कि जो ईश्वर पर विश्वास करता है, वह हर विपरीत परिस्थिति का सामना करने में समर्थ होता है। निम्नान्वें द्वारा बंद हो जाने पर भी वह एक द्वार तुम्हारे लिए खुल देगा। आप निराश न हों। और कल की न सोचें। यह तो बहीं सोचें जो आनेवाला कल हमें देगा। अगर हम कल की सोचें तो होगा भी क्या, अगर उसके दरवाजे पर हमारे लिए आनेवाला कल लिखा ही न हो।

सारे कार्य-विश्वासपूर्वक करें। असफलता मिले तो धैर्य न खोएँ। आत्म-विश्वास सफलता के द्वारा खोलता है। धैर्यवान व्यक्ति बार-बार असफल होने के बावजूद अंततः सफलता का हकदार बनता है। मृत्यु से घबराएँ नहीं क्योंकि जिंदगी में मौत दो बार नहीं आया करती। वक्त से पहले मौत आती ही नहीं है और आने के बाद वह वापस नहीं जाती। जब प्रकृति की इतनी मुक्तता व्यवस्थाएँ हैं हमारे जीवन के लिए तो फिर मन को बोझिल क्यों किया जाए? निराश नहीं हुआ जाए? अपने मनोबल को क्यों तोड़ा जाए? अपने नज़रिये को ऊंचा ऐसे मिटेगी, देश की ग़रीबी
उठाएँ, लक्ष्य को भेदान बनाएँ, कठोर श्रम करें। जिस क्षेत्र में आप प्रवेश करेंगे, वहाँ आपको सफलता अवश्य मिलेगी। ढूढ़ इच्छा-शक्ति रखकर ही बाधाओं पर विजय पाई जा सकती है। सकारात्मक सोच हमारे भीतर आशा का संचार करती है। जो भी कार्य करना हो उसका लक्ष्य निर्धारित कर लीजिए।

इसके अनुरूप योजना बनाइए और प्रस्तुतता, उत्साह एवं आत्मविश्वास से आगे बढ़िए। ढूढ संकल्प के साथ आगे बढ़िए, सफलता जरूर मिलेगी।

बदलें जीवन-धारा।

सही सोच हो, सही वृद्धि हो, सही हो कर्म हमारा।

बदलें जीवन-धारा।।

बेहतर लक्ष्य बनाएँ अपना, ऊँचाई को छू लें।

भले न पहुँचे आसमान तक, मगर शिखर को छू लें।

शांति और विश्वास लिए हम, दूर करें अंधियारा।

बदलें जीवन-धारा।।

मन की शक्ति रखें सुरक्षित, ऐसे स्वप्न सजाएँ।

प्रगति के जो दीप जलाएँ, वही दृष्टि अपनाएँ।

बेहतर रखें नज़रिया अपना, बेहतर कदम हमारा।

बदलें जीवन-धारा।।

मेहनत को हम दीप बनाएँ, लगन को समझें ज्योति।

पत्थर में से हीरा जन्मे, और सागर में मोती।

बाधाओं से डरना कैसा, मिलता स्वयं किनारा।

बदलें जीवन-धारा।।

कर्म स्वयं ही बने प्रार्थना, बल हो नैतिकता का।

सबसे प्रेम, सभी की सेवा, धर्म हो मानवता का।

‘चन्द्र’ धारा को स्वयं बनाएँ, घर-घर हो उजियारा।

बदलें जीवन-धारा।।

जीवन की धारा को बदलें। ओनामी का उदाहरण याद करें। क्षमता तो आप सब में है, आवश्यकता है केवल आत्मविश्वास को आत्मसात करने।

72

बाह! जिन्दगी
की। ‘यू आर ए ग्रेट वेज्ज़।’ तुम एक महातरंग हो, सागर की, सफलता की महातरंग। खुद को पहचानों, खुद की पहचान करो। खुद को समझो, खुद को समझाओ। तुम में अनन्त संभावनाएँ हैं। विश्वासपूर्वक कृदंब उठाओ। पहली बार में नहीं तो दूसरी बार में, दूसरी बार में नहीं तो तीसरी बार में सफलता के एवरेस्ट पर पहुँच ही जाओगे, वैसे ही जैसे कभी हिलेरी पहुंचा, तेनज़ ग पहुंचा।

०००
वाह ! जिन्दगी

ऐसे मिटेगी, देश की गरीबी

“गरीबि अभिषाप है। आप अभिषाप जीवन जीने को क्यों मजबूर हैं? ऊँचे लक्ष्य बनाइये और उद्या मेहनत कीजिए। आज नहीं तो कल, मेहनत अवश्य रंग लाएगी।”

जिज्ञासा-समाधान

पहला प्रश्न है: देश की गरीबी धर्म-नीति के द्वारा कैसे दूर हो सकती है?

(पं. प्रमोदराय आचार्य)

भारतीय संस्कृति ने मानवीय जीवन की सफलता और समृद्धि के लिए चार तरह के पुरुषार्थ करने पर जोर दिया है—(१) धर्म, (२) अर्थ (३) काम और (४) मोक्ष। जीवन की सम्पूर्णता के लिए ये चार पुरुषार्थ आधारभूत स्तंभ हैं जिन पर भारतीय संस्कृति केंद्रित है। न केवल देश के लिए बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए गरीबी अभिषाप है। हमारे देश की संस्कृति ने अर्थ के लिए पुरुषार्थ की प्रेरणा देते हुए इस बात पर सबसे अधिक जोर दिया है कि प्रत्येक नागरिक अधिसंपत्त हो। मैं अपनी ओर से अपरिग्रह का समर्थन अवश्य करेंगा, लेकिन मैं ऐसे अपरिग्रह पर विचार रखता हूँ जिसे सम्पत्ति की मौलिक समझ के साथ स्वीकार किया जाये। गरीब व्यक्ति के लिए संतोष या अपरिग्रह
धारण करना किसी ज्ञानी का परिणाम हो सकता है, पर उसकी समझ का परिणाम वह तभी निकल पाएगा जब पहले वह सम्पन्न हो और तब त्याग के मार्ग को अपनाये।

गुरीब के लिए संतोष खतरनाक है और अमीर के लिए संतोष उसके जीवन की शांति और सम्पूर्णता के लिए सहयोगी है। गुरीब आदमी अगर संतोष धारण कर लेगा तो अपने जीवन की ऊँचाईयों का छुट्टे से बंचित रह जाएगा। अमीर आदमी अगर व्यर्थ की लालसाओं में पड़कर जीवन के अंतिम चरण तक भी पैसा ही पैसा करता रहा तो यह भी उसके लिए हानिकारक हो जाएगा। जो मार्ग गुरीब के लिए हानिकारक है, वही मार्ग अमीर के लिए फायदेमंद है। जो मार्ग अमीर के लिए हानिकारक है, वही मार्ग गुरीब के लिए फायदेमंद हो जाता है।

धरती पर रहने वाले हर व्यक्ति को अर्थ के लिए प्रयास और पुरुषार्थ अवश्य करने चाहिए। गुरीबी काम की नहीं है। हरेक को सम्पन्न होना ही चाहिए। अगर प्रश्नकर्ता का अभिप्राय धर्म-नीति से गुरीबी का दूर करना हो तो मैं कह देना चाहूंगा कि अकेले धर्म-नीति से गुरीबी को दूर नहीं किया जा सकता। धर्म एक पुरुषार्थ है लेकिन एकमात्र पुरुषार्थ नहीं है। धर्म-नीति के द्वारा अर्थ-पुरुषार्थ पर अंकुश तो लगाया जा सकता है, पर अर्थ-पुरुषार्थ के लिए एकमात्र धर्म-नीति ही काम नहीं है आ सकती। दुनिया की गुरीबी को मिटाने के लिए कभी माफ़ के और लेन-जैसे लोगों ने सामाजिक स्थान की फी जिसका दृष्टिकोण यह था कि गुरीब और अमीर एक समान रहें और समाज में समानता आ जाए। लेकिन उनका यह दृष्टिकोण असफल हो गया है। सामाजिक केवल धर्म ही नहीं बल्कि अर्थ भी, और अर्थ ही नहीं, धर्म भी समानता रूप से कार्य करें।

धर्मपूर्वक अर्थ कमाया जाए और अर्थ अर्जित करने हुए भी व्यक्ति धर्म का पवित्र विवेक रखे। प्रकृति के द्वारा हरेक को खंडप्रस्थ दिया जाता है जिसकी चुनौती यही है कि इस खंडप्रस्थ को इन्द्रधनुष में कैसे तब्दील किया जाए।

देश की-गुरीबी को दूर करने के लिए बुनियादी जरूरत तो यह है कि
ग्रामीण और आदिवासी जनता को शिक्षित किया जाए। जैसे-जैसे इस देश में पिछले पचास वर्षों में शिक्षा का विकास हुआ है, जैसे-जैसे गृहीबी कम-कम-कम हुई है। कोई आज की दशा पर संतोष करे या न करे लेकिन जिसने भी चालूस साल पहले की जिंदगी देखी हो, वह भली-भाँति जानता है कि उसके लिए पाँच रुपये का खर्च करना कठिन होता था लेकिन आज व्यक्ति पाँच सी रुपये आसानी से खर्च कर देता है। उसकी क्रयशक्ति बढ़ गई है। देश की अर्थव्यवस्था एवं बदली है, उसके तौर-तरीके बदले हैं और विकास के चुंबुमुखी द्वारा खुले हैं। माना कि गृहीबी आज भी है पर पहले की तुलना में कम है। पहले मिठी की कच्ची सड़कें होती थीं। अगर कोई भीलवाड़ा के राजमार्ग से गुजरना तो वह पाएगा कि यहाँ के राजमार्ग अब पाड़ड़ियाँ नहीं रहीं। वे विशाल राजमार्ग बन चुके हैं। पहले झोपड़ियों के रहने के लिए हर आदमी मजबूर था लेकिन अब तीस प्रतिशत जनता बमुखिकुल झोपड़ियों में रहती होगी। गाँव-गाँव में पके मकान बन गए हैं और संचार-क्रांति हुई है। गाँव-गाँव में फोन और मोबाइल पहुंच चुके हैं। रेडियो, ट्रांसिटर टो पुराने युग की बात हो गई है। अब तो दूरदर्शन ने अपने पहुंच बना ली है और ई-मेल और इंटरनेट का युग आ गया है। गाँव-गाँव में विद्यालय हैं और महाविद्यालय, तकनीकी संस्थान तक खुल रहे हैं। शासन और प्रशासन भी जागरूक हैं।

जब तक ग्रामीण जनता शिक्षित न होगी और जागरूक होकर अपने पिछड़ेपन का ल्याग नहीं करेगी तब तक गृहीबी दूर न हो सकेगी। मैं कहना चाहूँगा कि प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चों को श्रेष्ठ शिक्षा दें। लड़के-लड़कियों में भेद न करके लड़कियों को भी समानता का अधिकार दें। उन्हें उच्च शिक्षा दिलायें। जिन लड़कियों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है, वे अवसर मिलने पर अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर सकेंगी। यद्यपि यह संख्या न्यून हैं सिर्फ भी लड़कियों ने अपनी योग्यता से लड़कों को पीछे छोड़ दिया है। पिछले पचास सी वर्षों से यदि नारी जाति को शिक्षित करने के प्रयास किये जाते तो यह देश आर्थिक रूप से समृद्ध हो चुका होता। अभी तक तो केवल पुरुषों की ही भागीदारी रही है लेकिन पिछले वर्षों से नारी जाति भी आर्थिक समृद्धि में सहयोगी के रूप में उभरी है। हर माता-पिता अपनी बेटी को आत्मनिर्भर बनाए ताकि पुरुष जाति

वाह! सिन्धगी
अब नारी का और अधिक दमन न कर सके।

मैं चाहता हूँ कि आदिवासी, जन-जाति और ग्रामीण जनता को शिक्षित करने पर सर्वाधिक ध्यान दिया जाए। दूसरी बात कहूँगा कि न केवल शिक्षित किया जाय बल्कि उसे हुनर भी सिखाए जाएं। ऐसी हस्त-कला, शिल्प या लोक-कला जहाँ सिखाई जाए कि वह अपनी जीविका खुद चला सके। हरेक के लिए संभव नहीं है कि वह सरकारी नौकरी पाने में सफल हो जाए और न ही सरकार इतने अवसर उपलब्ध करा सकती है कि सभी को नौकरी मिल जाए। इसलिए शिक्षा रोजगार-मूलक होनी चाहिए। हाथ का हुनर सिखाया जाए। केवल कम्यूनल चलाना ही न सिखाया जाए बल्कि उसे कैसे ठीक किया जा सकता है, यह भी सीखें। कारपेंटरी सीखें, हरेक को शिक्षा के साथ कोई-न-कोई हुनर अवश्य आना ही चाहिए।

सीखें और सिखाएं भी। गरीबीं दूर करने का तीसरा उपाय है कठिन परिश्रम। यह हमारी बदकिस्मती है कि हम बच्चों को पढ़ने की प्रेरणा तो देते हैं लेकिन मेहनत करने की प्रेरणा देने में असफल रहते हैं। जो लोग अपने बच्चों को मेहनत करना नहीं सिखा पाते, वे उनके पौंडों को कमजोर कर देते हैं। बड़े बच्चों पर ऐसे बच्चे परिश्रम नहीं कर पाते। उनकी संघर्ष-क्षमता कम हो जाती है। परिणामस्वरूप उन्हें असफलताओं का सामना करना पड़ता है। अगर आप लड़की हैं तो माँ के काम में सहयोग करें, पुत्र हैं तो अपने कपड़े खुद धोएं। शिक्षा केवल यह नहीं सिखाती कि आप चोरीस घंटे पढ़ाई करते रहें बल्कि वह तो यह सिखाती है कि आप अपने कार्य करने में स्वयं समर्थ बनें।

जब आप दुकान जाएं तो अपने पुत्र से भी कहें कि वह दुकान में आए। उससे कहें कि जब वह स्कूल से लौट आए तो शाम के समय दो घटें दुकान पर आकर बैठें। ऐसा करने से बच्चा आपके व्यापार से बाकिए होगा। बच्चों को अपना काम खुद करना सिखाएं। उन्हें ऐसा पीढ़ा न बनाएं कि जिनमें पानी दिया जाए तो ही वह पलटवित हो। उसे जो जंगल का ऐसा पीढ़ा बनाएं जिसे कोई पानी देने वाला न पहुँच तब भी वह कुदरत से अपने पानी की व्यवस्था खुद कर ले।

देश की गरीबी केवल बातें कर लेने से दूर न होगी। बच्चे को आम खाने ऐसे मिटेंगे, देश की गरीबी।
की इच्छा हो रही है तो उसे छीलना, काटना सिखायें। वह खुद भी सुधार कर
खाएगा और आपको भी खिलाएगा अन्यथा जीवन भर आपको बच्चे की
gुलामी करनी पड़ेगी। बच्चे को समर्थ बनाएँ, मेहनती बनाएँ।
कंच्छे-कंच्छे मिले हुए हैं, कदम-कदम के साथ हैं,
पेट करोड़ों भरने हैं, पर उनसे दुरुपन हाथ हैं।
ऊँचे लक्ष्य बनाओ, ऊँचे सपने देखो और सपनों को पूरा करने के लिए
kठोर परिश्रम करो। जिन्दगी में कोई सफलता मुफ्त में नहीं मिलती। चंद्रा भले
ही मिल जाए, पर घंधा नहीं मिल सकता। घंधा करने के लिए तो परिश्रम
करना ही होगा। बिना मेहनत के देश की गृहीती हो क्या, पर की गृहीती भी दूर
न होगी।

मैंने सुना है : एक रेस्तारेंट में एक व्यक्ति पहुँचा। वहाँ के मैनेजर ने पूछा
‘तुम कौन सा भोजन करना चाहोगे, शाकाहारी या मांसाहारी?’ उसने सोचा
‘रोज तो शाकाहारी भोजन करता हूँ, आज मांसाहारी भोजन ही कर लूँ।’ उसे
एक टिकट दिया गया और कहा, ‘आप ऊपर चले जाइए।’ अपर पहुँचा तो
होल में एक आदमी और मिल गया। उसने पूछा, ‘आप खाना खाने तो आए
हैं, पर बैठकर खाना पसंद करेंगे या खड़े-खड़े?’ उसने सोचा, ‘घर में तो रोज
बैठकर ही खाता हूँ आज शुक्र का मूर्ति भी ले लूँ, खड़े होकर ही खा लेता हूँ।’
उस व्यक्ति ने उसे एक पत्ती और दे दी और कहा, ‘आप दाहिने हाथ वाले रूप
में चले जाइए। वहाँ खड़े-खड़े खाने की व्यवस्था है। जब वह उस रूप में
पहुँचा तो एक आदमी इधर भी मिल गया। उसने पूछा, ‘साब नगद देकर
खाएँगे या उधार रखकर।’ आदमी ने सोचा, ‘नकद देकर तो रोज ही खाता हूँ।
आज उधार वालों में खा लेता हूँ।’ उस बंदे ने एक पत्ती और ढाई और कहा,
भाई। यह जो सामने वाला गेट है, उसमें से अंदर चले जाओ।’ गेट पर कर
जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि वहाँ तो सीढ़ियाँ हैं। उन सीढ़ियों से उत्तर कर नीचे
पहुँचा तो उसने पाया कि वह तो सड़क पर पहुँच चुका है।

मुफ्त का खाना चाहोगे तो ऐसा ही होगा। दुनिया में किसी को भी मुफ्त
में कुछ नहीं मिलता है। व्यक्ति को कठिन परिश्रम करने का प्रयत्न अवश्य
करना चाहिए। चौथी बात कहीं कि प्रशासन लघु उद्योगों, घरेलू उद्योगों को
बाह! ज़िन्दगी
विकसित करने के लिए अधिक से अधिक प्रोत्साहन दे। लघु एवं घरेलू उद्योगों
को कस्तूर किया जाए। उनके लिए ऋण भी प्रदान करे और कम ब्याज पर
ऋण दे। ये छोटे उद्योग व्यक्ति को आत्म-निर्भर बनाएं। सरकार बढ़े उद्योगों
के लिए तो ऋण प्रदान करती है, ज़मीन देती है। आदमी फिर उन कम्पनियों में
नौकरी करने के लिए मजबूर हो गया न? माना कि एक कम्पनी के बनाने से दो
हजार लोगों को रोजगार मिलता है, लेकिन जिस दिन वह कम्पनी बंद हो जाए
तो दो हजार लोगों के परिवार बदहाल स्थिति में आ जाएंगे। ऐसी स्थिति में
यह ज़रूरी है कि लोगों को प्रोत्साहन दिया जाए। अगर दो हजार लोगों को
ऋण दिया गया और उनमें से दो सी लोग असफल भी हो गए तो अठारह सी
लोग अपने पाँवों पर खड़े हो ही जाएंगे।

अगर आप चाहते हैं कि धर्म-नीति द्वारा देश की गरीबी कैसे दूर की
जाए? तो मैं आपको बताना चाहूँगा कि धर्म-नीति यह प्रेरणा देती है कि वह
एक संविभाग अवश्य करे। महावीर और गांधी ने अपग्रह का सिद्धांत दिया
था। व्यक्ति परियों के लिए, उससे दूर रहे। जहाँ तक मैं देखता हूँ महावीर का
यह सिद्धांत समाज पर पूरी तरह से लागू नहीं हो पाया। इसी सिद्धांत से
प्रेरणा लेकर माक्स और लेनिन जैसे लोगों ने साम्यवाद की स्थापना की थी।
फिर भी जो आदमी अमीर है, वह अमीर है और जो गरीब है, वह गरीब है
इसलिए मैं कहना चाहूँगा कि मानवता को सहयोग देने के लिए एक हिस्सा
ज़रूर निकालें। हर व्यक्ति पर समाज का और मानवता का ऋण है। इसीलिए
मैं कहता हूँ कि अपनी आय का ढाई प्रतिशत ज़रूर अलग निकाल दें। हर
व्यक्ति जाने-अनजाने कुछ कमाई ऐसी ज़रूर ही करता है जो मैतिकता और
ईमानदारी से नहीं होती है। इस रूप में वह मानवता का शोषण ही करता है।
हम पर इस शोषण का पाप न चढ़े, इसके लिए एक संविभाग अवश्य निकालिए।

अपने प्रारंभ और पुलिसर्च से हम जितना अर्जित करते हैं, उसका एक
हिस्सा माता-पिता को, एक हिस्सा पत्नी और बच्चों के लिए, एक हिस्सा
स्वयं के लिए और एक हिस्सा परोक्षक, सेवाकर्म के लिए खर्च करें। अगर
गरीबी हटाना है, अहिंसा और मैत्री धर्म की जीना है तो हर समुद्र व्यक्ति एक
गरीब आदमी को आत्मनिर्भर बनाने के लिए गोद लें। किसी को देना नहीं
ऐसे मिटेगी, देश की गरीबी।

१७९
है बल्कि अपने हाथ से खर्च करना है। अगर आर्थिक रूप से आप अधिक सक्षम नहीं हैं तो आप अपनी जिस कला में, फन में माहिर हैं या शिक्षा में रंच रखते हैं तो किसी एक को एक वर्ष में अपने फन से शिक्षित अवश्य कराएँ।

बच्चों को, बड़ों को जिसको भी सिखा सकते है, आप ज़रूर सिखायें। जब आप किसी को सिखाते हैं तो अनायास ही आप उसके गुरु हो जाते हैं।

पारस्परिक सीजन्य से भी हम गृहीती को दूर कर सकते हैं। अपंग, विकलांग और दृष्टिहीन भी कुछ-न-कुछ करने में समर्थ हैं। एक प्यारी-सी पहल стрा है।

एक पोस्टमैन किसी एक घर के दरवाजे पर दस्तक देता है और कहता है, ‘बेबी, तुहारे नाम की चिड़ी आई है, उसे ले लो। बेबी ने कहा, ‘आई!।’

तीन-चार मिनट तक कोई न आया तो डाकिया फिर चिह्नाया, ‘अरे भाई, मकान में कोई है क्या, अपनी चिड़ी ले लो।’ आवाज मुनकर लड़की को लगा कि ज़रूर यह कोई नया डाकिया आया है जिसे कुछ पता नहीं है। उसने कहा, ‘डाकिया साहब, दरवाजे के नीचे से अंदर चिड़ी डाल दीजिए, मैं आ रही हूँ।’

डाकिये ने कहा, ‘नहीं, मैं खड़ा हूँ, रजिस्टर्ड चिड़ी है, साइंट डरावा के वापस ले जाना है।’ वह बच्ची तेजी से चलकर आई फिर भी साइंट मिनिट तो लग ही गए। उसने धीरे से दरवाजा खोला। डाकिया अभी तक उस पर झड़ाया हुआ था लेकिन जैसे ही दरवाजा खुला, वह चौंक गया। उसने देखा कि एक अपाहिज़ कन्या जिसके दोनों पाँव ही नहीं थे, सामने खड़ी थी। डाकिया कुछ न बोला। वह तुषारप नए देखकर और उसके साइंट लेकर चला गया।

हफ्ते, दो हफ्ते में जब कभी उस लड़की के लिए डाक आती, वह डाकिया आता, चिड़ी के लिए एक आवाज़ देता और जब तक वह बच्ची न आती तब तक खड़ा रहता।

एक दिन बच्ची ने देखा, बहुत तेज धूप पड़ रही है और डाकिया नंगे पाँव आ रहा है। उसने महसूस किया कि डाकिये के पास ज़ुबत या चपल पहनने को नहीं है। दीपावली नज़दीक आ रही। उसने सोचा कि इस दीपावली पर डाकिये को क्या इनाम दें, क्योंकि कुछ इनाम तो ज़रूर देना ही है। वह सोचती रही। एक दिन डाकिया जब उसकी चिड़ी डालकर चला गया तो वह धीरे-धीरे सीड़ियों से उतर कर नीचे आई और ज़हाँ मिठी पर

बाह ! ज़िंदगी
डाकिये के पाँव के निशान बने थे, उन पर कागज रखकर उन पाँवों का चित्र उतार लिया। अगले दिन उसने अपने यहाँ काम करने वाली बाई से उस नाप के जूते लाने का आग्रह किया। उसने मिठी की गुड़क में जमा किये पैसे देकर बाई से जूते मांगवा लिये।

दीपावली के अगले दिन जब डाकिया आया तो उसने गली के सब लोगों से तो इनाम मांगा और सोचा कि अब इस बिटिया से तो क्या इनाम लेना? पर गली में आया हूँ तो उससे मिल ही लूँ। उसने दरवाजा खटखटाया, ‘अरे, बिटिया, मैं आ गया हूँ।’ ‘कौन?’ ‘बही तुम्हारा डाकिया।’ बालिका बाहर आई और उसके हाथ में एक गिफ्ट पैक था। उसने डाकिये से कहा, ‘अंकल, मैं भी आपको दीपावली पर एक भेंट देना चाहती हूँ।’ डाकिये ने आलम रंग से कहा, ‘तुम, अरे तुम तो मेरे लिए बेटी के बाराबर हो, तुमसे मैं गिफ्ट कैसे लूँ?’ ‘नहीं, डाकिया अंकल, आप मेरी इस गिफ्ट के लिए मर्यादा नहीं करें। ‘ठीक है’ कहते हुए डाकिये ने पैकेट लेकर लिया। ‘अंकल इस पैकेट को यहाँ नहीं बल्कि घर ले जाकर खोलना।’ लड़की ने कहा।

घर पहुँचकर डाकिये ने यह सोचते हुए कि मुझे प्यार करने वाली उस विकलांग बच्ची ने आखिर क्या दिया है, वह पैकेट खोलने लगा। पैकेट के खुलते ही वह विस्मित रह गया क्योंकि उसमें एक जोड़ी जूते भेंट किए गये थे। वह खुद को रोक न पाया, सीधा पोस्ट ऑफिस पहुँचा और पोस्ट मास्टर से फरियाद की कि तुरंत उसका ट्रांसफर कर दिया जाए। पोस्टमास्टर ने कहा, ‘अचानक क्या हो गया? तुम्हारे प्रति किसी की शिकायत नहीं, हम भी तुम्हारे काम से संबंध हैं, फिर क्यों तुम्हारा ट्रांसफर किया जाए? ’ पोस्टमेन ने वे जूते टेबल पर रखते हुए सारी कहानी सुनाई और कहा, ‘आज के बाद मैं उस गली में नहीं जा सकूँगा। उस अपाहिज बच्ची ने तो मेरे नंगे पाँवों को जूते दे दिये पर मैं उसे पाँव कैसे दे पाऊँगा?’

देश की गरीबी को दूर करने का एक उपाय और है : देश में शराब के ऊपर पूर्ण प्रतिक्रिया लगा दिया जाए। जब तक देश में शराब रहेगी, कोई आबाद न हो सकेगा। भाग्य से अगर आबाद हो भी गए तो यह शराब हमें बर्बाद कर देगी। जिस घर में व्यक्ति शराब पीता है वह व्यक्ति तो खोलकर होता ही है ऐसे मिटेगी, देश की गरीबी 89
साथ ही साथ घर को भी खोखला कर देता है। शायद तालाब में दूबकर मरने वालों की संख्या कम होगी पर शराब की प्यारी में दूबकर मरने वालों की संख्या अधिक होगी। मजबूर मेहनत करके पैसा कमाना तो चाहता है, लेकिन शराब से दूर न रह पाने के कारण वहीं का वहीं रह जाता है। वह बच्चों को पढ़ा नहीं पाता, बच्चे दर-दर की ठोकरे खाने को मजबूर हो जाते हैं, पत्नी चौका-बर्तन करके जो कुछ कमाती है, उसे भी वह हड़प लेता है।

शराब ने लोगों के नजरिये को बदल दिया है। आज का युवा मौज-मस्ती के लिए शराब पीने लगा है। धीरे-धीरे वह मस्ती व्यसन में बदल जाती है और शराब व्यक्ति को पीने लगती है। उसे शराब ही ईश्वर नज़र आती है। मैं सरकारों को सलाह देना चाहूँगा कि देश के जितने भी टूट स्टेट हैं, उनकी पूंजी या आय का पच्चीस प्रतिशत हिस्सा मानव-सेवा के कार्यों के लिए अनवरत: खर्च किया जाए, ऐसा अधिनियम बना दें। उन संस्थों और महत्त्वों से भी, जिन्हें धन-सम्पत्ति रखने की कीवूट है, अनुरोध कहूँगा कि वे अपने जीवन में त्याग की यशोगाथा को जोड़ते हुए मानवता की सेवा के लिए धन अर्पित करें। बैंकों में तो उनके करोड़ों रुपये जमा हैं लेकिन वे किस काम के, अगर उनका मानवता के लिए उपयोग न हो सके? अगर उनके पैसे किसी सदृशहस्त के पास अथवा स्वयं के पास रह कर भी किसी के शुभ निवार्त के लिए नहीं हैं तो उनके उन पैसों का क्या उपयोग? दोनों ही स्थितियों में धन बेकार हो गया। फिर क्यों न उसका सदृशयोग कर ले। कोई अस्पताल, कोई विद्यालय या ऐसी कोई परोपकारी संस्था का निर्माण करवाएं जो भले ही तुम्हारे नाम से हो तो भी उनसे कत्याण-कार्य तो हो ही जाएगा। किसी ऐसे बैंक की स्थापना की जाए जिसमें धार्मिक ट्रस्टों का पैसा जमा हो और उसमें से निर्धन व जस्तरमंड को आत्म-निर्भर बनाने के लिए पैसा दिया जा सके। हर समाज अपनी-अपनी बैंक स्थापित कर ले और अपने समाज के कत्याण व उत्थान के लिए काम करे। जब हम सामूहिक प्रयास करते हैं तो देश व समाज की सीमा दूर होगी और हम एक सुख-सम्पत्ति देश व समाज की रचना कर सकेंगे।

दूसरा प्रश्न है: इस अध्यात्म-प्रधान देश में नित्यप्रति उपदेश और पूजा-अर्चना होते रहते हैं। भागवत, रामायण और युगुंग्रंथ साहब का वाचन भी
होता आ रहा है, पर इसके बावजूद दिनों-दिन आम जन-मानस का नैतिक पतन बढ़ता जा रहा है। कहते हैं कि धर्म की हानि होने पर महापुरुष का जन्म होता है, तो क्या अभी जो हिंसा का तंदव नृत्य हो रहा है, क्या यह कम है? क्या इसके और अधिक बढ़ने ही पर महापुरुष अवतार लंगे?

(बाबूलाल पानगढिया)

अगर धर्मशास्त्र यह व्यवस्था देते हैं कि जब-जब धर्म की हानि होती है और धर्म का पहलवन होता है तब-तब भावान धर्म की संस्थापना के लिए अवतार लिया करते हैं। यदि यह वात सच है तो मैं कहना चाहूँगा कि हमारे लिए वर्तमान संस्थापन यह क्योंकि अभी भगवान ने अवतार नहीं लिया है।

इसलिए कहा जा सकता है कि मनुष्य अभी नैतिक रूप से उत्तर पत्तित नहीं हुआ है जितनी कि ईश्वर अपने अवतार के लिए कल्पना करते हैं। इसलिए हमारा वर्तमान हमारे लिए संस्थापन है। ऐसा नहीं है कि पतन के दरवाजे आज ही खुले हों। सच्चाई से यह है कि धरती पर कभी ऐसा वक्त रहा ही नहीं है जब मनुष्य के द्वारा अपनी नैतिकताओं का अतिक्रमण नहीं हुआ हो जब वर्तमान तो अतीत का परिचारक है, पुनर्जीवन है। मनुष्य वे गलतियाँ नहीं दोहराता जो उसने अतीत में की हों। इसलिए जो वर्तमान हमें उपलब्ध है, वह बीते हुए कल का एक नया और सुधार हुआ रूप है।

मनुष्य की यह पुरानी आदत है कि वह अतीत को हमेशा गरीमापूर्ण मानता आया है और वर्तमान की हमेशा उपेक्षा करता रहा है। आखिर मनुष्य के काम तो वही आएँगे जो आज हमारे पास उपलब्ध हैं। ऐसा नहीं है कि लोग आज ही शाराब पीते हों, आज ही प्रशाचार करते हों, बलात्कार करते हों। अतीत में भी ऐसा होता आया है। मुझे तो लगता है अतीत आज से भी बदतर था क्योंकि समाज में नारी को हार-बाजार में खड़ी करने को सरेराम बेच दिया जाता था। इनसे को गुलाम बनाकर ताज़िज़ी उसके साथ पशुवत व्यवहार किया जाता था। इतना ही नहीं, एक-एक व्यक्ति के दस-बीस पत्तियाँ होती थीं। नारी का भरी सभा के बीच चीर-हरण भी होता था। आप इसे प्रतीक मानें।

महाभारत, रामायण, भागवत, गुरु-ग्रंथ में आये प्रसंग और दृष्टांत भी तो प्रतीक ही हैं। उस वक्त ही जब राजसभा में चीर-हरण हो सकता था तो आम व्यक्ति की हालत क्या वही होगी? वर्तमान अपने पर गौरव करे कि आज ऐसे मिटेंगी, देश की गरीबी।

83
जो उसकी स्थिति है, वह अतीत से कहीं बेहतर है।

जिस अतीत को हम केवल गरिमा और महिमा बखानने के लिए आधार और आदर्श मानते हैं, में कहना चाहूँगा कि अतीत में गौरव अवस्था रहे होंगे, मानवजाति के लिए मील के पत्थर भी स्थापित किये गये होंगे, दीपशिखाएँ भी जलाई गई होंगी। लेकिन वर्तमान ने अतीत से जो कुछ सीखकर अपने लिए नये आदर्श और नये व्याख्या स्थापित किये हैं, हमारे लिए वे ज्यादा कारगर हैं।

इसलिए वर्तमान आपके लिए सुखदायी है और हम इस पर गौरव करना सीखें। हम केवल अतीत पर ही नहीं बल्कि वर्तमान पीढ़ी पर भी गौरव कायम करें। आज की पीढ़ी बहुत धार्मिक है। कोई यह कहने का पाप न करे कि वर्तमान पीढ़ी धर्म से हट चुकी है। वर्तमान युवा पीढ़ी युगान्तरी पीढ़ी के दक्षिणात्यी विचारों को, बातों को स्वीकार नहीं करती। वह जीवन के साथ वास्तविक मूल्यों को जीना चाहती है, इसलिए आपको विरोधाभास लगता है। 
जितना दान आज हो रहा है उतना पिछले पाँच हजार वर्षों में भी नहीं हुआ होगा। जितने अस्पताल और विद्यालय का निर्माण आज हो रहा है, उतने कभी अतीत में नहीं बनाए गए थे। अतीत में किसी नगर में दो पाँच नगर-सेट छोड़कर रहते थे, जो कहीं भी खराबाला, कहीं कुंसू या इसी तरह के दो-चार नए काम आपजन के कल्याणार्थ कर देते थे। पर आज हर नगर में ऐसे सौंदर्य नगरसेठ वैसा ही कल्याणकारी काम करते नज़र आ जाएँगे।

जिस महिला के पास पहले दस-बीस स्थ़्रयं महिना भी हाथ-खर्च नहीं हुआ करता था, आज हर महिला के पास दो-पाँच-दस हजार हाथ-खर्च का आयाम से मिल सकता है। आज नारी बहुत आजाद हुई है, उसका बहुत विकास हुआ है। मानव-समाज का भी बहुत विकास हुआ है। शिक्षा, विज्ञान, सुख-साधन-समृद्धि ने इसमें पदद की है। जितना तप आज की पीढ़ी कर रही है उतनी तपस्या मेरी समझ में आज तक कभी नहीं हुई होगी। आज एक माह के उपवास और तपस्याएँ करना लोग बाएं हाथ का खेल समझते हैं। पहले तो कोई ऋषि, मुनि, तपस्वी ही एक-एक महीने का उपवास किया करते थे किन्तु आज तो नवरात्रि के नौ दिनों तक अंकड़ा निराहार, निर्जल उपवास करने वाले हजारों हजार लोग मिल जाएँगे। पर्चूण पर्व पर आठ-आठ दिन के उपवास

वाह! जिन्दगी
करने वाले, चार्मास के दरमयान तीन-तीन दिन का ‘तेला’ करने वाले हजारों- 
लाखों लोग उपलब्ध हो जाएँगे। आप वर्तमान पीढ़ी पर गौरव करना सीखें।

वर्तमान पीढ़ी को प्रोत्साहन न दिये जाने के कारण, उसे लगातार दुःखारे 
जाने के कारण ही वर्तमान पीढ़ी धर्म से दूर होती जा रही है लेकिन वह धार्मिकता 
से दूर नहीं हुई है। उसे लगता है कि बादी मंदिर में दो घटे बिताती है पर घर में 
बहुत कंजूसी से जीती है। उसे लगता है ममता धार्मिक स्थानों पर जाकर तो 
एक घटे तक प्रार्थना, सामाजिक आदि करती है पर घर में आते ही होहठा शुरु 
कर देती है। उसे लगता है कि धर्म जीवन में आ नहीं रहा है। बच्चे को लगता 
है चित्त में समता रखना ज्यादा ठीक है बजाय कुछ बोलने या न बोलने के।

आज गली-गली में मंदिर बन रहे हैं या मंदिर हैं। क्या आप उसे मामूली 
बात समझते हैं? यह मनुष्य की धार्मिकता है। जब तक भीतर में धार्मिक 
भावना नहीं होगी, मानवीय मूल्य न होंगे तब तक व्यक्ति जब से पैसा निकालना 
पसंद नहीं करता। जब आप कहते हैं कि पूरी दुनिया स्वार्थी है तब भी कोई 
व्यक्ति यदि पैसा निकालकर दे रहा है तो जान लीजिए कि उसके मन में कोई- 
न-कोई भावना जहर है। यहाँ भीलवाड़ा में सतंबर का आयोजन चल रहा है 
और रोज़ पाँच-से-दस दफ्तर लोग हमें मुनने आ रहे हैं। यहाँ पर कोई प्रभावना, 
न लड़ू की, न नारियल की, न धन की, न प्रसाद की हो रही है फिर भी लोग 
आते हैं और प्रेम से सुनते हैं और चले जाते हैं। यह वर्तमान पीढ़ी की धार्मिकता 
है। फ़र्क़ूँ केवल इतना सा है कि किसी बात को जब तक तार्किकता के साथ 
सिद्ध नहीं किया जाएगा, कोई भी व्यक्ति धर्म की किसी भी परम्परा को मानने 
वाला नहीं होगा।

आने वाली पीढ़ी का धर्म बिलकुल नया होगा। उसके लिए धर्म का 
स्वरूप पूरी तरह से व्यावहारिक होगा। वह केवल पंथ, परम्पराओं के दुराग्रह 
का धर्म नहीं जिएगा। वह पूर्वा चाहेगा कि यह जो किया जा रहा है इसका 
तक्ष क्या है? तुम कहोगे, ‘रात को मत खाओ।’ मान तो तुमने कहा, लेकिन 
यह नई पीढ़ी ऐसे नहीं मानने वाली। जब तक उसकी आवश्यकता, मानव- 
समाज के कल्याण के लिए उसका हेतु समझ में नहीं आएगा तब तक व्यक्ति 
उन बातों को नहीं जी पाएगा। लोग हमारी बातों को क्यों सुनते हैं? क्योंकि 
ऐसे भिटेगी, देश की ग़रीबी 85
हमारे पास धर्म है, पंथ नहीं? हमारे पास जीवन की शैली है, रोजमर्रा का दर्द नहीं। लोग जीने की कला चाहते हैं।

धर्म की वे ही बुनियादी बातें समाज को दी जानी चाहिए जो जीवन जीने की कला से जुड़ी हैं। हर पंथ, परम्परा, धर्म, जाति, कौम के लोग यहाँ बैठे हैं। यह केवल समन्वय ही नहीं है अपितु यह मानव-समाज के द्वारा नैतिकता के प्रति, अपनी धार्मिकता के प्रति आस्था भी है। आप यह प्रश्न उठाते हैं कि धर्म की हामी होने पर महापूर्ण अवतार लेते हैं तो मैं गौरवपूर्वक यह बात कहूँगा कि हमारा वर्तमान अर्थसत्ता से अधिक श्रेष्ठ है। अगर ऐसा न होता तो भगवान अभी तक अवतार ले चुके होते। हम प्रसन रहें कि हम ऐसे गुण में पैदा हुए हैं जहाँ अभी ईश्वर के अवतार की जरूरत नहीं है।

मैं मानता हूँ कि नैतिक पतन हुए हैं। हम सभी के जीवन में नैतिक मूल्यों में कमी आई है, गिरावट आई है। हमारी न्याय-प्रणाली और न्याय होने की लंबित प्रक्रिया ने इस देश में नैतिक मूल्यों को कम किया है। जिस नैतिकता के लिए न्याय-प्रणाली स्थापित की गई है वह बहुत दुर और पीछे छूट गई है। न्यूटर्न का जीवन समाज हो जाता है पर न्याय नहीं मिल पाता। इसने हमारे नैतिक मूल्यों पर प्रसन-चिह्न लगाया कि न्यूटर्न आखिर क्या करें? फिर न्यूटर्न गुंडागर्दी का, आतंक का उपयोग करता है। बोटों की राजनीति के कारण भी हमारे देश में बहुत अधिक नैतिक पतन हुआ है। तुमने काम किया या नहीं किया, यह पूछने के जमाने चले गए, अब तो बोटों के लिए कुछ खास हथकड़े अपना लो, तुम जीतकर आ जाओ। अब जो चुनाव जीतता है, उसके प्रति यह विवाद करना मुश्किल है कि वह लोकतंत्र की व्यवस्था है या उसके चुनावी प्रवृत्ति(1) का परिणाम है। चुनाव में अगर उसने पाँच लाख खच्चिये हैं तो जब तक पाँच करोड़ घर में न आ जायें, वह चुप बैठने वाला नहीं है।

भोग-विलास की तृष्णा मनुष्य के भीतर इतनी बढ़ी है कि जिसके कारण हर न्यूटर्न अपने जीवन में सुख-साधन पाना चाहता है। मैं इसका विरोध नहीं करूँगा। हर न्यूटर्न को समृद्ध होना चाहिए। इस देश के मुर्गे से मुर्गा बनने चाहिए। इस देश के गरीब से गरीब न्यूटर्न को भी अर्थ-समृद्धि सृजन करें। समृद्ध न्यूटर्न कम पाप करता है जबकि गरीब अधिक पाप करने पर उतारू होता है। असमर्थ क्या करेगा? वैसे भी हम वाह! ज़िन्दगी
पूरी दुनिया को नहीं सुधार सकते हैं लेकिन एक-एक व्यक्ति स्वयं सुधार जाए तो पूरी दुनिया अपने आप सुधार जाएगी। मेरा तो मानना है कि एक जलते हुए चिराग के पास और दस चिरागों आ जाएं और वे ज्योतिर्मिन हो जाएं तो सौभाग्य है। दुनिया के सारे बुझे हुए चिरागों को जलाना किसी एक व्यक्ति के वश में नहीं है।

नैतिक मूल्य हमें अपने साथ जोड़ने चाहिए। मैं यह सलाह तो नहीं दूंगा कि आप किसी को रिश्वत न दें, पर यह नियम तो ले ही सकते हैं कि हम किसी से रिश्वत नहीं लेंगे। काम तो निकालता है न, व्यक्ति को प्रेक्षित करना चाहिए। केवल आदर्श की बात नहीं कही जानी चाहिए। यथार्थ भी जीवन का एक सत्ता है और सत्य यही है कि देना पड़ेगा तो दे देंगे पर लेंगे नहीं। इस नियम को लेने से देश में आ रही नैतिक गिरावट थम जाएगी। ऐसी प्रारंभिक क्यों करें कि भगवान अवतार लें। हाँ, ऐसी प्रारंभिक करें कि हे भगवान, हमें सदृढ़ दो दो कि हमारी ओर से कभी धर्म की हानि न हो। हे प्रभु! मुझे उन बातों को स्वीकार करने का धैर्य दो जिन्हें मैं बदल नहीं सकता। उन बातों को बदलने की हिम्मत दो जिनें मैं बदल सकता हूँ और इन दोनों के अन्तर को समझने की बुद्धि दो। कुछ नियम अपनाएं तो धर्म की हानि नहीं होगी और ईश्वर को अवतार लेने के लिए कष्ट भी नहीं उठाना पड़ेगा।

‘मैं छल-प्रपंच नहीं कहँगा, कोई करें तो करें पर मैं नहीं करूँगा।’
‘मैं सादगी से जिंज़ुँगा।’
‘मैं अपने घर के विवाह-समारोह आदि सादगी से करूँगा। सत्संग के आयोजन भी सादगी से सम्पन्न करूँगा।’

हम समझते हैं कि सारे लोग चीर हैं पर क्या हम यह मानते हैं कि आप खुद ईमानदार हैं।

इसे यह समझें- एक पत्नी ने पति से कहा, ‘क्या आप बताएंगे कि यह सारा जमाना चार सी बीस क्यों हो गया है और सभी छल-कपट क्यों करते रहते हैं।’ पति ने कहा- ‘भगवान, अब इतना क्यों चिंता रहता है। आँख बता तो सही कि बात क्या है? पत्नी ने कहा- ‘क्या बताऊँ, आज सबह दूधवाला ऐसे मिटेगी, देश की गुरीबी।
मुझे खोटी चचन्नी दे गया।’ पति ने कहा- ‘एक चचन्नी के लिए अपना दिमाग क्यों खराब कर रही है? ठीक है, वह भूल से दे गया होगा। अब इतना चिढ़ाने के बजाय वह चचन्नी मुझे दे दें। मैं तुम्हें दूसरी दे दूंगा।’ पत्नी ने जवाब दिया- ‘वह चचन्नी? अरे दस बजे सब्जी वाला आया था वह तो मैंने उसे दे दी।

हम अपनी आन्तरिक स्थिति को पहचानें और जानें कि कहाँ क्या खोट है? उसे सुधारें।

अगला प्रश्न है: भगवान, आप जागरण की बात करते हैं, जबकि हम संसारियों को सोना ही अच्छा लगाता है। तो फिर जीवन जागता अच्छा है या सोया हुआ?

मैं जानता हूँ कि आपको सोना अच्छा लगाता है। हकीकत यह है कि धरती पर तीन तरह की प्रवृत्ति के लोग होते हैं—मूर्चित, स्वनिल, और जाग्रत। मूर्चित अवस्था में रहने वाले लोग अज्ञान के कारण हैं। अज्ञान और मूर्चित एक ही सिकंदे के दो पहलू हैं। अज्ञान से मूर्चित का और मूर्चित से अज्ञान का जन्म होता है। किसी भी व्यक्ति को सोना इसलिए अच्छा लगता है क्योंकि वह मूर्चित है। कोई भी धर्म के किनारे आकर भी स्वयं को धर्म से न जोड़ पाएँ तो जान लें कि वह मूर्चित है और कोई भी बात उसके दिमाग में प्रविष्ट नहीं हो पा रही है। ऐसी प्रकृति के लोग जिस कान सुनते हैं उसी से बाहर निकाल देते हैं।

कुछ स्वनिल प्रकृति के लोग होते हैं जिनके एक कान में कुछ पुसता तो है और वह कुछ दे तक अंदर भी रहता है, किन्तु दूसरे कान से वह बाहर निकल जाता है। कुछ ऐसी जागरत-चेतना के लोग भी होते हैं जिनके कान से सीधा अंदर चला जाता है। वे ग्रहण करने के भाव से बैठे हैं। इसीलिए सीधा अंदर चला जाता है। मूर्चित अंदर ग्रस्त लोगों के लिए ही हमारे जीवन के जागरण के संदेश हैं। पाएगा तो व्यक्ति स्वयं। मैं तो रोज़-ब-रोज़ चार चुढ़ू पानी ले आता हूँ, सोये हुए व्यक्ति पर छिटा डालता हूँ। कुछ लोग उन छींटों को पाकर जग जाते हैं, वे खड़े होकर अपने रास्ते चल देते हैं। कुछ लोग अंगड़ाइयाँ लेते हैं और वापस सो जाते हैं। पर कुछ मूर्चित प्रकृति के ऐसे लोग भी होते हैं जिन पर बाल्टी भी गिरा दो, तो भी वे कुंभकर्ण की तरह सोये ही रहते हैं,

बाह! जिन्दगी
क्योंकि उनको सोना ही अच्छा लगता है।

कभी दुयोधन ने कहा था—‘जानामि धर्ममु: न च मे प्रवृत्ति:, जानामि अधर्ममु: न च मे निवृत्ति: अर्थात् यद्यपि मैं धर्म को जानता हूँ फिर भी धर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाता। मैं अधर्म को भी जानता हूँ फिर भी उससे निवृत्त नहीं हो पाता।’ क्यों? मृच्छा है। एक धृतराष्ट्र भीतर बैठा हुआ है। मृच्छा का अंधापन, अज्ञान का अंधापन मनुष्य पर हारी है इसलिए सही बात उसके दिमाग़ में उतर नहीं पाती। अगर किसी पर शानि हावी हो तो चाहे जितना कहो कि शानि महाराज की माला जपो, पर वह नहीं जपता क्योंकि शानि महाराज उसे ऐसा करने ही नहीं देते। यथासे जैसे लोग हजार वर्ष का जीवन जीकर भी, एक हजार रानियों का उपभोग करके भी, एक हजार महलों में रहकर भी, एक हजार संतानों को जन्म देकर भी मुक्त नहीं हो सकते। और यथासे का बेटा पुरुष अपने पिता की तृणा को समझ-समझ कर ही मुक्त हो जाता है। नौ से तक वही छोटा बेटा अपनी आत्महत्या देता रहा। आंखें दरवरी बार जब मीठा आई तो उसी छोटे बेटे ने कहा, ‘अंतिम बार मरने से पहले मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ।’ यह प्रश्न पिता से नहीं एक मूर्चित व्यक्ति से था, एक तृणा-ग्रस्त, भोग-विलासिता में जख़्मी हुए व्यक्ति से किया जाने वाला प्रश्न था।

उसने कहा, ‘बाबा, सच-सच बताओ कि हजार वर्ष जीकर, अनेक भोगोपभोग करके भी क्या आपका मन तुम्हारा हुआ है?’ पिता ने कहा, ‘बेटा तुमसे क्या छूट बोलना! तुम तो मेरे लिए मरने को तैयार हो। सच्चाई यही है कि जो तृणा, जो विलासिता की भावना, जो मृच्छा आज से हजार वर्ष पहले थी, वही आज भी है।’ आज भी उसी वही अच्छा लग रहा है जैसे संसारी लोगों को सोना अच्छा लगता है। बेटे ने कहा, ‘मृत्यु, मेरे पिता नहीं जानते कि अब तक उनके लिए कुर्बानी देने वाला कौन व्यक्ति रहा, लेकिन मीठा तुम तो जानती हो कि वह व्यक्ति में ही हूँ जिससे अब तक दस बार अपने पिताओं के लिए जीवन दिया। हर बार मरते वक्त मेरे मन में यह जिज्ञासा और यह व्यास रहती थी कि मेरे पिता ने तो कितनी ही राजरानियों का भोग किया किन्तु मैं तो एक का भी नहीं कर पाया। फिर मेरा इस जीवन को पाने का क्या अर्थ हुआ? हर बार मैं अपने प्रश्न को अधूरा लिये ही चला गया लेकिन मृत्यु, आज तृप्त होकर ऐसे बिटेगी, देश की गृहरी।
तुम्हारे साथ चल रहा हूँ। क्योंकि मुझे आत्म-ज्ञान हो गया है कि मेरे पिता एक हजार वर्ष की जिज्ञासा में तृप्त न हो पाए तो यह पुरुष सौ साल की जिज्ञासा जीकर कैसे तृप्त हो जाएगा?

कहते हैं कि यह बात सुनकर यथाति की आँखें खुल गईं और एक मूर्छ्याग्रस्त व्यक्ति जागृति की अवस्था में आ गया। आज मैं भी आप लोगों से कह देना चाहूँगा कि अस्सी साल के होकर भी अगर आप तुम्प न हो सके तो मैं कौनसा तृप्त हो जाऊँगा? इस्लिए आज जो भी है, जैसा भी है, मैं तृप्त हूँ। मन तो वही है। शरीर बुझा हो जाता है, पर किसी का मन बुझा होता है क्या? इस्लिए मस्त रहना सीखो। हर हाल में खुशाल।

कुछ लोग सपनों में पड़े रहते हैं, विचारों में खोये रहते हैं। वे दिन-रात सपने देखकर रहते हैं। दिन में ध्यान देखते हैं कि यह करता है, वह करता है, रात में सपना देखते हैं कि जे टाटा, बिड़ला, अंबानी हो गये हैं। तभी पत्नी जागा देती है तो पता चलता है कि वे वर्षों बिस्तर पर पड़े हैं। ऑफ़ तो किसी-किसी की खुलती है। जैसे कोई प्याऊँ पर पानी पीता है बूक लगाकर तो आधा भीतर जाता है आधा बाहर ही छिटक जाता है। जो आधा भीतर गया वह कुछ न कुछ काम कर ही जाता है। मुझे पता है कि जो आधा भीतर गया है, वह कुछ न कुछ काम जरूर करेगा। यदि आप हकीकत से परिचित हों तो आप जान जाएगे कि जीवन-मूर्तियों को प्राप्त करने के लिए जाग्रत अवस्था में चेतना की जो आध्यात्मिक दशा उपलब्ध होती है, वह मुपुर्ण अवस्था में नहीं हो सकती।

लोग सपने देखते हैं। सपने सभी को आते हैं। दिन में शेखरियती के सपने आते हैं, रात में घराले सपने आते हैं।

एक बार तीन दोस्त घूमने निकले। बगीचे में पड़ेकर उन्होंने अपने लिए नाशता-खाना बनाया। खीर बनाई, अन्य दूसरे व्यंजन भी बनाए, खाए-पिए और सांझ उसी बगीचे में ठहराए गये। खीर बहुत बन गई थी सो खाने के बाद भी बच गई। अब उसे कौन पीए? विचार विचार, ‘रख देते हैं, चाँदनी रात है, खराब नहीं होगी, कल पी लेंगे।’ पर मुनह पिएगा कौन? तो निर्णय हुआ कि जो रात को सबसे अच्छा सपना देखेगा, उसे ही खीर मिलेगी। अब रात में तीनों सो गए। खीर का कटोरा ढका रखा था। मुनह उठे तो आपस में कहा कि

१०

वाह! जिज्ञासी
सपना सुनाओ।

एक ने कहा, ‘क्या बताओ, रात को सपने में महादेवजी आए थे। वे मुझे कैलास पर्वत पर लेकर गए। पार्वती माँ ने मुझे गोद में बिठाकर कहा, ‘भेटा बहुत बड़ा हो गया है अत: यह खिर का कटोरा तुझे ही पिलाओ।’ अब उस खिर पर मेरा अधिकार होता है क्योंकि माँ पार्वती का आदेश हो चुका है।

दूसरे ने कहा, ‘तेरा सपना तो कुछ भी नहीं है, मेरा सपना सुन। रात को रामजी आए थे। उन्होंने कहा, ‘मैं तो चौदह वर्ष के लिए वनवास जा रहा हूँ। तुझे अयोध्या की राजगद्दी सौंप जाता हैं। उन्होंने मेरा राजतिलक किया और कहा, ‘सबसे पहले खिर ही पीना। तो अब इस खिर पर तो मेरा अधिकार है।’

दोनों व्यक्ति आगे बढ़ने लगे तो कटोरे की ओर देखकर तीसरे ने कहा, ‘ठहरो भाई, मेरा सपना भी तो सुन लो। दोनों ने पूछा, ‘बताओ, तुम्हारे सपने में क्या हुआ?’ उसने कहा, ‘रात मेरे सपने में हनुमानजी आए थे। मैं तो आपांम से सोया था कि उन्होंने तीन-चार सोटे लगा दिए और बोले, ‘खिर खो।’ मैं तो डर रहा था तो जोर से बोले, ‘खिर हो।’ वे बोले, ‘कटोरा खोल।’ मैंने कटोरा खोल दिया तो बोले, ‘पी। ‘पी लिया सा’व। ‘क्या कहता है, दोनों ने एक साथ कहा। ‘सपना तो आप दोनों का ही अच्छा था’ तीसरा बोला, पर क्या करें, हनुमानजी आए थे।’

पाता वही नहीं है जो जाग्रत होता है, खोटा वही नहीं है जो सोया रह जाता है।

अब आप खुद निर्णय कर लें कि सोया हुआ जीवन अच्छा है कि जागता हुआ। खिर का कटोरा पीना है तो जागना ही होगा। जिंदगी में खिर के कटोरे की अगर चिंता नहीं है तो सोये रहो, खोये रहो, डूबे रहो। मूर्च्छिल्ली व्यक्ति तो वैसे भी सोया हुआ ही रहता है। जागे तभी सवेजा। जो जब जग जाता है, तभी जीवन में सूर्योदय हो जाता है।

आप जो पूछते हैं कि जीवन जागता हुआ अच्छा होता है या सोया हुआ? तो मैं कहना चाहूँगा कि जागना ही अच्छा है लेकिन जो रिश्वतकार हैं, जो चारी करते हैं, छल-प्रांच करते हैं, व्यभिचार करते हैं उनका सोना ही अच्छा है। नैतिक और ईमानदार लोगों का जागना अच्छा है जबकि बेईमान, अनैतिक लोगों का हमेशा सो जाना ही अच्छा है। भगवान करे, ऐसे लोग सदा सोए रहें या सदा के लिए सो जाएं। जाग्रत तो वे लोग रहें जो धार्मिक हैं, नैतिक ऐसे मिटेगी, देश की गुरीबी।

९९
हैं जिससे विश्व को अपेक्षा है, जो प्रेम, शांति और खुशहाली को फैलाने में सहयोगी हों। आज के समाज का यह बहुत बड़ा दायित्व है कि वह प्रेम और शांति के तंत्रों को जगत में विस्तार करे। यदि आप अपनी चारदीवारी तक सीमित रह गए तो में बेहिस्स कहूँगा कि आपने बातां समय इतना खतरनाक होगा जो आपको नहीं बचा पाएगा। कोई घातक विस्फोट हो, उससे पहले अहिंसा, शांति, प्रेम, कर्मण में आस्था रखने वाले हर धर्म और पंथ, संत और ग्रंथ को पूरे विश्व में फैला देना चाहिए। हिंदू, जैन, बौद्ध धर्म के मानवीय मूल्यों को सामाजिकता के शिकारों से बाहर निकालकर पूरे विश्व तक फैल जाने का ताकि वह विश्व-प्रेम और शांति के झरनों को अपने देश और समाज के लिए कुछ सुकून उपलब्ध करा सकें। वैलगाड़ी की चाल से आप कब तक चलते रहेंगे? जब सारा विश्व हवाई-जहाज से भी अधिक तीव्र गति से चल रहा हो तो तुम वैलगाड़ी से कहाँ तक पहुँच पाओगे?

महापुरुषों ने धर्म का जन्म, धार्मिक मूल्यों का जन्म गिने-चुने लोगों के लिए नहीं किया है बल्कि पूरे संसार के कल्याण के लिए किया है। धर्म और पंथ को विराट होना चाहिए। नजरिया, सोच ज्यों-ज्यों विराट होंगे, त्यों-त्यों आप अपने आपको विराट करते चले जाएंगे। प्रबुद्ध और उपशांत होकर हर व्यक्ति अपना यह कर्तव्य निभाए।

चौथा प्रश्न है: बच्चों को सुधारने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

(योग्यता जागिर्दः)

बच्चे तो भगवान के अवतार होते हैं। उनमें तो भगवान का शिशु-रूप छिपा होता है। जैसा आप अपने घर का माहील रखेंगे, बच्छ बैसा ही सीखता जाएगा। इसका जब किसी बच्चे को भेजता है तो अच्छा बनाकर ही भेजता है। फूर्त्र केवल इस बात का है कि आपके घर के माहील से बैसे ही बच्छ का निर्माण हो जाता है।

बच्चे तो पानी की बूंद की तरह हैं। जैसा पात्र मिलेगा, बैसा ही बनेगे। बारसात का पानी सर्प के मुंह में जाएगा, तो जहर बनेगा और सीप के मुंह में जाएगा तो मोटी बनेगा। पानी के लिए जैसा पात्र, बैसा परिणाम। घर का माहील भी पात्र की तरह है। बच्छ अच्छा हो, इसके लिए जरूरी है कि आपके

वाह! ज़िन्दगी
घर का माहौल अच्छा हो, नेक हो, प्रेमपूर्ण हो।

बच्चों को संस्कार देना है तो पहला काम उन्हें स्वालम्बी और अनुशासनप्रिय बनाने का करें। ‘कान खोलकर सुन लें, चुनूं भर पानी में डूब मर, दफा हो जा मेरी आँखों से, नालायक कहीं का’, इस तरह की कर्कश भाषा न बोलें। बच्चा तुलालाई तो उसे चिड़ाए नहीं। भाषा को सुधारने की प्रेरणा दें। आजकल शादी-ब्याह की पत्रिका में एक लाइन ज़रूर छपी मिलती है- ‘मेले चाचू की सादी पे जलूल आना! ’ भले ही लोग इसे मज़ाक में लिखते हों, पर यह स्वस्थ परम्परा नहीं है। कोई तुललाता बोलता है, तो बड़े कहते हैं, ‘बोल जूता!’ बच्चा बोलता है ‘तूता।’ बड़े कहते हैं ‘बोल रोटी।’ वह बोलता है ‘लोटी।’ तभी आप उद्धरण करते हैं, यह तोतू है, चोटू नहीं। क्यों भई तोतू? तुललाता बच्चे की कमज़ोरी भी है और मज़बूती भी पर अपने बारे में तोतू सुनना बचने की मानसिकता को हुज्जाबालित करता है।

अगर आपका बेटा टोप नहीं कर रहा है तो उसका कान न मगरीए। अपनी महत्वाकांक्षा की हम्मली करने का जिम्मा उस पर मत डालिए क्योंकि आप भी टोप पर नहीं आए थे। जो आप न कर सके उसकी आकांक्षा बच्चे से पूर्ण करने की अपेक्षा न रखिये। अपने घर में स्वस्थ बातचीत रखिये। अगर आप शोरगुल करते हैं तो बच्चा भी आपको देखकर ही ऐसा कर रहा है। कहीं-न-कहीं से तो यह भाव उसके भीतर आया ही है।

फिर भी उसे कुछ सिखाना ही है तो उसे मारो-पीटो मत। पिटकर आज तक कोई बच्चा नहीं सुधरा है। आप उसे प्यार से समझाएं। प्यार से बढ़कर कोई, अमानत नहीं होती, प्यार से बढ़कर कोई दौलत नहीं होती, प्यार से बढ़कर संस्कार देना का कोई स्वरूप नहीं होता। काणे को काणा कहें तो उसे बुरा लगता है। घमंडी को घमंडी कहने से, क्रोधी को क्रोधी कहने से बुरा लगता है। इसलिए माता-पिता को चाहिए कि वे पहले आदर्श प्रस्तुत करें। बच्चे तो गीली मिट्टी के समान हैं। उन्हें आदर्श प्रदान करना तो आपके हाथ में है। आपमें अगर दुर्व्यसन हैं तो बच्चे निर्व्यसन कैसे ਰह पाएंगे? आप उन्हें उनके उत्तरदायित्व का अहसास कराईए, उन्हें सही मार्गदर्शन दीजिए। उनकी प्रतिभा को पहचानकर उसके विकास में सहायक बनिए। उन्हें समझ विकसित ऐसे मिटेगी, देश की ग़रीबी। ९३
करने का भौतिक कारण है। बच्चों को सुधारने के लिए सही दिशा-निर्देश दीजिए।
उन्हें अच्छी-अच्छी उपदेशाएँ कहानियाँ सुनाएँ।

बच्चों के प्रति लापरवाही नहीं करने के कारण बच्चे बिगड़ते हैं। बच्चों को बेजा लड़-प्यार देने के कारण भी बच्चे बिगड़ते हैं। हम खुद बिगड़े हुए होते हैं,
इसलिए बच्चे बिगड़ते हैं। सच्चाई तो यह है कि पहले माँ-बाप बिगड़ते हैं, फिर
बच्चे बिगड़ते हैं। जोर्ज वाशिंगटन की माँ ने, बेटे के द्वारा झूठ बोले जाने पर
कहा कि ‘झूठे की माँ कहानी की बजाय मैं दयालु कहानियाँ ज्यादा पसंद
करूँगी।’ जहाँ ऐसी सजगता है, वहीं संस्कृत रहते हैं। हमारी स्थिति यह है कि
आपके बच्चों के माता-पिता के बगैर था फल-फूल दोर्ड। पड़ोसी शिक्षा लेने को आई तो आपने कहा, ‘मेरा बेटा ऐसा कर ही नहीं सकता। जरूर कोई भूल
हुई है।’ भीतर बैठे बेटे को प्रतिसांवर मिला। उसे लगा कि गलती कर भी ठूका
तो कोई बात नहीं। ठूंट नहीं पड़ती। ऐसी स्थिति में आपका कर्तव्य होता है
कि आप अपने बच्छे के अभ्यास व्यवहार पर अंकुश लगाएँ।

बच्छा निर्देश पर देवता करे, तो तिल-पुढ़ किए। पेशेवर करवाकर
फिर सुनता एँ। आदर्श छूट जाएँ। बच्चों में बाजारी खाना खाने की आदत न
पड़े, इसके लिए उन्हें स्कूल जाते समय साथ में फिटिंग दें और टिफिन में वही
खाना दालें जो उनकी मनपसंद का हो।

पढ़ाई से बच्छों का मन न उठते, इसके लिए जरूर यह है कि आप उन्हें
मातृभाषा में शिक्षा दिलाएँ, उनके संचार विषय भी दिलाएँ। असली
सहित्य, भड़कीले टी.वी. चैनल और अन्यावहारिक फैशन से बच्छों को
बचाएँ। अंकुश रखें कि आपके बच्चे दुनिया की देखा-देखी ज्यादा तंग और
भड़कीले बच्छे न पहन। ऐसे बच इंसान की यौन-भावनाओं को भड़काएँ है।
गुलत सोहबत और नशे से बच्छों को बचाएँ। वे जो कुछ महत्वपूर्ण बातें मैंने
कहीं हैं, इनकी अनुपालन के लिए जरूरी है कि बच्छों को सुधारने से पहले
आप अपने आपके, घर के माहौल को सुधार लें। अच्छा बोलिए, अच्छा
खाइये, अच्छा पहिनये। अच्छे लक्ष्य बनाइये और बच्छों को उनके जीवन के
अच्छे लक्ष्य दीजिए। तात्कालिक हमेशा दो हाथों से बजेगी। ठोड़ा उन्हें सुधारिए,
थोड़ा आप खुद सुधारिये।
पूज्यश्री, मैं हीनभावना से ग्रस्त रही हूं, मुझे हमेशा हिचक रहती है। अभी भी आत्म-विश्वास नहीं बन पा रहा है। आपको सुनने से मुझे राहत मिली है। शायद आपसे मेरा समाधान हो जाए।

(शिल्पा अरोड़ा)

मनुष्य का जीवन प्रकृति से मिला हुआ अनुपम वरदान है। हरेक का जीवन प्रकृति के घर से इतना असाधारण होता है कि उसके सामने धरती की हर सम्पदा साधारण हो जाती है। यदि व्यक्ति अपने ही जीवन पर ध्यान दे तो उसे यह जानकर आश्चर्य होगा कि धरती का हर प्राणी, हर इस्तान सम्पत्ति होकर पैदा होता है। यदि हम किसी को एक आँख देने को तैयार हो जाएँ तो इसके लिए एक लाख रुपए मिल सकते हैं। यदि दोनों देते हैं को तैयार हो जाएँ तो वह घर लाख भी मिल सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपनी एक किडनी देने को तैयार हो जाए तो इसके बदले उसे दस लाख मिल सकते हैं और दोनों किडनी देते हैं तो बीस लाख भी मिल सकते हैं। प्रकृति के घर से मनुष्य को इतनी सम्पदा भी मिली हुई रहती है कि अगर वह स्वयं का ही मूल्यांकन करे तो अन्तर्में पतलने वाली हीनता की ग्रंथि तत्काल मिट सकती है।

हीनता के भाव जीवन के समस्त मानसिक रोगों की जड़ है। हीनता के कारण विद्यार्थियों विद्यार्जन नहीं कर पाता, व्यापारी अपने व्यापार में सफल नहीं हो पाता, गृहिणी मर्यादित और गरिमापूर्ण व्यवहार नहीं कर पाती। जब-जब मनुष्य अपनी योग्यताओं को आंकेगा, अपनी क्षमताओं को समझने की कोशिश करेगा तब-तब उसके भीतर से हीनता की ग्रंथि मिटेगी और आत्म-विश्वास जाग्रत होगा। जब कोई भी व्यक्ति अपनी योग्यताओं को कम आंकता है या जीवन के प्रति गलत धारणा बना लेता है तब ही उसके भीतर हीनता के भाव, हिचक, संकोच और नुभुनकता जन्म लेती है। जो अपने आप पर विश्वास रखता है, वही वास्तविक आस्तिक होता है।

गीता में भगवान कृष्ण ने निरंतर सात सी छपन श्लोक कहते हुए अर्जुन के भीतर उपन्यास हीनता की ग्रंथि को ही दूर करने का प्रयास किया था। क्या है

ऐसे मिटेगी, देश की गुरीबी ९५
हीनता, हीन-भावना और हीन विचार? जब अर्जुन ने कृष्ण रूप सारथी से कहा कि इस महायुद्ध में वह गांडीव धनुष नहीं उठा सकता। अपने ही बन्धु-बांधवों के खिलाफ शर्त उठाने में उसके हाथ काँप रहे हैं तब कृष्ण ने अर्जुन को निरंतर एक ही प्रेरणा दी कि ‘तुम अपने हीन-भावों को निकाल पैको, हृदय की तुच्छ दुर्व्ययता का त्याग करो। हे पार्थ! तुम्हें यह नष्ट करना शोभा नहीं देती। आओ, मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम अपना गांडीव उठाओ। तुम हर डगर पर ईश्वर को अपने साथ पाओगे।’

जिस वहन ने यह प्रसन पूछा है, उससे मैं कहना चाहूँगा कि आप ईश्वरीय सम्पदा और प्रकृति के घर से मिलने वाली सम्पदाओं को समझने की कोशिश करें। आपका आत्मविश्वास आप में लौट आएगा। तुम्हारी हिंचक मन की कमजोरी है जिसके कारण तुम हमेशा संकोचशील बनी रहती हो। आदर्शी के भीतर हीनभावना निर्भरता के कारण या जाति के कारण या आत्म-निर्भरता न होने से भी निर्मित होती है। अगर आप गरीब घर में पैदा हुए हैं तो यह कोई पाप नहीं है, गुलत काम नहीं है। गरीबी से अगर कुंठत हो गये तो जीवन में कुछ भी नहीं कर पाओगे। हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तथा दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री गरीब घरों में पैदा हुए। वर्तमान राष्ट्रपति डॉ. अबुल कलाम भी निर्धन परिवार की पैदाइश है। अपने बचपन में वे इमली के बीजों को एकत्रित करके बेचते और पादयु-पुस्तकें खरीद कर पढ़ते थे।

गरीब घर में पैदा होना गुलत नहीं है जबकि अपने मन को गरीब कर लेना अवश्य गुलत है। शरीर से विकलांग होना गुलत नहीं है पर अपनी मानसिकता को विकलांग कर लेना निर्थित ही गुलत है। मानसिकता के विकलांग होते ही हीन विचार, हीन भावना बननी शुरू हो जाती है। वहीं अगर आपने कुछ कर गुजरने का संकल्प बना लिया तो आपकी हिंचक हमेशा के लिए हट जाएगी। अमरीकी राष्ट्रपति लिंकेन भी गरीब घर में पैदा हुए थे। दुनिया में किसी की भी सात पीढ़ियाँ अमीर नहीं रहा करता। हरेक की जिंदगी में कभी अमीरी आती है तो कभी गरीबी। हीन भावना स्वयं के द्वारा स्वयं को दिया गया सबसे बड़ा अभिशाप है। यह कुशारापात है और अपने ही पाँव पर अपने ही हाथों से मारी गई कुलहाड़ी।

६६

वाह! ज़िन्दगी
शारीरिक असुंदरता के कारण भी हीन-भावना न पनपने दें। यह शरीर
tो प्रकृति-प्रदत्त है। कला-गोरा रंग हमारा परिणाम नहीं है। चमड़ी को देखकर
जो व्यक्ति हीनभावना से ग्रस्त होता है, वह इतने अधिक का कदर नहीं करता।
वह चमार होकर केवल चमड़ी का ही नृत्यांकन करता रहता है। आप अपने
असौंदर्य के कारण अपने भीतर हीन-भावनाओं को स्थान मात दीजिए। जीवन
में वह सुंदर नहीं है जो बाह्य शारीरिक रूप से सुंदर है बल्कि सुंदर वह है जो
सुंदर विचारों के साथ सुंदर कार्य करता है। जीवन को सुंदर रंग देना आपके
हाथ में नहीं है, लेकिन उसे दंग देना आपके हाथ में है।

सुक्रात बहुत ही बदसूरत थे। उनका चेहरा चेहक के दागों से भरा था,
लेकिन अपने महानु विचारों के कारण आज भी उन्हें महानु दार्शनिक के रूप में
याद किया जाता है। उनकी भगवानु से यही प्रार्थना थी कि ‘हे प्रभु! तू से इस
शरीर को भस्म होकर बनाया हो। तुम्हारे अनुश्रवण से यह सन्नति दिये
रखना जिससे मैं अपने हृदय को सुंदर बना सकूू।’ हिंदी के महानु कवि
मलिक मोहम्मद जायसी एक आख़िर से ही देख सकते थे, लेकिन उनके काव्य
ने भिड़कर दिया कि प्रकृति ने अगर कुछ असूंदर बना भी दिया तब भी इसनि
चाहे तो स्वयं को गरीबापूर्ण बना सकता है, सुंदर रचनाएँ कर सकता है। सूर
जिनके भजन हम गाते-गुणगुनाते हैं, वे तो नेत्रहीन ही थे। नेत्रवाले तो भुला
भी दिये जाते हैं लेकिन जब नेत्रहीन कुछ कर गुजरने का संकल्प अखिलवार कर ले
तो वह भी आने वाले कल के लिए आदर्श बन सकता है।

कृपया, हीन-विचारों से ग्रस्त न हैं। हीनता और हीन-भावना हमारे
अपने मन की कमजोरी के ही परिणाम है। आप अपने संकल्प से इस ग्रंथि पर
विजय पा सकते हैं। एक सुंदर-सी घटना है–

हम किसी घर में मेहमान हुए। धीरे-धीरे वह परिवार हमारे करीब आता
गया। एक दिन मैंने उस घर की महिला से पूछा, ‘बहिन, एक बात बताओ।
आप इतनी सुंदर हैं, पड़ी-लिखी हैं, और आपके पति काले रंग के हैं, नाक भी
जरा मोटा दिखाई देता है, चेहरे तो अच्छा है। आखिर आपने इन्हें पसंद कैसे
किया होगा? क्या कारण है? कहीं ऐसा तो नहीं है कि आपके माता-पिता ने
लड़के को देखे बिना ही आपकी शादी तय कर दी हो और आपको मजबूरी में
ऐसे मिलेगा, देश की गरीबी
शादी करनी पड़ी हो। उस प्यारी-सी महिला ने जवाब दिया, ‘प्रभु, सच्चाई तो
तो यह है कि मैंने प्रेम-विवाह किया है।’ मुझे जरा आर्थर्च हुआ। इतनी सुंदर
महिला और एक नीग्रो टाइप लड़के से लव-मैरिज! उसने कहा जारी रखा,
‘मैं कॉलेज में पढ़ती थी। वहाँ कई लड़कों से मेरी दोस्ती थी लेकिन मैंने पाया
कि अन्ततः यही एक ऐसा युक्त मिला जिसकी प्रकृति, जिसका स्वभाव, मुझे
इतना सुंदर लगा कि मैंने उससे शादी कर ली।’

मैंने उस महिला को साधुवाद दिया जिसने सूरत नहीं बल्कि सीरत को
पहचाना। शाम के समय उसका पति भी आया जो कि एक डॉक्टर है। मैंने
उससे भी वही सवाल किया कि तुम इतने कार्यों, तक भी कुछ अजीब-सी
है। क्या आपको इतनी सुंदर पत्नी के मिलने पर आपको अपने मन में गिल्टी
फील नहीं होती?‘ उसने कहा, ‘महाराजजी, जब मैं छोटा था तो गलती-मोहहल्ले
के लोग मुझे ‘कालू-कालू’ कह कर पुकारते थे। लड़के मेरे साथ बैठना पसंद
भी नहीं करते थे। अपने साथ खेल भी नहीं खिलाते थे। उस समय जरूर मेरे
मन में बहुत गिल्टी की फील होती थी। बचपन के उन दिनों में ही मैंने संकल्प ले
लिया था कि प्रकृति के घर से मैं भले ही बदसूरत बनाया गया होऊँ, लेकिन
आज के बाद मैं इतना सुंदर बनूँगा, अपने हृदय को अपनी आत्मा को इतना
ऊँचा उठाऊँ गा कि आने वाला कल, मुझ पर गौरव कर सके। मेरा नाम
सम्मान के साथ पुकार सके। आज पूरे नागर में मेरा नाम है। मैं ऐसे केस आराम
से निपटा देता हूँ, जो दूसरे डॉक्टर के लिए मुक्किल होते हैं। सच तो यह है कि
मेरे स्वभाव और प्रकृति के कारण ही लोग आज मुझे इतना सम्मान देते हैं।

जिस बहिन ने यह प्रश्न पूछा है, उसे यही घटना कहते हुए प्रेम और
आदर से मैं यही कहना चाहूँगा कि आय अपने हृदय को इतना सुंदर बनाएँ,
अपने जीवन को इतना ऊँचा उठाएँ, अपनी दृष्टि को इतने आत्म-विश्वास से
भर जाने दे कि आपकी हिचक, आपकी हीनता के भावना आपसे दूर हो
जाए और ऐसा करने के लिए कल से आय एक प्रयोग जहर दे। वह प्रयोग
यह है कि आय पूरे मनुष्यों से मुस्कुराइए। आपकी मुस्कुराहट आपके अंग-
अंग से फूट पड़े। सुबह का यह विदायिन आपको पूरे दिन प्रसन्नता से भरा
हुआ रखेगा।

कभी कोई ऐसी छोटी-सी घटना भी घट जाती है जिसके कारण हम खुद को हीन महसूस करने लगते हैं। हम अपनी जिंदगी में नई फ़िज़ाएँ लेकर आएँ। केवल अपने मन को ठीक से समझ लें और आत्म-विश्वास को जाग्रत हो जाने दें। आप पाएँगे आपके मन की कुंडाएँ मिट चुकी हैं। धीरे-धीरे आपका कायाकल्प होने लगेगा। आप स्वयं की प्रकृति के सामने खुद रखें।

इस मूल स्वभाव और योग-विधि का सार है। समस्त किरदार पर्यायों में सभी धर्मों के साथ दस कानून बादाम भी खा सकते हैं। अच्छी फितारें परते। उन लोगों पर किरदार जिन्होंने आपने जीवन में ऊँचाईयों को छुआ है उस संदर्भ में हमारी अपनी कार्यक्रम किरदार है, उन्हें ले लें और उनका उपयोग करें। आपको चाहिए केवल पांचिकिनेस, अच्छी सोच, अच्छा दृष्टिकोण।

प्रश्न है - पूर्व के प्रारंभ और माता-पिता से मिलें हुए कुबुधि आदि संस्कार क्या समाप्त हो सकते हैं? मानव-जीवन की सफलता और आध्यात्मिक उत्तर के लिए मार्गदर्शन कराएँ। (कैलाश अग्रवाल)

किसी भी घर में बच्चे का जन्म लेना सौभाग्य की बात होती है, पर बच्चे का संस्कारयुक्त निर्माण करना किसी भी राष्ट्र के संचालन करने से भी कठिन होता है। शायद राष्ट्र का संचालन सरल होता होगा, लेकिन अपने घर में बच्चे को पाल-पोस कर उसे समाज के बीच इज़वार जिंदगी की जिंदगी जीने के लिए काफिल इन्सान बनाना कठिन होता है। नारी अर्थात मातृत्व इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वह अपने बच्चे को ऐसे संस्कार देकर समाज और देश के बीच जीने के कार्यक्रम बनाती है।

एक तो पूर्व के प्रारंभ से ही व्यक्ति अच्छी-बुरी बातों या अच्छे-बुरे संस्कार लेकर आता है और दूसरे सबसे घर का माहौल और वातावरण उसे बनने या बदलने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे समझ-एक गर्भवती महिला ने अपनी सही से कहा, ‘क्या बताओ? जैसे-जैसे मेरा गर्भ बढ़ रहा है, मुझे विचित्र विचित्र इच्छाएँ होने लगी हैं।’ उसकी दूसरी सही ने पूछा, ‘ऐसी क्या ऐसे मिटेंगी, देश की ग़रीबी’
इच्छाएँ होने लगी हैं?’ गर्भवती महिला ने कहा, ‘कभी इच्छा होती है कि सिगरेट पीऊँ, कभी इच्छा होती है कि शराब पीऊँ। तब उसकी सहेली ने कहा, शर्त लगाए, तब तो तुझे लड़का ही होगा। ‘मतलब?‘ ‘मतलब यही कि ऐसे भाव, ऐसे विचार जिनके मन में आते हैं वे विचार पूर्व के प्रारंभ से इस्मान की जन्म लेने वाली संतान के संस्कारों के कारण उठा करते हैं।

हम केवल माहील को ही दोष न दें। पूछने वाले ने पहले ही समझ लिया है कि वह ऐसे संस्कार पूर्व के प्रारंभ से लेकर आया होगा। फिर जैसा माहील बनता है, घर में बच्चा भी वैसा ही बनता है। अगर माता-पिता अपने बच्चे को संस्कार-युक्त न बना पाएँ तो वे अक्षम हैं। उन्हें अपने दायित्व निभाने चाहिए, अपने कर्त्तव्य आवश्यक निभाने चाहिए। अगर आप सिगरेट पीते हैं तो आज नहीं तो कल आपका बेटा सिगरेट अवश्य चीएगा, नहीं पीएँ तो वह अवश्य ही पूर्व के अच्छे प्रारंभ को साथ लेकर आया है। अगर आप गैरम खेलेंगे तो बच्छा भी गैरम खेलेगा और ताश खेलेंगे तो बच्छा भी ताश ही खेलेगा। ऐसा हुआ—

एक व्यक्ति रिटायर हो गया। पहले जमाने में लोग रिटायर होते तो बच्छों को, पोतों को प्यार बाँटते, कहानियाँ सुनाते, उन्हें अच्छे-अच्छे संस्कार देते। अब तो टी.बी. का जमाना है। वे बैठे रहते हैं दिनभर टी.बी. के सामने। खैर, उन्हें टी.बी. का शौक न था सो दिन भर ताश खेलते रहते। एक दिन उन्होंने अपने छोटे पोते से पूछा, ‘बेटा, क्या तुझे गिनती आती है?’ उसने कहा, ‘हाँ, दादाजी आती है।’ ‘तो मुनाओ्।’ उसने कहा, ‘इका, दुगी, लिगी, चौका, पंजा, छका, सत्ता, अड़ा, नहली, दहली, गुलाम, बेगम बादशाह।

अगर घर में रात-दिन ताश चलेंगी तो बच्छों में बैसे ही संस्कार आएँगे। घर के माहील के लिए माता-पिता और अभिभावक नियंत्रण और लक्ष्मण-रेखाँ अवश्य रखें जिनसे आने वाला कल अच्छा हो सके। अगर बच्चा कुबूलि अल्पमान, अध्यात्म-रहित, जीवन की मर्यादा और संस्कारों से बचित है तो इसका कारण माता-पिता का बच्छे की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देना ही है। यह भी संभव है कि गलत सोहबत से, बुरे असर से वह न बच पाया होगा।

१००
बाह! जिन्दगी
१. अच्छी पत्नी
२. अच्छी संतान और
३. अच्छा मित्र।

घटिया सोच वाले लोगों से हमेशा दूर रहो। तुम्हारी जिंदगी में कॉटे बोने वालों से हमेशा दूर रहो। समाज को ऐसे लोगों से बचाया जाए जिनकी सोच और नज़रिया घटिया है। अश्लील साहित्य मंत्र पढ़ो। अपनी कुबुद्धि को दूर करने के लिए अश्लील साहित्य से बचो। अभ्यास व्यवहार से बचो। दुर्योंसनों से बचो। सिगरेट, गांजा, चरस, अफीम, हेदॉन ये सब ऐसे दुर्योंसन हैं जो व्यक्ति को आउट ऑफ काबूल कर देते हैं। आज हमारे देश में सर्वधिक नुकसान शराब से हुआ है। शराब व्यक्ति का विवेक समाज कर देती है। वह पत्नी के प्रति पत्नी का व्यवहार नहीं करवाती, बच्चों के प्रति बच्चों का व्यवहार नहीं रहने देती। नतीजतन इंसान, इंसान नहीं रहता। वह जानवर बन जाता है। जिस गांव में विद्यालय नहीं होगा, वहाँ पर भी शराब की दुकान जरूर मिल जाएगी।

सिगरेट के विज्ञापनों में वैधानिक चेतावनी के रूप में पहली पंक्ति होती है, ‘सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।’ इससे कैसे हो सकता है। मुझे लगता है कि यह पढ़े-लिखे इस्लाम की कौम कितनी बुद्धि और बेवकूफ है और हम न जानें किस कुबुद्धि से जुड़ी है कि जो रोज पढ़ती है-कैसे होने की समझना-फिर भी रोज...। अनपढ़ और गंवार लोग बीड़ों पिये तो समझ में आता है लेकिन पढ़े-लिखे लोग शराब और सिगरेट में अपना जीवन होम देते।

ऐसे मिटेंगी, देश की गरीबी।

१०९
हैं तो उन्हें सलाह दूंगा कि वे फिर से विद्यालयों में जाएं और लिखना-पढ़ना सीखें। वे उन विद्यालयों में जाएं जहां जीवन के पाठ पढ़ाए जाते हों।

शराब और सिगरेट आपको व आपके घर को खत्म कर रही है। आपके बच्चे को गुलत संस्कार दे रही है। आजकल गुटखा खाने का फैशन चल पड़ा है। हमारे पास छः आठ चार्टेड अकाउंटेंट्स आये हुए थे। उनमें से एक को तलब आ गई। वह उठा, एक ओर गया, पाउच फाड़ा, गुटखा खाया और अपने साथियों को भी खिलाया। संयोग से वह खाली पाउच उड़कर मेरे पास आ गया। मैंने उसे उठाया। उस पर लिखा था- ‘वैधानिक चेतावनी-गुटखा खाने से कैंसर हो सकता है।’ मैंने उस पाउच को उस सी.ए. बन्धु को दिखाया। वह उठा और एक ओर जाकर उसने सारा गुटखा थूक दिया। उसने अपने साथियों से भी ऐसा ही करने को कहा। उन्हें शायद सुधरना था इसीलिए वह खाली पाउच उड़कर मेरे पास आ गया। इसके बाद उन सभी ने संकल्प लिया कि अब वे गुटखा नहीं खाएँगे। गुटखा खाना अब उनके लिए विश्व खाने के बराबर होगा।

अर्थलील साहित्य, दी.वी. के अभ्यास प्रोग्राम, घटिया फिल्में-इन सबसे बच्चे क्योंकि ये कुबुद्धि देते हैं। ऐसे कार्यक्रम, ऐसी फिल्में देखें जिन्हें सारा परिवार एक साथ बैठकर देख सके। संभल सके तो अभी संभलें। संभलने के लिए पहला काम यह करें कि जिजन-जिन बातों से जीवन पर बुरा असर पड़ता है, उन-उन से बचें। अच्छी किताबें पढ़ें। अच्छे लोगों से दोस्ती करें। घटिया फिल्म, अर्थलील कार्यक्रमों से स्वयं को बनाएं। आज की अच्छी सोच, दुःख संकल्प जिजिया भरे के लिए निर्मल बुद्धि बना सकती है। अपशाखों का प्रयोग न करें। शालीनता, प्रेम और मधुरता से बोलिये। जो अतीत का हुआ, वह तो गया, लेकिन आज के बाद अपनी कुबुद्धि और दुःख संकल्प को हटाने के लिए अच्छा व्यवहार करेंगे और सभी को सम्मान देने का प्रयास करेंगे। ऐसा करना आपके लिए और सभी के लिए कल्याणकारी होगा। आप केवल पिता की नहीं, मित्र और शिक्षक की भूमिका भी निभाएँ।

एक अच्छी संतान और एक अच्छे घर का निर्माण एक अच्छे समाज, अच्छे राष्ट्र और अच्छे विश्व के निर्माण की पहल है।

१०२

वाह! जिम्मेवार
अन्तिम प्रश्न : अनादि काल से साधु-संत विद्वान-गुणीजन और धर्मगुरु मनुष्य को मनुष्य बनाने का सतत प्रयास करते आ रहे हैं। परंतु हम उस काल से लेकर आज तक दृष्टि दार्लें तो पाएँगे कि सृष्टि में पाप, अनाचार, अनैतिकता, छल-प्रचंड आदि में बहोत हुई है। इसके बावजूद साधु-संतों के पास क्या कोई ऐसी निरापद व्यवस्था है कि इस सृष्टि को पापकमाँ से मुक्त एक आदर्श नैतिक स्थान बना सकें या इस बहोत हुए क्रम में कभी की जा सके?

(श्री देवीशंकर दशोरा)

प्रश्न का भाव यह है कि जाने कब से साधु-संत लोग दुनिया को सुधारने का प्रयत्न करते आ रहे हैं फिर भी दुनिया सुधर नहीं पाई। क्या कोई ऐसी व्यवस्था है जिससे समाज को बेहतर बनाया जा सके। मेरे प्रभु, सारा रूप में इतना सा निर्वेदन कहुँगा कि यह समाज, यह संसार साधु-संतजनों की वाणी की ऋणी है जो समाज व समग्र मानव-जाति के कल्याण के लिए अपने स्वार्थों का क्याहर तत्पर बनी हुई हैं। जब आप कल्याण कीजिए कि अगर दुनिया में संत-पुरुष न होते तो इस दुनिया का क्या हाल हुआ होता? जब इतने सारे त्याग और संतपुरुष मिलकर इस दुनिया के कल्याण के लिए प्रत्यनशील है तब भी अगर दुनिया सुधर न पाई, तो यदि ये संतजन न होते तो यह दुनिया चार दिन भी जीने के लायक नहीं रह पाती।

आज जब सब लोग स्वार्थ से भिड़े हुए हैं तब ये संतजन ही मनुष्य को मनुष्य के लिए कुछ करने की प्रेरणा दे जाते हैं। तब आदमी अपने स्वार्थों का त्याग करता है। ये विश्वास है कि वे व्यक्ति संतजनों के पास जाकर, सुधारते ही हैं जो स्वयं को सुधारने के लिए संकल्पनशील होते हैं। हम तो प्राणिमात्र को प्रेम व शांति का वह संदेश देना चाहते हैं जिससे आपका, समाज का, घर का, देश का और सारे संसार का वातावरण अच्छा हो सके, बेहतर हो सके। हो सकता है कि हम सारी दुनिया को न सुधार पाएँ, न बदल पाएँ लेकिन अगर हजार लोग भी नेक रास्ते पर चलने लगे तो क्रम-से-क्रम कुछ तो तैयार हुआ ही। कुछ तो बदले। अमृत-बिन्दु जितनों को मिली, उतने तो धन्य हुए।

ऐसा हुआ। एक व्यक्ति समुद्र के किनारे पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि
हजारों मछलियाँ सागर की तरंगों से किनारे पर आ गई हैं। वे वहाँ तड़प रही हैं क्योंकि पानी उनसे दूर चला गया था। वह व्यक्ति वहाँ पहुँचा और एक-एक मछली को उठाकर पुनः पानी में डालने लगा। उसने सी-दी सी मछलियाँ पानी में डाल ही दी। तभी वहाँ से जुंगर रहे दूसरे व्यक्ति ने कहा, ‘‘तुम मछलियों को उठाकर पानी में डाल रहे हो। इससे क्या फर्क पड़ेगा? मछलियाँ तो दूर-दूर तक बिखरी हैं, लाखों मछलियाँ हैं।’’ उस व्यक्ति ने कहा, ‘‘भाई, मुझे भी पता है कि इतनी सब मछलियों को में पानी में नहीं डाल पाएँगा, लेकिन जितनी मछलियाँ को डाल सकूंगा उतनी की तो जान वच जाएगी, उतनी का तो भला होगा।’’

जलता हुआ दीया अगर सी और दीयों को जलाएगा, तो पहले वाले दीये का तो कुछ नुकसान नहीं होगा। हाँ, सी और दीयक जल जाएँ तो फायदा जुड़ता होगा। दुनिया जितनी सुधरे, उतना ही श्रेष्ठ। संतों के हम ऋणी हैं। संत कोई अलग जमात नहीं है। वह हमारे ही समाज की परिवृक्त, उनका पीड़ा है। संत भी समाज की ही होताहै, पर वह समाज को होकर भी असामान्य कार्य कर रहा होता है। संत का समाज वास्तव में उसके असामान्य अवदानों का ही सम्बन्ध है।

आपका तो कोई व्यापार भी है लेकिन लोगों का भत्ता करना संतों का कोई धंधा या व्यापार नहीं है। वे स्वयं श्रेष्ठ जीवन जीते हैं और अपने आस-पास आने वाले हर किसी व्यक्ति को श्रेष्ठ जीवन जीने का बोध देते हैं। वे तो उस कुष्ठ की भौतिकता है जो उर्वर और पथरीली दोनों ही तरह की ज्वाला पर अपने बीज बोते हैं, हल चलाता है, निराश-सिंचाई करता है। कुछ बीज फलते हैं, तो कुछ निष्कल चले जाते हैं। जो फलते हैं, वे इतना आनन्द देते हैं कि निष्कल बीजों की कमी नहीं खटकती।

दुनिया में काफी कुछ सुधार हुआ है। लोगों की दृष्टि काफी सकरात्मक हुई है। जो अभी भी संकुचित, छोटी और दुराग्रह-पूर्ण सोच रखते हैं, बहुत जल्दी ही इसमें भी परिवर्तन आया। संत हो चाहे न हो, इसान स्वयं सजग हो रहा है। पीढ़ी ज्यों-ज्यों प्रबुद्ध हो रही है, त्यों-त्यों धामिक और आध्यात्मिक
मूल्यों की ओर आकर्षित हो रही है। भविष्य उज्ज्वल है। संतों को चाहिए कि
अब वे पूरी मानवता के हो जाएँ। वे एक परम्परा के ही नहीं बल्कि सारी
मानव-जाति के संत हो जाएँ। धरती पर यह उनका बड़ा उपकार होगा। सच्चमुच, ।
कैनवास को आप बिना बड़ा रखेंगे, आप उतने ही विराट चिन्त्र बना सकेंगे।।
छोटे कैनवास पर बड़े कार्यों की कल्पना ही नहीं की जा सकती। तुम जब तक
छोटी सोच रखेंगे, तुम निश्चित ही पिछड़े रहेंगे। कुएँ के मेड़कों को सागर
दीजिए, सागर की विराटता दीजिए।

साथ ही साथ लोकतंत्र की प्रबंधन-शैली में ही सुधार लाए जाने चाहिए।
वोटों की राजनीति ने माहौल को विकृत किया है। आप अच्छे लोगों को,
अच्छी प्रतिभाओं को आगे लाइये। हम अपने परिवार या समाज तक ही
अपने को सीमित क्यों रखें? सारा विश्व आपका है। आप सारे विश्व के हो
जाएँ। आप जहाँ भी हों, जहाँ भी रहें, आपकी खुशाबू दूर-दराज तक फैलनी
चाहिए। ऐसे जिओ, ऐसा कुछ करो। हकीकतों का सामना करो और निर्भयता
से कठिनाइयों से पार लगो। जीवन एक तपस्या है और जो व्यक्ति इस तपस्या
को उत्साह और ऊर्जा के साथ पूरी करता है, उसी का जीवन धन्य है, सफल
है, सार्थक है, उत्सवपूर्ण है।

अपनी ओर से इतना ही निवेदन है। आपके लिए अमृत-प्रेम भी है,
प्राणम भी है और आशीर्वाद भी। सत्कार्य और समार्ग-यही हो हमारा पंथ,
हमारा धर्म, हमारा कर्म।

सुखी रहिए, प्रतिपल आनंदित रहिए।

०००
संबोधि-धाम

[धर्म और जीवन-दर्शन का व्यावहारिक स्वरूप]

योग और साधना के क्षेत्र में संबोधि-धाम किसी पवित्र तीर्थ के समान है। धरती पर वे स्थान किसी श्रेष्ठ मन्दिर की समर्थन ही होते हैं, जहाँ मन की शान्ति और आध्यात्मिक सत्य की साधना होती है। संबोधि-धाम जोधपुर की कापलाना त्रिलोक और आध्यात्मिक सरोवर के समीप पर्वतमालाओं की गोद में स्थित एक ऐसा साधना-केन्द्र है, जहाँ अब तक बीस हजार से अधिक लोगों ने सत्य, शान्ति और मुक्ति की साधना की है। हर व्यक्ति शान्त मन का स्वामी बने, बोधपूर्वक जीवन जिजिए और मुक्ति को आत्मसात करें, संबोधि-साधना के सबके लिए यही पावन प्रेमण है।

संबोधि-धाम में प्रति सातार सवार रंगीर को नियमित ध्यानयोग सत्र आयोजित होते हैं और वर्ष में चार बार संबोधि-साधना के विशेष शिक्षक आयोजित किए जाते हैं। संबोधि-साधना के द्वारा प्राणीमत्र के लिए कुल हैं। यहाँ न जाति का भेद है और न पंथ का आयुष। सर्व धर्मों का समान और 'मानव स्वप्न एक मंदिर' की सद्भावना को लिए संबोधि-धाम जन-जन की सेवा के लिए समर्पित है।

संबोधि-धाम का हर-भरा वातावरण, यहाँ की शान्ति और नैसर्गिकता साधक को साधना की अनुकूलना प्रदान करती है। संबोधि-धाम के उन्नत शिक्षकों पर निर्मित ध्यान-मंदिर और अट्ठापन-मंदिर हमें हिमालय और माउंट आबू का अहसास देते हैं। मन-मलिष्ठक के रोगीपत्र के लिए यहाँ मनस् चिकित्सालय भी है, जिसमें जर्मनी और इंग्लैण्ड से आयोजित 'पुष्प-अर्क' के द्वारा सफल उपचार होता है।

साधकों के नियमित उपयोग के लिए यहाँ साधित केन्द्र, पुस्तकालय, आवास-कक्ष, भोजनशाला, पर्य-कुटीर, एकान्त-कक्ष आदि उपलब्ध हैं। मन की शान्ति, स्वास्थ्य-लाभ एवं आध्यात्मिक साधना हेतु आप यहाँ सादर आमंत्रित हैं।

श्री चन्द्रप्रभ ध्यान निलयम्

संबोधि-धाम, कापलाना रोड, जोधपुर-4 (राज.) फोन : 2709812

Jain Education International
For Personal & Private Use Only
www.jainelibrary.org
सुखवी और सफल होने का रास्ता

“अपने भाग्य के विधाता आप स्वयं हैं।”

प्रख्यात विद्वान एवं महान जीवन-दर्शा पूज्य श्री चन्द्रग्राम आपको सुखवी और सफल होने के वे अदभुत किन्तु आसान तरीके बता रहे हैं जिनसे आपका व्यविधत्व जीवन ही नहीं, सम्पूर्ण घर-परिवार भी स्वर्ग की तरह आनंदित हो सकता है।

इस सरल और प्रभावी पुस्तक में लिए गए उनके उद्देश्य आपको आपके जीवन का असली विजेता बनाएँगे। आपको वे परिणाम उपलब्ध होंगे जिन्हें पाकर आप कह उठेंगे–जिज्ञासु! एक अनमोल तोहफ़ा है।

जीवन के प्रति सकारात्मक नज़रिया विकसित हो जाए तो ‘आह! जिज्ञासु’ की पीड़ा भी ‘वाह! जिज्ञासु’ के सुख-संगीत में बदल सकती है। श्री चन्द्रग्राम आपको बताते हैं कि:

✔ घर की स्वर्ग कैसे बनाया जाता है।
✔ प्रेम की दहलीज़ पर कैसे बला जाए।
✔ बेहतर जीवन के लिए नज़रिये को बेहतर कैसे बनाएँ।
✔ आत्मविश्वास जगाने के गुर बना हो सकते हैं।
✔ सुख और सफलता की ऊंचाइयों को कैसे पाया जाए।
✔ अपनी और देश की समस्याएँ कैसे सुलझाएँ।

पुस्तक की मूल प्रेरणा है: सकारात्मक सोचे, बेहतर नज़रिया रखिए, महान लक्ष्य बनाइये, मजबूत आत्मविश्वास जगाइये, कोमल व्यवहार और कठी गेहरत कीजिए। यही तय करते हैं आपकी जीत, आपकी सफलता।

सफलता के लिए चाहिए बेहतर सोच, बेहतर कार्य-शौली।